राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 85
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
रविवार 09 अक्टूबर 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट पेज 3 उत्तर प्रदेश सरकार के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए के शर्मा जी ने महर्षि वाल्मिकी जी की जयंती पर उनको नमन करने के उपरांत अपने

पेज 5 प्रेमी ने प्रेमिका की हत्याकर शव घर में दफनाया, पुलिस ने दो साल बाद जमीन खोदकर निकलवाया कंकाल, दो गिरफ्तार

पेज 7 गृहमंत्री के खिलाफ वारंट, पीएम कोर्ट में पेश; आखिर पाकिस्तान में चल क्या रहा है

देश में मौसम का बदलता मिजाज

दिल्ली में लगातार बारिश; हेमकुंड साहिब में खूबसूरत बर्फबारी, उत्तरकाशी में सेना का रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

नई दिल्ली। उत्तर भारत में सर्द मौसम ने दस्तक दे दी है। कहीं बारिश तो कहीं बर्फबारी हो रही है। दिल्ली में अब भी मानसून जैसा मौसम बना हुआ है। यहां पर बीते 24 घंटे से लगातार बारिश हो रही है। इसके चलते दिल्ली के कई इलाकों में पानी भरने और ट्रैफिक जाम की समस्या आ रही है। वहीं उत्तराखंड के उत्तरकाशी में बीते दिनों आए एवलांच के बीच सेना का रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। उत्तराखंड के ही चमोली में हेमकुंड साहिब में बर्फबारी हो रही है।

दिल्ली में अभी होगी और बारिश

भारतीय मौसम विभाग ने दिल्ली और आसपास के इलाकों में अभी और बारिश होने की संभावना जताई है। मौसम विभाग के अफसरों का कहना है कि लगातार बारिश से तापमान में काफी गिरावट आई है और शहर की एयर क्वालिटी में भी सुधार हुआ है। सोमवार तक बारिश में गिरावट होने की संभावना है।

वहीं ग्रेटर नोएडा वेस्ट में याथर्थ अस्पताल के सामने की सड़क धंस गई। ये हादसा भारी बारिश के चलते निर्माणाधीन एक्सप्रेस एस्ट्रा परियोजना के पास हुआ। इस तरह के हादसों को लेकर बिल्डरों पर अक्सर सर्विस रोड के करीब खुदाई करने का आरोप लगाए जाते हैं। खुदाई की वजह से ही इस तरह की घटनाएं होती हैं। पहले भी परियोजनाओं की वजह से ऐसी घटनाएं हुई हैं, जिन्हें लेकर बिल्डरों पर कार्रवाई भी की जा चुकी है।

हेमकुंड साहिब में बर्फबारी

उत्तराखंड के चमोली स्थित दुनिया के सबसे ऊंचे गुरुद्वारे हेमकुंड साहिब में रविवार को बर्फबारी हुई है। यहां करीब एक इंच से ज्यादा ताजा बर्फ जम गई है। इसके साथ बदरीनाथ धाम की चोटियों पर भी बर्फ गिरी है। इस बर्फबारी से मैदानी इलाकों में भी ठंड बढ़ गई है।

उत्तरकाशी एवलांच में सेना का रेस्क्यू जारी

उत्तराखंड के उत्तरकाशी में मंगलवार को एवलांच आया था। यह घटना द्रौपदी का डांडा नाम की जगह पर हुई, जहां आमतौर पर पर्वतारोहियों को ट्रेनिंग दी जाती है। ट्रेनिंग के लिए नेहरू पर्वतारोहण संस्थान के 41 ट्रेनी गए थे। शनिवार तक यहां से 26 शव बरामद हुए हैं, तीन अब भी लापता हैं। शनिवार को यहां सेना का रेस्क्यू ऑपरेशन जारी रहा।

युवाओं को नफरत की जकड़न से बचाने की जरूरत : राहुल गांधी

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा है कि देश के युवाओं को गुमराह करने का प्रयास कर नफरत की जकड़ में फंसाने की कोशिश हो रही है इसलिए उन्हें भटकन से बचाने के लिए रोजगार देकर उनके भविष्य को संवारने की जरूरत है।

गांधी ने रविवार को फेसबुक पर एक फोटो के साथ पोस्ट करते हुए कहा, ये आज सुबह भारत जोड़ो यात्रा की तस्वीर है। ये युवा कह रहे हैं कि हमारे प्यारे भारत में नफ़रत के लिए कोई जगह नहीं है। आखिर क्यों देश की जनता नफ़रत के खिलाफ अपनी आवाज़ उठा रही है। आप सब जानते हैं। कुछ सालों पहले हमारे देश में ऐसा माहौल नहीं था जैसा आज है। पहले भाईचारा था, आपसी प्रेम था, लेकिन आज ऐसा नहीं है। और यही 'भारत जोड़ो यात्रा' करने का एक बड़ा कारण है। उन्होंने कहा,''हमारे युवा ही हमारे देश का भविष्य हैं, इन्हें नफ़रत नहीं, प्रेम चाहिए, रोज़गार चाहिए ताकि ये अपना, अपने परिवार का और देश का भविष्य बना सकें। कुछ राजनीतिक दल इन युवाओं को भटका कर, बेरोज़गार रख कर नफ़रत की राजनीति कर रहे हैं। हमें युवाओं को भटकने से बचाना होगा, इनके लिए एक बेहतर कल बनाना होगा, अच्छी शिक्षा और रोज़गार का इंतज़ाम करना होगा।

गांधी ने कहा,हमारी भारत जोड़ो यात्रा को युवाओं का खूब समर्थन मिल रहा है, वो मुझसे खुल कर बात कर रहे हैं और मैं उन्हें सुन रहा हूं। हमारे युवा बहुत ही प्रतिभाशाली हैं। इन्हें नफरत की आग में झोंकने से देश का भविष्य बर्बाद होगा। हमारी यात्रा में हर धर्म, हर जाति के लोग बिना एक-दूसरे से उनका नाम पूछे, हाथ में हाथ डाल कर, कदम से कदम मिलाकर साथ चल रहे हैं। कोई पीछे रह गया तो लोग उसके लिए रुक जाते हैं, कोई गिर गया तो लोग उसे सहारा देकर उठाते हैं।

लालू फिर से बने राजद अध्यक्ष, बैठक में अव्यवस्था का माहौल

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में रविवार को यहां पार्टी के प्रमुख लालू प्रसाद यादव को पार्टी का पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। उनका निर्वाचन सर्वसम्मति से किया गया।

यादव 12वीं बार पार्टी के अध्यक्ष चुने गये हैं। राजधानी के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में आयोजित इस बैठक में सरकार की विदेश एवं आर्थिक नीति की आलोचना की गयी।

बैठक के दौरान कई बार भारी अव्यवस्था का माहौल नजर आया। श्री यादव के पुत्र और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के भाई तेजप्रताप यादव

बैठक से यह कहते हुए वॉकआउट कर गये कि उन्हें उनके निजी सहायक और उनकी बहन को राजद के महासचिव श्याम रजक ने गाली दी। श्री तेज प्रताप ने कहा कि उन्होंने केवल बैठक की कार्यक्रम और एजेंडा के बारे में रजक से जानकारी लेनी चाही थी, इसपर उन्होंने उन्हें गाली दी। उन्होंने कहा कि उनके पास इसका ऑडियो रिकॉर्डिंग भी है जिसे वह बिहार की जनता के सामने खोलेंगे। उन्होंने कहा कि श्री रजक जैसे भाजपाई और आरएसएस के लोगों को राजद से बाहर कर दिया जाना चाहिए। बैठक में बिहार राजद के अध्यक्ष जगदानंद सिंह के ना दिखने के भी चर्चा थी। श्री सिंह के पुत्र सुधाकर सिंह ने हाल में पार्टी के दबाव के बीच मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया जिसे बाद में मंजूर कर लिया गया। बताया जाता है कि श्री जगदानंद सिंह अपने पुत्र के इस्तीफा सवीकार किये जाने से नाखुश हैं।

गुरुग्राम में तालाब में डूबने से 6 बच्चों की मौत

नहाने उतरे थे; सभी के शव मिले, मरने वालों की उम्र 8 से 13 साल

गुरुग्राम। देश की राजधानी दिल्ली से सटे हरियाणा के गुरुग्राम में रविवार को दर्दनाक हादसा हो गया। 6 मासूम बच्चों की तालाब में डूबने से मौत हो गई। ये सभी बच्चे सेक्टर-111 में बरसाती पानी से बने तालाब में नहाने उतरे थे। यहां पानी गहरा होने के कारण सभी डूब गए। देर शाम सभी बच्चों के शव 4 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद बरामद कर लिए गए। मरने वालों बच्चों की उम्र 8 से 13 साल थी।

जानकारी के मुताबिक, गुरुग्राम में दो दिन हुई बारिश के बाद सेक्टर-111 के पास के तालाब में ज्यादा पानी भरा हुआ है। रविवार दोपहर बाद करीब 3 बजे 6 बच्चे तालाब में नहाने के लिए उतर गए। बच्चों को तालाब में पानी की गहराई का अंदाजा नहीं था और नहाते हुए डूब गए।

एक बच्चे को डूबते हुए लोगों ने देखा तो मामले की सूचना पुलिस को दी। हादसा शंकर विहार के पास हुआ है और जहां तालाब है वो क्षेत्र एमपीएम का है। कंपनी की लापरवाही हादसे के लिए जिम्मेदार बताई जा रही है।

पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और छानबीन शुरू की। एनडीआरएफ, फायर ब्रिगेड, सिविल डिफेंस की टीम को मौके पर बुलाया गया। सभी टीमों ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया। ऑपरेश के दौरान सभी के शव मिल गए।

मौके पर पहुंचे गुरुग्राम के उपायुक्त निशांत कुमार यादव ने कहा कि अभी भी रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। साथ ही आस-पास के इलाके में भी पूछताछ की जा रही है कि कहीं और कोई बच्चा तो इस तालाब में नहीं गए थे।

प्रशासनिक अमला मौके पर राहत और बचाव कार्य में जुटा है। सभी 6 बच्चों के शव को बरामद कर लिया गया है।

मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख मुआवजा

डीसी निशांत यादव ने कहा कि सरकार ने मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपए मुआवजा देने की घोषणा की है। साथ ही हादसे के पीछे किसकी लापरवाही है, इसके लिए जांच की जाएगी।

जोधपुर में डैम घूमने गए 6 दोस्त, 3 की मौत

एक दोस्त का अचानक पैर फिसला, 5 दोस्त एक दोस्त को बचाने के लिए डैम में कूदे

जोधपुर। वीकेंड मनाने गए 6 दोस्त एक हादसे का शिकार हो गए। इनमें 5 दोस्त एक दोस्त को बचाने के लिए डैम में कूद गए। इस हादसे में तीन की मौत हो गई, जबकि दो को रेस्क्यू कर डैम से बाहर निकाला। डैम पर पहुंचने से पहले सभी दोस्तों ने हाईवे पर वीडियो भी बनाया था। मामला जोधपुर के मंडोर थाना क्षेत्र के सुरपुरा डैम का है। जहां सुबह करीब 12 बजे यह हादसा हुआ।

जानकारी के अनुसार प्रताप नगर मजदूर कॉलोनी निवासी अब्दुल मुतलिब (15), समीर हुसैन (17), इब्राहिम (16), नौशाद अली (17), मोहम्मद इब्राहिम (16) और मोहम्मद इस्माइल (15) रविवार को घूमने निकले थे। अब्दुल मुतलबि ने बताया कि सभी दोस्तों ने प्लान बनाया था कि वे जालोरी गेट की तरफ घूमने जाएंगे। लेकिन, अचानक से प्रोग्राम बदला और सभी सुरपुरा डैम घूमने के लिए निकल गई।

अब्दुल मुबलिब ने बताया कि सभी डैम की पाळ पर चल रहे थे। तभी अचानक उसका पैर फिसल गया और वह डैम में जा गिरा। वह डूबने लगा तो चिल्लाने लगा। दोस्त को डूबता देख समीर हुसैर, इब्राहिम, मोहम्मद नौशाद और मोहम्मद इब्राहिम उसे बचाने के लिए पानी में कूद पड़े। लेकिन, दोस्तों ने अब्दुल और समीर हुसैन को तो बचा लिया लेकिन इस हादसे में नौशाद अली, इब्राहिम और मोहम्मद इस्माइल डूब गए व तीनों की मौत हो गई। जबकि मोहम्मद इब्राहिम डैम से दूर खड़ा था।

राजेंद्र पाल गौतम ने दिया मंत्री पद से इस्तीफा

नयी दिल्ली। हिंदू देवी देवताओं पर आपत्तिजनक बयान के बाद विवाद बढ़ता देख दिल्ली सरकार के मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने रविवार को मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। गौतम ने ट्वीट कर आज कहा,आज महर्षि वाल्मीकि का प्रकटोत्सव दिवस है एवं दूसरी ओर मान्यवर कांशीराम साहेब की पुण्यतिथि भी है। ऐसे संयोग में आज मैं कई बंधनों से मुक्त हुआ और आज मेरा नया जन्म हुआ है। अब मैं और अधिक मजबूती से समाज पर होने वाले अत्याचारों और अधिकारों की लड़ाई को बिना किसी बंधन के जारी रखूंगा।''

यूपी में बारावफात जुलूस में करंट से 6 की मौत

झांकी में लगा पाइप हाईटेंशन लाइन से टकराया, एक-दूसरे को बचाने में गई जान

बहराइच। यूपी के बहराइच में बारावफात जुलूस के दौरान बड़ा हादसा हो गया है। जुलूस में शामिल ठेले में लगा लोहे का पाइप हाईटेंशन लाइन से टकरा गया, जिसके चपेट में आने से 6 लोगों की मौत हो गई। हादसे में 2 लोग बुरी तरह झुलस गए हैं। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस अधीक्षक को परिजन ने बताया कि एक-दूसरे को बचाने के चक्कर में 6 युवकों की मौत हो गई। घटना नानपारा कोतवाली क्षेत्र के भगड़वा मासूपुर गांव की है।

4 लोगों की मौके पर मौत

बताया जा रहा है कि सभी रविवार सुबह बारावफात जुलूस से लोग लौट रहे थे। जब वह नानपारा कोतवाली क्षेत्र के मसूकपुर गांव के पास पहुंचे। तभी जुलूस ठेले में लगा लोहे का पाइप बिजली के हाईटेंशन तार से टकरा गया। हादसे में अशरफ अली (30), अरफाक (10), सुफियान (12), मोहम्मद इलियास (16), सफीक (12), तबरेज (17) की मौके पर मौत हो गई। इसके अलावा 2 लोग मुराद खान और चांद बाबू बुरी तरह से झुलस गए।

एक ने इलाज के दौरान तोड़ा दम

सभी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नानपारा में उपचार के लिए पहुंचाया गया, लेकिन इलाज के दौरान तबरेज (17) की भी मौत हो गई। 2 अन्य लोगों की हालत नाजुक है। डॉक्टरों ने इनमें से मुराद खान को लखनऊ रेफर कर दिया है। जबकि चांद बाबू का इलाज सीएचसी नानपारा में चल रहा है। डॉक्टरों ने इनकी हालत नाजुक बताई है। घटना से परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

बिजली विभाग ने नहीं सुनी शिकायत

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बिजली विभाग की लापरवाही से यह हादसा हुआ है। स्थानीय लोगों ने बताया कि हाईटेंशन तार नीचे लटकने की तीन बार बिजली विभाग के अधिकारियों से शिकायत की गई थी।

आठ हजार रुपए भी बिजली विभाग वालों को दिए गए थे, लेकिन इसके बाद भी तारों को दुरुस्त नहीं कराया गया। जिसकी वजह से मौतें हुई हैं।

उंगली नहीं हाथ काटो, जरूरत पड़े तो गला काट दो

दिल्ली में हिंदू सभा की रैली में भड़काऊ भाषण, भाजपा सांसद ने बहिष्कार के नारे लगाए

नई दिल्ली। दिल्ली में विराट हिंदू सभा के मंच से भड़काऊ भाषण देने का वीडियो सामने आया है। इस रैली के मंच से संत योगेश्वर आचार्य ने समुदाय विशेष के लोगों को चुन-चुनकर मारने के लिए कहा। मंच से ही एक और संत नवल किशोर ने हिंदुओ से बंदूक उठाने की अपील की। रैली में मौजूद भाजपा सांसद प्रवेश वर्मा ने भी समुदाय विशेष के बहिष्कार के नारे लगवाए। सांसद ने कहा कि हम उनकी दुकानों से कुछ नहीं खरीदेंगे, हम उन्हें रोजगार नहीं देंगे। दिल्ली के नंद नगरी इलाके में कुछ दिन पहले मनीष नाम के युवक के विरोध में विराट हिंदू सभा ने यह रैली आयोजित की थी। जीटीबी नगर के रामलीला मैदान में बुलाई गई इस रैली में भाजपा के कई नेता भी मौजूद थे।

जगदगुरु योगेश्वर आचार्य ने लोगों को उकसाते हुए कहा कि ये हमें गिन-गिनकर टारगेट करेंगे। चुन-चुनकर मारेंगे, इसलिए आपसे अनुरोध है कि जहां भी देखो अगर ऐसे नीच हमारे मंदिरों को, हमारे मठों को, हमारे हिंदू परिवार के भाइयों-बहनों को कहीं भी उंगली दिखाएं तो उनकी उंगली मत काटो, उनका हाथ काट दो। अगर जरूरत पड़े तो उनका गला काटने से भी पीछे मत हटो। क्या होगा, एक को फांसी होगी।

रैली में महंत नवल किशोर दास ने हिंदुओं को बंदूकें उठाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अगर आपको लाइसेंस नहीं मिलता तो चिंता की बात नहीं है। जो लोग तुम्हें मारने आते हैं उनके पास भी लाइसेंस नहीं होते, तो आपको लाइसेंस की क्या जरूरत है? अगर हम सब मिल जाएं तो दिल्ली पुलिस कमिश्नर भी हमें चाय पिलाएंगे और हम जो चाहेंगे वो करेंगे।

हरियाणा में रेप कर 7 साल की बच्ची की हत्या

तेल छिड़ककर शव जलाने की कोशिश; झाड़ियों में मिला अधजला शव, 1 गिरफ्तार

कैथल। हरियाणा के कैथल में 7 साल की बच्ची से रेप करने के बाद उसकी हत्या कर दी गई। वारदात के बाद सबूत मिटाने के मकसद से बच्ची की बॉडी को तेल छिड़ककर जलाने का प्रयास किया गया। घटना कैथल में कलायत एरिया के कुराड़ गांव में हुई। बच्ची का अधजला शव झाड़ियों के बीच मिला। पुलिस ने इस मामले में कुराड़ गांव के ही एक युवक पवन को गिरफ्तार किया है।

मारी गई बच्ची शनिवार दोपहर डेढ़ बजे गांव के सरकारी स्कूल के पास से लापता हो गई थी। 24 घंटे बाद रविवार दोपहर ढ़ाई बजे उसका शव अधजली हालत में गांव के खेल स्टेडियम के पास जंगल में कंटीली झांडियों के बीच मिला। शव को खुर्द-बुर्द करने के मकसद से वहां छुपाया गया था।

शोर मचाने पर दबाया गला

कैथल के एसपी ने बताया कि बच्ची आरोपी पवन के पास खेलने आ जाती थी। इसी का फायदा उठाकर वह बच्ची को खिलाने के बहाने स्टेडियम की तरफ ले गया और वहां उसके साथ दरिंदगी की। जब बच्ची ने शोर मचाया तो पवन ने मुंह दबाकर उसकी हत्या कर दी। उसके बाद पवन सबूत नष्ट करने के मकसद से पेट्रोल लेकर आया और उसे शव पर छिड़ककर आग लगा दी।

युवक ने जुर्म कबूला

शनिवार शाम को बच्ची के लापता होने की सूचना मिलते ही कैथल के एसपी मकसूद अहमद ने कलायत के DSP सज्जन कुमार की अगुवाई में सीआईए-1 समेत पुलिस की कई टीमें बनाकर उन्हें सर्च में लगा दिया। रविवार को सर्च के दौरान पुलिस को सीसीटीवी फुटेज मिली जिसमें एक युवक बच्ची को ले जाता हुआ नजर आया। पुलिस अधिकारियों ने लोगों को फुटेज दिखाई तो युवक की पहचान पवन के रूप में हुई जो कुराड़ गांव का ही रहने वाला है। बच्ची का शव मिलने के बाद पुलिस ने पवन को गिरफ्तार कर लिया।

छात्र की मौत

परिजन बोले- इतना मारा कि बेहोश हो गया, सिर की नसें फट गई थीं

टीचर ने होमवर्क न करने पर छात्र को पीटा, मौत

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा में टीचर की पिटाई से 5वीं के छात्र की मौत हो गई। परिजनों ने कोतवाली में जमकर हंगामा किया। रास्ते पर जाम लगाया। पुलिस ने समझा-बुझाकर किसी तरह से मामला शांत कराया। परिजनों की तहरीर पर आरोपी टीचर के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है।

बताया जा रहा है कि 7 अक्टूबर को होमवर्क न करने पर टीचर ने छात्र को पीटा था। इसके बाद उसकी हालत बिगड़ गई थी। शनिवार को इलाज के दौरान छात्र की मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी टीचर फरार है। पुलिस की चार टीमें आरोपी की तलाश में लगी हैं।

पुलिस के मुताबिक, बंबावड गांव के देवदत्त मजूदरी करते हैं। उनकी पत्नी मीनाक्षी प्राइवेट कंपनी में जॉब करती हैं। देवदत्त का बड़ा बेटा 11 साल का प्रिंस गांव के कैप्टन सांवलिया पब्लिक स्कूल में 5वीं क्लास में पढ़ता था। गांव का ही रहने वाला शोभरण स्कूल में टीचर है। गुरुवार को शोभरण ने 5वीं क्लास के सभी बच्चों को होमवर्क में याद करने के लिए दिया था।

होमवर्क याद करके स्कूल नहीं गया था प्रिंस

परिजनों के मुताबिक, प्रिंस होमवर्क याद नहीं कर पाया था। इसलिए

शुक्रवार को वह स्कूल न जाने की जिद करने लगा। किसी तरह से समझा-बुझाकर उसे शुक्रवार को स्कूल भेजा। होमवर्क याद न करके आने पर टीचर शोभरण ने प्रिंस को बुरी तरह से पीटा। उसके सिर में गंभीर चोट लग गई। वह बेहोश हो गया। टीचर ने परिजनों को फोन करके प्रिंस की तबीयत खराब होने की जानकारी दी।

इलाज के दौरान छात्र ने दम तोड़ा

इसके बाद परिजन स्कूल पहुंचे। परिजन और टीचर प्रिंस को दादरी में प्राइवेट अस्पताल ले गए, लेकिन हालत गंभीर होने की वजह से किसी ने भी एडमिट नहीं किया। इसके बाद परिजनों ने छात्र को दिल्ली के लोकनायक अस्पताल में भर्ती कराया। शनिवार शाम को इलाज के दौरान प्रिंस की मौत हो गई।

परिजनों का आरोप है कि टीचर ने प्रिंस के सिर पर इतनी बुरी तरह से मारा था कि उसकी सिर की नसें फट गई थीं। इससे उसको ब्रेन हैमरेज हो गया। वो मानसिक संतुलन खो बैठा। कहा कि टीचर शोभरण ने प्रिंस को पीटने की बात कबूल की थी। उसने कहा था कि उससे गलती हो गई।

प्रिंस की मौत के बाद परिजनों ने रविवार को बादलपुर कोतवाली पर हंगामा किया। पुलिस ने परिजनों को कार्रवाई का आश्वासन देकर शांत कराया। एसीपी-2 सेंट्रल नोएडा अरविंद कुमार ने बताया कि छात्र की मां मिनाक्षी की तहरीर पर आरोपी शिक्षक शोभरण के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जांच के बाद उचित कार्रवाई की जाएगी।

शार्ट न्यूज

कुपवाड़ा में दो स्वयंभू पत्रकार गिरफ्तार

श्रीनगर। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में पुलिस ने रंगदारी वसूलने के मामले में दो स्वयंभू पत्रकारों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आज बताया कि जिले के काजियाबाद इलाके के एक स्कूल के प्रबंधन की शिकायत के बाद शनिवार देर रात दोनों आरोपियों को हंदवाड़ा के क्रालगुंड इलाके से गिरफ्तार किया गया। आरोपी एसएसए स्कूल चतरहाल काजियाबाद गये थे और नकली साक्षात्कार में छात्रों के खराब प्रदर्शन का वीडियो फिल्माए जाने के बाद शिक्षकों से पैसे निकालने की कोशिश की थी। दोनों ने वीडियो वायरल करने की धमकी दी और स्कूल प्रबंधन से 15,000 रुपये की रिश्वत की मांग की। प्रबंधन ने पुलिस को सूचित किया और स्वयंभू पत्रकारों को रंगेहाथ पकड़ा गया। आरोपियों की पहचान हमपोरा क्रालगुंड के इरफान अहमद मलिक और पंडितपोरा के इकबाल अहमद शेख के रूप में हुई है। थाना क्रालगुंड में कानून की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है और जांच शुरू कर दी गई है।

जम्मू-कश्मीर वक्फ बोर्ड ने श्रीनगर में निकाला मिलाद जुलूस

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर वक्फ बोर्ड ने पहली बार शहर में रविवार को ईद-ए-मिलाद-उन-नबी के अवसर पर जुलूस निकाला। आज यहां वक्फ बोर्ड की अध्यक्ष द्रखशां अंद्राबी के नेतृत्व में कई धर्म प्रचारकों और बड़ी संख्या में श्रद्धालुआ के साथ हजरतबल के पास निगीन क्लब से मिलाद जुलूस निकाला गया। इस अवसर पर मीडियाकर्मियों से बातचीत में श्रीमती अंद्राबी ने संपूर्ण विश्व विशेष रूप से कश्मीर के लोगों को इस अवसर पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अल्लाह ने दुनिया, सूरज और चांद बनाया है और वक्फ बोर्ड इस दिन को बड़े उत्साह के साथ मनाएगा। उन्होंने कहा कि सभी मुसलमानों और मानवता पर विश्वास करने वाले लोगों को ईद-ए-मिलाद मनाना चाहिए और पैगंबर मुहम्मद के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्फ बोर्ड का कर्तव्य है कि भविष्य में भी इस अवसर पर ऐसा जुलूस निकाला जाए। इस बीच संभाग आयुक्त पी के पोल ने कश्मीर के लोगों को ईद-ए-मिलाद के मौके पर शुभकामनाएं दीं। श्री पोल ने आज मत्था टेकने के लिए हजरतबल के पवित्र दरगाह का दौरा किया और आने वाले श्रद्धालुओं के लिए की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हजरतबल के आसपास के क्षेत्र में परिवहन, जलापूर्ति और साफ-सफाई की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। उन्होंने लोगों से कश्मीर घाटी के लिए निरंतर शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया।

अरुणाचल में 140 ग्राम से ज्यादा हेरोइन बरामद

ईटानगर। ईटानगर पुलिस ने पिछले एक सप्ताह में मादक पदार्थों का अवैध कारोबार करने के आरोप में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से 140 ग्राम से ज्यादा संदिग्ध हेरोइन बरामद किया है। इस संदर्भ में चार मामले दर्ज किए गए हैं और जांच चल रही है। यह जानकारी ईटानगर के पुलिस अधीक्षक ने रविवार को दी। पुलिस अधीक्षक ने कहा,अतरिक्त पुलिस अधीक्षक थुटन जांबा की कड़ी निगरानी में डीएसपी के दिरची के नेतृत्व में कैपिटल पुलिस और एंटी ड्रग स्क्वायड (एडीएस) की हमारी टीमों ने मादक पदार्थों की आपूर्ति में कमी लाने की दिशा में पिछले सप्ताह उत्कृष्ट काम किया है। इन सात दिनों में ईटानगर में चार मामले दर्ज किए गए हैं और पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है साथ ही साथ 140.14 ग्राम संदिग्ध हेरोइन भी बरामद की गई है। उन्होंने कहा कि एडीएस और ईटानगर पुलिस ने शनिवार को एक अभियान के अंतर्गत गोपुर तिनियाली इलाके से 35 वर्षीय नबाम ताजो को गिरफ्तार किया और उसके पास से 90 ग्राम संदिग्ध हेरोइन बरामद किया। एसडीपीओ नाहरलागुन और बंदरदेवा पीएस की टीम ने दो लोगों अकेंग तलोंग (27) और दुयू पायेंग (27) को गिरफ्तार किया और 19.92 ग्राम संदिग्ध हेरोइन बरामद किया।

भूस्खलन से गंगटोक जाने वाला मार्ग बंद

गंगटोक। सिक्किम की जीवन रेखा माने जाने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग 10 बारिश और भूस्खलन के कारण बंद हो गया है। अधिकारियों ने रविवार को बताया कि सिक्किम जाने वाले यात्रियों के वाहनों को दूसरे मार्गों की ओर भेज दिया गया है। हवाई जहाज के लिए बागडोगरा हवाई अड्डा जाने वाले और रेल से यात्रा के लिए न्यू जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल जाने वाले यात्रियों को पाक्योंग और अन्य मार्गों की ओर मोड़ दिया गया है। भूस्खलन के कारण 19वीं माइल पर सड़क भी क्षतिग्रस्त हुई है। अधिकारियों के अनुसार, मरम्मत कार्य प्रगति पर है, जिसे जल्द पूरा कर लिया जाएगा।

इंदौर का चर्चित टीआई निलंबित

इंदौर। इंदौर पुलिस की अपराध शाखा में थाना प्रभारी (टीआई) के रूप में पदस्थ धनेंद्र सिंह भदौरिया को अभद्र व्यवहार और वसूली संबंधी शिकायतों के चलते आज निलंबित कर दिया गया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की इंदौर यात्रा के दौरान अनेक स्थानीय लोगों ने टीआई के कृत्यों को लेकर शिकायतें की थीं। इसका जिक्र चौहान ने भोपाल में शनिवार को वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की उच्च स्तरीय बैठक में किया और कहा था कि ऐसे लोगों के खिलाफ जांच के बाद सख्त से सख्त कार्रवाई होना चाहिए। इंदौर के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध/मुख्यालय) राजेश कुमार हिंगणकर की ओर से आज थाना प्रभारी भदौरिया को निलंबित करने के आदेश जारी कर दिए गए। इस आदेश में लिखा है कि श्री भदौरिया के विरुद्ध अभद्र व्यवहार एवं अवैध वसूली संबंधी शिकायतें प्राप्त होने पर उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाकर रक्षित केंद्र संबद्ध किया गया है। आदेश में यह भी कहा गया है कि श्री भदौरिया वरिष्ठ अधिकारियों की अनुमति के बगैर अपना मुख्यालय नहीं छोड़ेंगे।

शिवराज के सख्त निर्देशों के बाद राज्य में एक दिन में 1100 से अधिक प्रकरण दर्ज

भोपाल। शराब और नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार में लिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देश के बाद 24 घंटों में राज्य के 52 जिलों में इनसे संबंधित 1100 से अधिक मामले दर्ज किए गए हैं। उच्च पदस्थ आधिकारिक सूत्रों ने आज यहां बताया कि श्री चौहान ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ शनिवार को उच्च स्तरीय बैठक में नशे के कारोबार में लिप्त लोगों की कमर तोड़ने के निर्देश दिए थे। इसके बाद सभी जिलों में ढाबों, होटल, हुक्का लाउंज और अन्य ऐसे संदिग्ध स्थानों पर छापों की कार्रवाई सभी जिलों में की गयी, जहां पर शराब के अवैध कारोबार और नशीले पदार्थों की सप्लाई की आशंका रहती है। सूत्रों के अनुसार राज्य मुख्यालय पहुंची खबरों के अनुसार रविवार की शाम तक अवैध शराब के 1100 से अधिक प्रकरण दर्ज किए गए। भोपाल और इंदौर में 40 से अधिक हुक्का लाउंज को सील किया गया। एक सौ से अधिक स्थानों पर छापे मारकर नशीले पदार्थ मिलने पर नारकोटिक्स एक्ट के तहत कार्रवाई की गयी। सूत्रों ने बताया कि सभी जिलों में इस तरह की कार्रवाइयां जारी रहेंगी।

कार्यकर्ताओं को 20 साल पहले की स्थिति भी पता होना चाहिए : शिवराज

मांडव। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें इस बात की भी जानकारी होना चाहिए कि 20 वर्ष पहले (कांग्रेस शासनकाल के समय) इस राज्य की स्थिति क्या थी और अब क्या है। चौहान ने धार जिले के मांडव में पार्टी के तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग के अंतिम दिन मध्यप्रदेश, कल, आज और कल के नाम से सत्र को संबोधित कर रहे थे। सत्र की अध्यक्षता राज्यसभा सांसद सुमित्रा वाल्मिकी ने की। श्री चौहान ने कहा कि हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं को यह साफ तौर पर पता होना चाहिए कि वर्ष 2003 के पूर्व जब राज्य में कांग्रेस की सरकार थी, उस समय बिजली, सड़क, पानी और सुरक्षा आदि को लेकर क्या स्थिति थी। इसके बाद भाजपा सत्ता में आयी और इस दौरान हुए विकास कार्यों के बाद राज्य की स्थिति में कितना सुधार आया है। प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है।

गुजरात का मोढेरा बनेगा देश का पहला सौर विलेज

गांव की हर छत पर लगाए गए सोलर पैनल, गांववालों का बिजली बिल हो जाएगा आधा

मेहसाणा। प्राचीन सूर्य मंदिर के लिए प्रसिद्ध गुजरात के मेहसाणा जिले के मोढेरा गांव के नाम आज से एक और उपलब्धि जुड़ जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शाम मोढेरा को देश का पहला सौर विलेज घोषित करेंगे। मोढेरा में हरेक घर की छत पर सोलर पैनल लगाए गए हैं। इससे पूरे गांव को 24 घंटे सौर पैनल से बिजली मिलेगी। इसके साथ ही पीएम मोढेरा को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर मजबूती के साथ पेश करने के लिए 3,900 करोड़ रुपए की अन्य कई योजनाओं की आधारशिला भी रखेंगे।

गांव के हरेक घर की छत पर सोलर पैनल

मोढेरा गांव मेहसाणा जिले से 25 किलोमीटर दूर स्थित मोढेरा गांव में ग्राउंड माउंटेड सोलर पावर प्लांट लगाया गया है। बिजली बनाने के लिए गांव के हरेक घर की छत पर एक किलोवॉट क्षमता वाले सोलर पैनल और सोलर सिस्टम लगाए गए हैं। ये सभी सोलर सिस्टम बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम (बीईएसएस) से जुड़े हुए हैं।

बिजली बिल में 60 से 100 फीसदी तक की बचत

दिन के दौरान गांव और वहां स्थित घरों को सोलर पैनल से बिजली मिलेगी, जबकि शाम को भारत का पहला ग्रिड से जुड़ा मेगावॉट ऑर स्केल बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम घरों को बिजली की आपूर्ति करेगा। इसके लिए केंद्र और गुजरात सरकार ने सोलर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट में दो चरणों में 80 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश किया है। यह प्रोजेक्ट मोढेरा को सोलर पैनल से बिजली उत्पादन करने वाला भारत का पहला गांव बना देगी और इससे गांववाले अपने बिजली बिलों में 60 से 100 फीसदी तक की बचत कर सकेंगे। सूर्य मंदिर को चालुक्य वंश के राजा भीम प्रथम ने 1026-27 में बनवाया था। सूर्य मंदिर का निर्माण पहाड़ी पर किया गया है। इसे इस तरह बनाया गया है कि सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक मंदिर पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं। मंदिर के गर्भगृह की दीवारों पर बहुत सुंदर नक्काशी की गई है। मंदिर की दीवारों पर नक्काशी की मदद से पौराणिक कथाओं को दिखाया गया है।

यहां भगवान राम आए थे पश्चाताप के लिए

सूर्य मंदिर के तीन मुख्य हिस्से (सूर्य कुंड, सभा मंडप और गूढ़ मंडप) हैं। कुंड में जाने के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं। कुंड का नाम रामकुंड है। लंका में रावण के वध के बाद भगवान राम ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्ति चाहते थे। ऋषि वशिष्ठ ने उन्हें पुष्पावती नदी के किनारे स्थित मोढेरा जाने का निर्देश दिया था। भगवान राम प्रायश्चित के लिए यहां आकर रहे थे।

बागेश्वर में खराब मौसम के चलते 77 ट्रैकर्स फंसे, सभी सुरक्षित

नैनीताल। उत्तराखंड के बागेश्वर में खराब मौसम के चलते 77 पर्वतारोही आधे रास्ते में फंसे हैं। सभी सुरक्षित हैं और विभिन्न स्थानों पर शरण लिये हुए हैं। मौसम में सुधार होने के बाद सभी वापस अपने गतंव्य को रवाना होंगे। मिली जानकारी के अनुसार बागेश्वर से कुल 196 पर्वतारोही अभी तक अलग अलग तिथियों विभिन्न स्थानों के लिये रवाना हुए। इनमें से 119 पर्वतारोही वापस लौट चुके हैं। शेष 77 ट्रैकर्स वापस लौटते वक्त खराब के चलते रास्ते में फंस गये। पता चला है कि सभी ट्रेकर्स एकदम सुरक्षित हैं और सुरक्षित स्थानों पर पनाह लिये हुए हैं। जिला प्रशासन ने सेटेलाइट फोन से सभी ट्रैकर्स से संपर्क साधा है। इनमें से 15 पिंडारी के आधार शिविर, खाती में 40, स्वराग में 12 व गोगिना में 10 ट्रैकर्स रूके हुए हैं।

पीएसए के तहत लश्कर के दो आतंकवादी सहयोगी गिरफ्तार

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने रविवार को बांदीपोरा जिले में जन सुरक्षा कानून (पीएसए) के तहत आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के दो आतंकवादी सहयोगियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आज यहां बताया कि लश्कर के दो आतंकवादी सहयोगियों को पीएसए के तहत हिरासत में लिया गया है। एक की पहचान इश्फाक मजीद डार पुत्र अबुल मजीद डार उर्फ सलाहुद्दीन और सदरकूट बाला के निवासी के रूप में हुई है। इन्हें सीमा पार के आकाओं ने बांदीपोरा में युवाओं को प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन में भर्ती करने का काम दिया था। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकवादियों के संपर्क में रहने वाले कट्टर आतंकवादी को बांदीपोरा के हाजिन इलाके में पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) नाका की पहचान करने के साथ-साथ इलाके में आतंकवादी हमलों को अंजाम देने का भी काम सौंपा गया था।

पुलिस ने बताया कि दूसरे आतंकवादी की पहचान वसीम अहमद मलिक उर्फ ओबैद उर्फ ओसामा पुत्र अब्दुल गनी मलिक निवासी गुंडपोरा रामपोरा के रूप में हुई है। वह भी पीओके स्थित आतंकवादी हाशिर पर्रे के संपर्क में था। पुलिस ने कहा कि हाल ही में बांदीपोरा पुलिस ने पर्रे के मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया था, जो शहर और आस-पास के इलाकों में नए सहयोगी बना रहा था।

लड़की के कपड़े फाड़े, जबरन बाइक पर बैठाने का प्रयास

विरोध किया तो सिर पर शराब की बोतल फोड़ी; हॉस्टल गर्ल्स ने हाईवे जाम किया

एजेंसी

जयपुर। जयपुर में 22 साल की युवती से छेड़छाड़ और मारपीट का मामला सामने आया। कुछ बदमाश युवती को बीच सड़क पर रोककर छेड़छाड़ करने लगे। विरोध किया तो सिर पर शराब की बोतल फोड़ दी। इसके बाद हॉस्टल की कई लड़कियां सड़क पर उतर आईं। बारिश के बीच जयपुर-भरतपुर हाईवे पर जाम लगा दिया। घटना कानोता थाना इलाके में प्रेमनगर पुलिया के पास की शनिवार रात की है। हॉस्टल में रहने वाली एक स्टूडेंट के साथ शनिवार रात करीब साढ़े 8 बजे की है। लाइब्रेरी से पढ़ाई कर हॉस्टल आ रही युवती से छेड़छाड़ और मारपीट की गई। बाइक सवार तीन बदमाशों ने

उसका रास्ता रोका।

उसका मोबाइल छीना। उसके कपड़े फाड़े। उसे अपने साथ जबरदस्ती बाइक पर बैठाने का प्रयास किया। युवती के चिल्लाने पर बदमाशों ने उसके सिर पर शराब की बोतल मार दी। वह लहूलुहान हो गई। फिर युवती को घायल हालत में छोड़कर बदमाश मौके से भाग निकले।

घटना की जानकारी मिलने पर हॉस्टल की सैकड़ों लड़कियां मौके पर पहुंचीं और डायल 108 की सहायता से घायल युवती को स्रू अस्पताल भेजा। घटना को लेकर हॉस्टल वार्डन सहित सभी लड़कियों में जबर्दस्त आक्रोश देखने को मिला। कुछ ही देर में लड़कियों ने प्रेमनगर पुलिया के पास जयपुर-आगरा हाईवे को जाम लगा दिया। आधे घंटे हाईवे पर जाम लगा रहा।

मौके से नहीं हटीं लड़कियां

कानोता थाना पुलिस मौके पर पहुंची। लड़कियों को समझाने की कोशिश की गई। तेज बारिश के बावजूद भी लड़कियां मौके पर डटी रहीं। पुलिस ने लड़कियों को जबर्दस्ती घसीटकर रास्ते से हटाया। रात करीब 10 बजे पूरा मामला शांत हुआ।

लड़कियों का आरोप है कि हॉस्टल के आसपास आए दिन लड़कियों से छेड़छाड़ और अब मारपीट की घटनाएं होने लगी है। इस संबंध में कानोता थाना पुलिस को कई बार लिखित शिकायत दी गई। उसके बाद भी यहां पर पुलिस की न तो कोई मौजूदगी है। न ही बदमाशों में पुलिस का कोई डर है।

कानोता सीआई अरुण पूनिया ने बताया कि शनिवार रात लड़कियों ने एकाएक हाईवे जाम कर दिया। जानकारी मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। लड़कियों को समझाया। इसके बाद उन्हें हटाया गया। लड़कियों की शिकायत पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ छेड़छाड़, मारपीट, अपहरण का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

बारिश से कुमाऊँ में जनजीवन अस्त-व्यस्त, पूर्णागिरी यात्रा स्थगित

नैनीताल। उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल में पिछले तीन दिन से लगातार हो रही बरसात से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। कुमाऊं में 82 से अधिक सड़कें भूस्खलन के चलते अवरूद्ध हो गयी हैं जिससे कई यात्री फंस गये हैं। भूस्खलन के चलते चीन सीमा को जोड़ने वाले छह बार्डर (सीमा) मार्ग भी बाधित हो गये हैं। सुरक्षा की खातिर प्रसिद्ध पूर्णागिरी यात्रा को भी 24 घंटे के लिए स्थगित कर दिया गया है।

पिथौरागढ़ व चंपावत को जोड़ने वाला चंपावत-टनकपुर राष्ट्रीय मार्ग पर कई जगह मलबा आने से पूर्णत: बाधित हो गया है। जिससे चंपावत का मैदान से संपर्क कट गया है। शनिवार देर शाम को भी चंपावत-टनकपुर मार्ग पर मलबा आने से कई वाहन रात भर फंसे रहे।

इनमें चंपावत व लोहाघाट व पिथौरागढ़ जाने वाली परिवहन निगम की छह बसें भी शामिल रहीं। इनमें 100 से अधिक यात्री सवार थे। मार्ग बाधित होने व प्रशासन की मुस्तैदी के चलते इन यात्रियों को वापस टनकपुर ले जाया गया और उन्हें रेन बसेरों में ठहराया गया। स्थानीय प्रशासन की ओर से यात्रियों के ठहरने व खाने की व्यवस्था की गयी।

चंपावत-टनकपुर मार्ग पर रविवार को चैनल 100, 106, स्वाला, कोट व अमोड़ी के पास पुन: भारी मात्रा में मलबा आने से मार्ग पूरी तरह से यातायात के लिये अवरूद्ध हो गया है। प्रशासन मार्ग को खोलने के लिये युद्धस्तर पर जुटा हुआ है। जनपद कुल 20 सड़कें ठप पड़ी हुई हैं।

चंपावत जनपद में ही अतिवृष्टि के चलते ग्राम पंचायत चंदनी के हेलागोठ और खटोली व बसबाड़ी गांव में तीन आवासीय मकान व एक गौशाला खतरे की जद में आ गयी है। प्रशासन ने तीनों परिवारों व मवेशियों को सुरक्षित पनाह दे दी है।

यही नहीं अतिवृष्टि व श्रद्धालुओं की सुरक्षा के चलते चंपावत जिला प्रशासन ने प्रसिद्ध पूर्णागिरी यात्रा पर भी 24 घंटे के लिए रोक लगा दी है। टनकपुर के उपजिलाधिकारी हिमांशु कफल्टिया ने बताया कि खराब मौसम को देखते हुए यात्रा को 10 अक्टूबर तक स्थगित करने का निर्णय लिया गया है।

अतिवृष्टि के चलते सीमांत पिथौरागढ़ जनपद सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। यहां भूस्खलन के चलते जनपद के प्रमुख 21 मार्ग अवरूद्ध हैं। इनमें चीन सीमा को जोड़ने वाले छह बार्डर मार्ग गाला-जिसी, तवाघाट-घटियाबगड़, पिथौरागढ़-धारचूला, घटियाबगड़-लिपूलेख, गुंजी-कुटी-ज्योलिकांग व जौलजीवी-मुनस्यारी मार्ग भी शामिल हैं।

खराब मौसम : उच्च हिमालयी क्षेत्र में पर्यटकों के प्रवेश पर रोक

नैनीताल। उत्तराखंड में लगातार हो रही भारी बारिश व खराब मौसम को देखते हुए पिथौरागढ़ जिला प्रशासन ने उच्च हिमालयी क्षेत्र में पर्यटकों के प्रवेश पर अगले आदेश तक रोक लगा दी है। पर्यटक किसी भी हालत में बिना अनमुति के प्रवेश नहीं कर पायेंगे।

जिला अधिकारी डा. आशीष चौहान ने शनिवार को आये भूकंप के झटकों व खराब मौसम को देखते हुए यह निर्णय लिया है। उन्होंने अधिकारियों के साथ वर्चुअली बैठक के दौरान सख्ती से इसका पालन करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिकारियों को अलर्ट मोड़ में रहने के भी निर्देश दिये। चौहान ने आपदा के लिहाज से बेहद संवेदनशील धारचूला प्रशासन को भी संवेदनशील क्षेत्रों पर नजर बनाये रखने और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिये तैयार रहने के निर्देश दिये हैं।

इस दौरान उन्होंने सभी उपजिलाधिकारियों को खराब मौसम को देखते हुए उच्च हिमालयी क्षेत्र में साहसिक व किसी भी तरह के पर्यटन गतिविधि पर रोक लगाने और बिना अनुमति के पर्यटकों के जाने पर रोक लगा दी है।

अनुराग ने बिलासपुर में किया वाटर स्पोर्ट्स सेंटर का उद्घाटन

शिमला। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, युवा मामले एवं खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने रविवार को जिला बिलासपुर में स्थित कोल बांध पर वाटर स्पोर्ट्स सेंटर का उद्घाटन किया जिसके पश्चात उन्होंने बरमाणा एनटीपीसी कार्यालय में एक जनसभा को संबोधित किया। इस वाटर स्पोर्ट्स सेंटर के लिए केन्द्रीय खेल मंत्री की उपस्थिति में एनटीपीसी परियोजना प्रमुख कुलविंदर सिंह व स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक एमएस वर्गीस के मध्य हुआ समझौता ज्ञापन का आदान प्रदान हुआ। उन्होंने कहा कि हिमाचल को खेलों के हर क्षेत्र में आगे लाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। इस वॉटर सपोर्ट सेंटर के खुलने से क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएं उत्पन्न होगी और स्थानीय युवाओं को रोजगार भी मिलेगा। इस वाटर स्पोर्ट्स सैंटर में 40 चयनित खिलाडियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा और खिलाडियों के लिए छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध होगी।

भाजपा विसभा चुनाव के लिए पूरी तरह तैयार : अनुराग

शिमला। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, युवा मामले एवं खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने रविवार को यहां कहा कि भारतीय जनता पार्टी भी चाहती है कि हिमाचल में जल्द से जल्द चुनाव आचार संहिता लागू की जाए ताकि चुनावों को प्रॉपर ढंग से लड़ने और जीतने का काम शुरू हो सके। इससे पहले उन्होंने हमीरपुर जिले के भोटा में टैक्सी पार्किंग का शुभारंभ किया।

ठाकुर ने कहा कि पार्टी की तरफ से चुनाव आचार संहिता चाहे आज लगे या कल भारतीय जनता पार्टी पूरी तरह से चुनाव के लिए तैयार है और इस बार

पार्टी दोबारा से सरकार बनाकर हिमाचल में इतिहास रचेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अपने कुनबे को संभाले जिस ढंग से पिछले कुछ दिनों में कांग्रेस के चार वर्किंग प्रेसिडेंट में से दो कांग्रेस पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं उससे साफ है कि कांग्रेस की हालत आज डूबते जहाज जैसी हो चुकी है। उन्होंने कांग्रेस पर प्रहार करते हुए कहा कि गोवा में कांग्रेस के 10 में से आठ विधायक भाजपा में शामिल हो चुके हैं। वहीं, उनकी राजस्थान में भी पार्टी की आंतरिक लड़ाई खुलकर देश के सामने आई है जो पार्टी अपना अध्यक्ष तक सही ढंग से नहीं चुन पा रही है वह देश और प्रदेश को क्या संभालेगी। उन्होंने कहा कि हिमाचल में भाजपा विकास के नाम पर लोगों से वोट मांगेगी जबकि कांग्रेस के पास जनता के बीच जाने के लिए मुद्दे तक नहीं है। ठाकुर ने कहा कि आज हिमाचल में चाहे राष्ट्रीय स्तर के संस्थान खोलने की बात हो या फिर स्थानीय सुविधाएं लोगों को उपलब्ध करवाने की बात भाजपा हर जगह काम लोगों को सुविधा देने के लिए उसके साथ खड़ी है नाग ने नगर पंचायत गुटको पार्किंग का निर्माण करने के लिए बधाई दी और कहा कि इसके बन जाने से लोगों को यहां काफी सुविधा मिलेगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि जल्द ही इस पार्किंग का पहली मंजिल भी तैयार होकर लोगों को समर्पित कर दी जाएगी।

बल्क ड्रग पार्क की डीपीआर को केंद्र सरकार ने दी मंजूरी: जय राम ठाकुर

शिमला। हिमाचल के मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कहा कि जिला ऊना के हरोली में बनने वाले बल्क ड्रग पार्क की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) को केंद्र सरकार ने अंतिम मंजूरी प्रदान कर दी है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की योजना संचालन समिति ने आज इस मेगा प्रोजेक्ट की डीपीआर को अपनी अंतिम स्वीकृति दी। योजना चयन समिति द्वारा स्वीकृति प्रदान किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय महत्व की इस परियोजना को अंतिम मंजूरी मिलने से राज्य में, विशेष रूप से फार्मास्युटिकल क्षेत्र में दूसरी औद्योगिक क्रांति की शुरुआत होगी। उन्होंने कहा कि यह परियोजना केंद्र और राज्य की 'डबल इंजन' सरकार का सकारात्मक प्रभाव है, जो एकजुट होकर काम करती हैं और प्रतिस्पर्धी

एवं सहकारी संघवाद की भावना को सुदृढ़ करती हैं। ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार उद्योग विभाग के माध्यम से मेडिकल डिवाइस पार्क और बल्क ड्रग पार्क दोनों को समयबद्ध तरीके से निष्पादित करने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि हिमाचल प्रदेश इन मेगा परियोजनाओं का भरपूर लाभ उठा सके। उन्होंने कहा कि यह प्रदेश सरकार और समस्त प्रदेशवासियों के लिए एक ऐतिहासिक क्षण हैं। उन्होंने कहा कि बल्क ड्रग पार्क न केवल राज्य में मौजूदा फार्मा फॉर्मूलेशन इकाइयों के लिए मददगार साबित होगा, बल्कि एपीआई क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी एक क्रांतिकारी कदम होगा। मुख्यमंत्री ने बल्क ड्रग पार्क की डीपीआर को रिकॉर्ड समय में तैयार करने तथा इसे मंजूर करवाने के लिए उद्योग विभाग और ईएंडवाई कंसल्टेंट्स की टीम के कार्य की भी सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह परियोजना हिमाचल प्रदेश बल्क ड्रग इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के माध्यम से कार्यान्वित की जाएगी, जो राज्य कार्यान्वयन एजेंसी (एसआईए) होगी। उन्होंने कहा कि बल्क ड्रग पार्क परियोजना की कुल अनुमानित लागत 1923 करोड़ रुपये है, जिसमें भारत सरकार की अनुदान राशि 1118 करोड़ रुपये है और शेष 804.54 करोड़ रुपये की राशि राज्य सरकार द्वारा वहन की जाएगी।

सिरसा में किसान 12 अक्तूबर को करेंगे लघु सचिवालय का घेराव

सिरसा। बकाया बीमा क्लेम, मुआवजे की मांग, नरमा, धान व खरीफ की सभी फसलों की स्पैशल गिरदावरी सहित फसल बेचते समय किसान को मंडी और फैक्ट्रियों में आने वाली समस्याओं व रबी फसल की बिजाई के लिए डीएपी और यूरिया की कालाबाजारी रोकने के लिए जिलाभर के किसान भारतीय किसान एकता (बीकेई) के बेनर तले 12 अक्टूबर को यहां लघु सचिवालय का घेराव करेंगे। घेराव कार्यक्रम का न्यौता देने के लिए रविवार को बीकेई अध्यक्ष लखविंद्र सिंह औलख ने अपनी टीम के साथ तारुआना, त्रिलोकेवाला, दादू, तख्तमल, देसू मलकाना सहित दर्जनों गांवों का दौरा किया। लखविंद्र सिंह औलख ने कहा कि बकाया बीमा क्लेम खरीफ -2020 का 111 गांव का रहता था, जिसमें से 18 गांवों का बीमा आया है, बाकि 93 गांवों का बीमा क्लेम दोबारा फिर बीमा कंपनी ने कम डाला है।

पराली प्रबंधन में आने वाली लागत का मुआवजा दिया जाये : बादल

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने मुख्यमंत्री भगवंत मान से आग्रह किया है कि धान की पराली के प्रबंधन में आने वाली लगात की भरपाई का मुआवजा दिया जाये।

बादल ने शनिवार को यहां एक बयान में कहा कि राज्य सरकार ने किसानों को धान की पराली न जलाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए 2500 रुपये प्रति एकड़ का प्रस्ताव पेश किया था। पंजाब और दिल्ली सरकारों के साथ केंद्र को भी इस प्रोत्साहन को वास्तविक बनाने में योगदान देना चाहिए। मुख्यमंत्री को यह बताना चाहिए कि पंजाब और दिल्ली की सरकारों ने इस पहल के लिए एक भी रुपया जारी करने से इन्कार क्यों कर दिया। उन्होंने कहा कि पहले श्री मान ने किसानों से मूंग की बुवाई करने का वादा किया था कि इसे सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदेगी, लेकिन केवल 10 प्रतिशत ही खरीदा गया। अब भी मुख्यमंत्री ने धान की पराली जलाने से रोकने के लिए 2500 रुपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन देने की भव्य घोषणाएं की हैं, लेकिन समय आने पर इस वादे से मुकर गए।

उनके अनुसार किसानों को न केवल उनके भाग्य पर छोड़ दिया गया, बल्कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने जिला आयुक्तों को धान की पराली जलाने वाले किसानों के राजस्व रिकॉर्ड में लाल एंट्री करने का निर्देश दिया गया है। आप पार्टी की सरकार द्वारा बार-बार फसल के नुकसान की भरपाई करने में विफलता के कारण किसान पहले ही गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं। छोटे किसान, जो सबसे ज्यादा प्रभावित हैं, उन्हें अपनी जमीन पर कर्ज लेने या उसे गिरवी रखने के अपात्र बनाया जा रहा है।

बादल ने कहा कि मुख्यमंत्री की पेशकश कि किसान सब्सिडी वाली भूसा प्रबंधन मशीनों का लाभ उठा सकते हैं, बेहद अव्यावहारिक है।

शार्ट न्यूज

सोसाइटी में एंट्री को लेकर जोमैटो ब्वॉय और गार्ड में बीच चले डंडे

नोएडा। गार्डन गैलरी सोसाइटी में गेट पर तैनात सुरक्षाकर्मी और एक डिलीवरी बॉय के बीच कहासुनी के बाद हाथापाई का मामला सामने आया है। जहां दोनों ने एक दूसरे के ऊपर जमकर डंडे बरसाए। इस घटना का वीडियो सोसायटी के गेट के बाहर लगे सीसीटीवी में कैद हो गई। ओर वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने गार्ड और डिलीवरी बॉय को गिरफ्तार कर लिया है। यह पूरी घटना सेक्टर-39 थाना क्षेत्र की है। जहां रविवार को डिलीवरी ब्वॉय सोसाइटी में किसी का खाना लेकर आया हुआ था। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, डिलीवरी बॉय के सोसाइटी में घुसने के दौरान गेट पर तैनात गार्ड ने उसे रोक लिया। इसके बाद दोनों के बीच गेट में घुसने को लेकर कहासुनी हो गई। कहासुनी के बाद दोनों पक्ष ने एक दूसरे पर डंडो से मारपीट की। एसीपी प्रथम रजनीश वर्मा ने बताया कि डिलीवरी ब्वॉय और सुरक्षाकर्मी को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों आरोपी सदरपुर कॉलोनी में रहते हैं। जोमैटो डिलीवरी ब्वॉय सबी सिंह और गार्डन गैलरी सोसाइटी में नौकरी कर रहे गार्ड राम विनय शर्मा के खिलाफ में सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की गई है।

ओवरटेक व फायरिंग प्रकरण में दो के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

नोएडा। सेक्टर-51 गेट के पास कार सवार कुछ युवकों द्वारा दूसरी कार को ओवरटेक और फायरिंग करने के मामले में पुलिस ने दो नामजद समेत कई अज्ञात के खिलाफ जानलेवा हमले की धारा में रिपोर्ट दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी है। पुलिस आरोपियों की गिरफ्तार के लिए दबिशें दे रही है। पीड़ित होशियारपुर निवासी राजे यादव ने बताया कि सात अक्टूबर को रात करीब 12 बजे उनके भतीजे गोपाल पर रिंकू और राहुल सहित अन्य लोगों ने गाड़ी से ओवरटेक कर फायरिंग की थी। हमले में भतीजे गोपाल बाल-बाल बचा। पूरी घटना कैमरे में कैद है। आरोपितों ने पिस्टल से फायरिंग की थी। घटना के दौरान पिस्टल वहीं गिर गई थी। हमले के पीछे पीड़ित ने एक नेता का नाम लिया है। दोनों पक्षों के बीच जमीनी विवाद बताया जा रहा है। पुलिस ने घटना के समय प्रयोग होने वाली पिस्टल को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। घटना के समय फायरिंग हुई थी या नहीं और पिस्तौल किसकी है, पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर मामले की जांच कर रही है। वहीं आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

पार्ट टाइम जॉब का झांसा देकर 75 हजार ठगे

नोएडा। सेक्टर-62 स्थित नीलकंठ सोसाइटी निवासी एक व्यक्ति को साइबर ठगों ने पार्ट टाइम जॉब का झांसा देकर 75 हजार रुपये ठगने का मामला सामने आया है। पीडित ने कोतवाली सेक्टर-58 में शिकायत दी है। पुलिस केस दर्ज कर पड़ताल कर रही है। पीडित विजय सिंह चौहान ने बताया कि उनके मोबाइल फोन पर व्हाट्सएप लिंक भेज कर घर बैठे पार्ट टाइम काम करने का झांसा दिया गया था, वह साइबर ठगों के झांसे में आकर एक लिंक को क्लिक कर दिया। इसके बाद दूसरा लिंक टेलीग्राम का आया। उसे क्लिक कर जानकारी भरने के लिए कहा गया। उनसे ईवे और पेटीएम मॉल में निवेश करने के लिए कुछ सिक्योरिटी जमा कराने के लिए कहा। पैसे अकाउंट में भेजते ही उन्हें ब्लॉक कर दिया गया। आरोप है कि ठगों ने उन्हें ईवे, पेटीएम मॉल से सामान बेचने पर आकर्षक कमीशन देने का भरोसा दिया था। इसी चक्कर में वह अपनी जमा पूंजी गंवा बैठे। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि मामला दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि वह साइबर ठगो से बचकर रहे। ठग लोगों को नौकरी, घर बैठे कारोबार करने, बिजली कनेक्शन कटने के नाम पर अपने जाल में फंसा रहे हैं। इनसे सतर्क रहने की जरूरत है।

हादसों से बचाव के लिए पुलिस ने भरवाए गड्ढे

ग्रेटर नोएडा। लगातार हो रही तेज बारिश के बाद जीटी रोड पर गहरे गड्ढे हो गए। जिसके कारण एक बाइक सवार गिरकर घायल हो गया। जिसको दादरी पुलिस ने अस्पताल में भर्ती कराया। दादरी के वीआईटी चौकी इंचार्ज व उनकी टीम ने हाईवे पर जाकर गड्ढों को मिट्टी व ईट से भरकर मरम्मत की। बता दे दादरी जीटी रोड पर तेज बारिश के कारण सड़क पर गहरे गड्ढे हो गए थे। गड्ढों की वजह से एक बाइक सवार घायल हो गया था। जिसको पुलिस ने निजी अस्पताल में भर्ती कराया। गड्ढों में पानी भरने से वाहन दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ गया था। खासकर दो पहिया वाहन गड्ढों की वजह से गिरने लगे थे। वीआईटी चौकी प्रभारी ओर उनकी टीम ने जीटी रोड पर पहुंचे। ओर गड्ढों को भरवाया।

फायरिंग प्रकरण में दो के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

नोएडा। सेक्टर-51 गेट के पास कार सवार कुछ युवकों द्वारा दूसरी कार को ओवरटेक कर फायरिंग करने के मामले में पुलिस ने दो नामजद समेत कई अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस आरोपियों की गिरफ्तार के लिए दबिश दे रही है। पीड़ित होशियारपुर निवासी राजे यादव ने बताया कि सात अक्तूबर को रात करीब 12 बजे उनके भतीजे गोपाल पर रिंकू और राहुल सहित अन्य लोगों ने गाड़ी से ओवरटेक कर फायरिंग की थी। हमले में भतीजे गोपाल बाल-बाल बचा था। पूरी घटना कैमरे में कैद है। आरोपियों ने पिस्तौल से फायरिंग की थी। घटना के दौरान पिस्तौल वहीं गिर गई थी। हमले के पीछे पीड़ित ने एक नेता का नाम लिया है। दोनों पक्षों के बीच जमीनी विवाद बताया जा रहा है। पुलिस ने घटना के समय इस्तेमाल होने वाली पिस्तौल को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। घटना के समय फायरिंग हुई थी या नहीं और पिस्तौल किसकी है, पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर मामले की जांच कर रही है।

कुत्ते के हमले में सोसाइटीवासी जख्मी

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो वेस्ट की पैरामाउंट इमोशन सोसाइटी में शनिवार रात कुत्ते ने एक निवासी पर हमला कर दिया। इससे वह गिर गए और उनके कोहनी और पैर में चोट लग गई। वह अपने पालतू कुत्ते को टहला रहे थे तब यह घटना हुई। आवारा कुत्ते ने उनके पालतू कुत्ते के पैर में भी काट लिया। सोसाइटी निवासी चंदन चौधरी ने बताया कि वह पैरामाउंट इमोशन सोसाइटी के जे टावर में रहते हैं। वह शनिवार रात अपने पालतू कुत्ते के साथ पार्किंग एरिया में टहलने के लिए निकले थे। परिसर में घूम रहे आवारा कुत्ते ने उनके पालतू कुत्ते पर हमला कर दिया। इसके बाद उनके ऊपर पर झपट पड़ा। इससे वह नीचे गिर गए और उसके कोहनी और पैर में चोट आई। इसके अलावा आवारा कुत्ते ने उनके पालतू कुत्ते के पैर में दांत मार दिए। इस घटना के बाद से सोसाइटीवासियों में रोष है। कुत्तों की वजह से बच्चे और बुजुर्ग परेशान हैं। सोसाइटी के ओपन एरिया कुत्ते घूमते रहते हैं और कई बार लोगों पर हमला कर देते हैं। लोगों ने ग्रेनो प्राधिकरण के अधिकारियों से इस समस्या की ओर ध्यान देने की अपील की है।

कड़ी सुरक्षा के बीच बारावफात का जुलूस निकला

मोदीनगर। इस्लाम के मुख्य पर्व बारावफात पर रविवार को भोजपुर क्षेत्र में तीन जगहों पर जुलूस निकाला गया। इस दौरान शांति व सुरक्षा के मद्देनजर चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात रही। पीएसी भी बुलाई गई। जगह-जगह पर लोगों ने फूल बरसाकर जुलूस का स्वागत किया। सभी ने हाथ में झंडे ले रखे थे। बच्चों ने भी बढ़-चढ़कर जुलूस में हिस्सा लिया। भोजपुर थानाक्षेत्र के गांव सैदपुर, जहांगीरपुर व फरीदनगर में जुलूस निकाला गया। सुबह से ही पुलिसकर्मियों की ड्यूटी गांव में लगाई गई थी। सीओ मोदीनगर सुनील कुमार व एसएचओ भोजपुर ब्रजकिशोर गौतम ने सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। गांव सैदपुर में सुबह नौ बजे जुलूस शुरू हुआ, जो दस बजे समाप्त हुआ। गांव जहांगीरपुर में साढ़े आठ बजे जुलूस शुरू हुआ, जो साढ़े दस बजे समाप्त हुआ।

दिल्ली में 2007 के बाद से दूसरी सबसे बड़ी बारिश

दिन-रात का तापमान रिकॉर्ड निम्न स्तर पर पहुंचा

एजेंसी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में मौसम में आए बदलाव के बीच शनिवार सुबह से रुक-रुक कर हो रही बारिश ने बेहाल कर दिया है। बीते 24 घंटे में सुबह साढ़े आठ बजे तक 74 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई, जो 2007 के बाद से इस अवधि की दूसरी सर्वाधिक बारिश है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़ों के अनुसार, राजधानी में रविवार सुबह साढ़े आठ बजे तक 74 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई, जिससे शनिवार को अधिकतम तापमान सामान्य से 10 डिग्री नीचे पहुंच गया, जिसके कारण दिन-रात के तापमान के बीच का अंतर रिकॉर्ड निचले स्तर पर आ गया।

मौजूदा बारिश मॉनसून की बारिश नहीं

आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक, दिल्ली में मौजूदा बारिश मॉनसून की बारिश नहीं है। मॉनसून सामान्य 653.6 मिमी के मुकाबले 516.9 मिमी बारिश दर्ज कराने के बाद राजधानी से 29 सितंबर को लौट गया था। आईएमडी के अनुसार, क्षेत्र में मॉनसून के बाद बारिश का कारण एक पश्चिमी विक्षोभ माना जाता है, जो निचले स्तर पर पुरवाई हवाओं के साथ मध्य और ऊपरी वायुमंडल में कम हवा के दबाव के कारण बनता है।

मौसम विभाग के एक अधिकारी के मुताबिक, पुरवाई हवाएं नमी के लिए काफी हद तक जिम्मेदार हैं, जो बारिश का कारण बनती हैं। यह गुजरात और पूर्वी राजस्थान में अरब सागर से, उत्तराखंड तक दिल्ली क्षेत्र को पार करते हुए अपने पैर पसारती हैं।

लगातार बारिश से हवा की गुणवत्ता में सुधार

राष्ट्रीय राजधानी में लगातार दूसरे दिन लगातार बारिश से रविवार को हवा की गुणवत्ता में सुधार हुआ और यह संतोषजनक श्रेणी में पहुंच गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, सुबह करीब नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 54 था, जो अच्छी श्रेणी में आता है।

मौसम विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी में न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम 23.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 20.8 डिग्री सेल्सियस और शनिवार को अधिकतम तापमान 23.4 डिग्री सेल्सियस के बीच का अंतर 2.6 डिग्री सेल्सियस था, जो 1969 के बाद दर्ज किया गया सबसे कम अंतर है।

आईएमडी ने कहा, इससे पहले, इस तरह का सबसे कम अंतर 19 अक्टूबर 1998 को 3.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। उन्होंने कहा कि सुबह साढ़े आठ बजे हवा में सापेक्षिक आर्द्रता 100 फीसदी दर्ज की गई।

राजधानी के प्राथमिक मौसम केंद्र सफदरजंग वेधशाला में पिछले 24 घंटों में 74.3 मिलीमीटर बारिश हुई। पालम वेधशाला ने 64.9 मिमी बारिश दर्ज की। आईएमडी के मुताबिक, लोधी रोड, रिज और आयानगर मौसम केंद्रों में क्रमश: 87.2 मिमी, 60.1 मिमी और 85.2 मिमी बारिश दर्ज की गई।

गौरतलब है कि 15 मिमी से कम वर्षा को हल्का माना जाता है। इसके ऊपर और 64.5 मिमी के बीच मध्यम, 64.5 मिमी और 115.5 मिमी के बीच भारी और 115.6 मिमी और 204.4 मिमी से ऊपर को अत्यंत भारी वर्षा माना जाता है।

आईएमडी ने रविवार को कुछ स्थानों पर हल्की बारिश और गरज के साथ छींटें पड़ने तथा आसमान में सामान्य रूप से बादल छाये रहने का पूर्वानुमान जताया है। अधिकतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

मोदीनगर में तमंचे के बल पर महिला से दुष्कर्म

अश्लील वीडियो बनाकर आरोपी कर रहा ब्लैकमेल

मोदीनगर। नगर की एक कॉलोनी निवासी ब्यूटी पार्लर संचालिका से तमंचे के बल पर दुष्कर्म कर अश्लील वीडियो बनाने का मामला सामने आया है। महिला की आरोपी से फोन पर दोस्ती हुई थी। वीडियो वायरल करने की धमकी देकर महिला को ब्लैकमेल किया जा रहा है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

नगर की एक कॉलोनी निवासी एक व्यक्ति परिवार सहित रहते हैं। उनकी पत्नी कॉलोनी में ही ब्यूटी पार्लर का संचालन करती है। महिला ने काफी समय पहले अपने ब्यूटी पार्लर का प्रचार करने के लिए पोस्टर बंटवाए थे। जिस पर उनका मोबाइल नंबर भी लिखा था। इसी बीच एक युवक का महिला पर फोन आया और उसने ग्राहक लाने की बात कही।

इसके बाद युवक ब्यूटी पार्लर पर ग्राहक लाने लगा। महिला का आरोप है कि एक दिन आरोपी अचानक ब्यूटी पार्लर पर आ गया और तमंचे के बल पर दुष्कर्म किया। इतना ही नहीं उसने अश्लील वीडियो भी बना ली। आरोपी अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देकर लगातार दुष्कर्म भी करता रहा। इसके अलावा वह महिला को ब्लैकमेल भी करने लगा।

मेडिकल के बाद दर्ज होंगे बयान

महिला ने यह बात अपने पति को बताई। इसके बाद महिला पति के साथ शनिवार रात को मुरादनगर थाने पहुंची और तहरीर दी। थाना प्रभारी सतीश कुमार ने बताया कि तहरीर के आधार पर अरहान उर्फ साजिद मलिक निवासी लिसाड़ी गेट मेरठ के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। आरोपी की तलाश शुरू कर दी गई है। महिला का मेडिकल परीक्षण कराकर मजिस्ट्रेट के समक्ष बयान दर्ज कराए जाएंगे।

स्वच्छता अभियान रैली से जागरूक किया

गाजियाबाद। उत्थान समिति के द्वार गांधी एक सोच एक जागृति कार्यक्रम की शुरुआत महाराणा प्रताप चौक से स्वच्छता मार्च निकालकर की गई। यह कार्यक्रम हिन्दी भवन पर जाकर समाप्त हुआ। उत्थान समिति के अध्यक्ष सतेंद्र सिंह ने बताया कि गांधी एक सोच एक कार्यक्रम के तहत महाराणा प्रताप चौक अवंतिका से स्वच्छता अभियान की शुरूआत की गई। यह स्वच्छता यात्रा शास्त्री नगर से कविनगर होते हुए हिन्दी भवन पहुंची। भारतीय विकास परिषद ने शास्त्री नगर, कवि नगर व्यापार मंडल ने सी ब्लॉक मार्केट और बस अड्डे पर तथा अन्य जगहों पर पुष्प वर्षा कर लोगों का स्वागत किया गया।

उत्तर प्रदेश सरकार के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए के शर्मा जी ने महर्षि वाल्मिकी जी की जयंती पर उनको नमन करने के उपरांत अपने आवास पर सफाई कर्मियों का किया सम्मान।

तेज बारिश के कारण ग्रेटर नोएडा वेस्ट में हुआ हादसा

सड़क धंसने से बाल-बाल बचे लोग, बिल्डर पर घटिया सामग्री लगाने का आरोप

जेवर। तेज बारिश के कारण ग्रेटर नोएडा वेस्ट में बड़ा हादसा हुआ है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर-1 में स्थित एक्सप्रेस एस्ट्रा में गहरी खुदाई और लगातार बारिश के कारण जमीन धंस गई है। सड़क का एक बड़ा हिस्सा जमीन में धंस गया है। जिसकी वजह से आसपास रहने वाले लोग बाल-बाल बचे। जिसकी वजह से आसपास के लोगों में दहशत का माहौल व्याप्त हो गया है। इसकी वीडियो भी सोशल मीडिया में काफी तेजी के साथ वायरल हो रही है। मामले की जानकारी स्थानीय लोगों ने पुलिस और प्रशासन को दी है। बताया जा रहा है कि थोड़ी देर में ग्रेटर नोएडा अथॉरिटी की टीम भी मौके पर पहुंच सकती है।

निर्माणधीन बिल्डिंग में हुआ हादसा

जानकारी के मुताबिक, यह हादसा ग्रेटर नोएडा वेस्ट में स्थित सेक्टर-1 यथार्थ अस्पताल के पास एक्सप्रेस एक्स्ट्रा की निर्माणधीन बिल्डिंग में हुआ है। बताया जा रहा है कि हादसा शनिवार देर रात करीब 2 बजे हुआ था। जिसकी वजह से आसपास कोई व्यक्ति मौजूद नहीं था। हादसे के कारण कोई जनहानि नहीं हुई है, लेकिन उसके बावजूद भी स्थानीय लोगों में भय का माहौल है।

निवासियों में भय का माहौल व्याप्त

ग्रेटर नोएडा वेस्ट में रहने वाली समाज सेविका और गौतम बुद्ध नगर विकास समिति की अध्यक्ष रश्मि पांडे का कहना है कि इस तरह की घटना यह साबित करती है कि बिल्डर ने किस तरीके की सामग्री का इस्तेमाल किया है। बिल्डर द्वारा घटिया किस्म की सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है और फिर उनको भोली-भाली जनता को बेच दिया जाता है। जिसकी वजह से ग्रेटर नोएडा वेस्ट में रहने वाले निवासियों में भय का माहौल व्याप्त है। यह कोई पहली घटना नहीं है।

अवैध जमीन बेचने वालों पर गैंगस्टर

ग्रेटर नोएडा। डूब क्षेत्र में प्लाटिंग करके बेचने वाले पांच भू माफिया के खिलाफ नालेज पार्क कोतवाली पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है। आरोपियों ने झूठ बोलकर लोगों को प्लाट बेच दिए। इसके बदले लाखों रुपये ले लिए। पीड़ितों ने विरोध किया तो आरोपियों ने जान से मारने की धमकी भी दी। नालेज पार्क कोतवाली प्रभारी विनोद कुमार सिंह ने यह मुकदमा दर्ज कराया है। मुकदमे में कहा गया है कि ग्रेनो के रहने वाले बालेश और दिल्ली के रहने वाले सनोज कुमार, सोनू डेढ़ा, दिनेश कुमार और मनोज यादव ने मिलकर एक गैंग बनाया। साजिश के तहत नालेज पार्क कोतवाली क्षेत्र में जमीन पर कब्जा किया। कब्जा करने के बाद वहां प्लाटिंग शुरू कर दी। इन लोगों ने कामगारों को अपना निशाना बनाया। देहाड़ी श्रमिक और गरीब वर्ग के लोगों को झूठ बोलकर प्लाट बेच दिए। इससे आरोपियों ने लाखों रुपये ऐंठ लिए। बाद में खरीदारों को पता चला कि जो प्लाट उन्होंने खरीदे हैं, वह अवैध हैं। पीड़ितों ने इसकी शिकायत नॉलेज पार्क कोतवाली पुलिस में की। पुलिस ने पूर्व में मामले में मुकदमा दर्ज किया था। साथ ही मामले की जांच की जा रही थी। पुलिस ने पूरी जांच पड़ताल के बाद अब गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की है। अब आरोपियों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। पुलिस का कहना है कि यह कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

गार्ड से अभद्रता की आरोपी युवती गिरफ्तार

नोएडा। सेक्टर-121 अजनारा होम सोसाइटी में सुरक्षा गार्ड के साथ बदसलूकी और हंगामा करने वाली तीसरी आरोपी युवती को भी पुलिस ने रविवार को गिरफ्तार कर लिया। युवती घटना के दौरान मौके से भाग गई थी। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी के लिए कई जगह पर दबिश डाली थी। फेज-3 कोतवाली पुलिस के मुताबिक दीक्षा को सुबह के समय गिरफ्तार किया गया है। वह अपनी आरोपी बहन अंजलि के साथ ही फूड सप्लाई का कार्य करती है। बताया गया कि सुरक्षाकर्मी से बदसलूकी की शुरुआत उसी ने शुरू की थी और हंगामे के दौरान पुलिस के मौके पर पहुंचते ही वह भाग निकली थी। पुलिस से बचने के लिए युवती के अपने रिश्तेदार के पास दिल्ली जाने की बात सामने आई। रविवार को युवती के सोसाइटी में ही होने की सूचना पुलिस को जैसे ही मिली, उसे गिरफ्तार कर लिया गया। ज्ञात हो कि शुक्रवार की शाम अजनारा होम सोसाइटी में कार पर स्टीकर न होने पर किराये के मकान में रहने वाली दो बहनों की गाड़ी को सुरक्षाकर्मी पंकज उर्फ उज्ज्वल ने प्रवेश करने से रोक दिया था। कार में दो बहनें और उनकी सहेली थी। तीनों नशे में धुत थीं। सुरक्षाकर्मी के प्रवेश से रोकने पर तीनों युवती ने कार से उतरकर उसके साथ बदसलूकी की और करीब एक घंटे तक हंगामा किया। वहां मौजूद अन्य सुरक्षाकर्मियों और लोगों ने घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और युवती अंजलि तिवारी और उसकी सहेली काकुल अहमद को हिरासत ले लिया, जबकि अंजलि की बहन दीक्षा मौके से भाग गई थी। पुलिस उसकी तलाश में रिश्तेदारों और दोस्तों के घर दबिश दी, लेकिन उसका सुराग नहीं लगा था।

किसानों का भूमि पर कब्जे को लेकर विरोध जारी

लोनी। अहिल्याबाद माजरे की अधिग्रहीत जमीन पर कब्जे के विरोध में किसान रविवार को भी मौके पर टेंट में बैठे रहे, लेकिन कोई अधिकारी और कर्मचारी नहीं पहुंचा। किसानों का कहना है कि जब तक अधिकारी वार्ता कर मामले का निपटारा नहीं करेंगे, वह यूपीसीडा को भूमि पर कब्जा नहीं करने देंगे। ट्रॉनिका सिटी विस्तार के लिए सन 2010-2011 में अधिग्रहीत की गई अहिल्याबाद माजरे की भूमि पर करीब 11 वर्ष बाद यूपीसीडा ने गुरुवार को कब्जा लेकर पिलर आदि लगाने का कार्य शुरू कराया था। शुक्रवार को किसानों ने यूपीसीडा का काम बंद करा दिया और मौके पर टेंट लगाकर बैठ गए थे। किसानों का आरोप था कि करार की शर्तों के मुताबिक यूपीसीडा को अधिग्रहण के तीन वर्ष के भीतर भूमि पर कब्जा लेना चाहिए था।

बारिश से धान की फसल को भारी नुकसान

किसानों ने जिला प्रशासन से लगाई मुआवजे की गुहार, डीएम को सौंपा ज्ञापन

जेवर। पिछले कई दिनों से हो रही तेज बारिश से किसानों को भारी नुकसान हुआ है। किसानों का कहना है कि सबसे ज्यादा उनकी धान की फसल वह बर्बाद हो गई है। जिससे किसान काफी परेशान हैं। किसानों ने जिला प्रशासन से मुआवजे की गुहार भी लगाई है।

किसानों को हुआ भारी नुकसान

पिछले कई दिनों से हो रही तेज बारिश किसानों के लिए आफत बन कर आई है। धान की फसल पूरी तरह से खेत में गिर गई है। किसानों का कहना है कि जो फसल है। वह पककर लगभग तैयार हो चुकी थी। लेकिन बारिश ने उनका जो मेहनत है सब पर पानी फेर दिया है।

किसानों ने बताया कि काफी लागत से उन्होंने धान की फसल को

पैदा किया था। लेकिन बारिश ने उनकी सब मेहनत खराब कर दी है।

बारिश ने बना दिया कर्जवान

क्षेत्र के किसानों का कहना है कि पिछले कई महीनों से वह धान की फसल की पैदावार कर्ज लेकर कर रहे थे।

लेकिन बारिश ने उनको और कर्जवान कर दिया है। क्षेत्र के किसान राजकुमार नागर, ओमबीर समसपुर, त्रिलोक नागर और अनूप सिंह समेत अन्य किसानों का कहना है कि जल्द ही वह मुआवजे की मांग को लेकर जिला मुख्यालय पर भी डीएम को ज्ञापन सौंपेंगे।

मुख्य रास्तों पर भरा पानी, लोगों को हो रही परेशानी

किसानों के साथ स्थानीय लोग अन्य भी परेशान हैं। मुख्य रास्तों पर पानी भर जाने से लोगों को आने जाने में काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि बारिश काफी ज्यादा है।

जिसकी वजह से मुख्य रास्तों पर कई कई फीट पानी भर गया है। जिससे पैदल निकलना भी परेशानी का सबब है। लोगों का कहना है कि बारिश की वजह से मजदूर लोग भी काम करने नहीं जा पा रहे हैं। जिससे उनको आर्थिक परेशानी हो रही है।

दो साल से नहीं मिल पाया महामाया स्टेडियम को संविदा कोच

एजेंसी

गाजियाबाद। जिल में खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने के लिए महामाया स्टेडियम में दो साल से संविदा कोच नहीं हैं। स्टेडियम से करीब 14 खेलों का संचालन किया जा रहा है। खेल विभाग में दो साल से खेल प्रशिक्षक नहीं होने से खेलों में रूचि लेने वाले खिलाड़ी प्राइवेट संस्थानों में अभ्यास करने को मजबूर हैं।

वर्ष 2020 में कोरोना के बाद से महामाया स्पोर्ट्स स्टेडियम में खिलाड़ियों को बिना कोच के ही अभ्यास करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। मौजूदा समय में स्टेडियम में केवल जूडो के कोच है। इसके अलावा किसी भी खेल के कोच नहीं हैं। खिलाड़ियों का कहना है कि बिना कोच के अभ्यास करना, किसी भी खिलाड़ी के लिए चुनौती से कम नहीं है। स्टेडियम के करीब 350 खिलाड़ी इस चुनौती से रोज रूबरू हो रहे हैं। अभ्यास करने के लिए खिलाड़ियों को अनुभवी खिलाड़ियों का सहारा लेना पड़ता है। खिलाड़ियों ने बताया कि उन्हें इस तरह का माहौल नहीं मिल पा रहा है, जैसा कि एक कोच द्वारा अभ्यास कराया जाता है। इससे वह यह भी नहीं समझ पाते हैं कि सही दिशा में अभ्यास कर रहे या गलत दिशा में। इस तरह से युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

इन खेलों में कोच नहीं

महामाया स्पोर्ट्स स्टेडियम में क्रिकेट, एथलेटिक्स, हॉकी, फुटबाल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेनिस, कबड्डी, रिंग, खो-खो, बाक्सिंग समेत अन्य खेलों के लिए संविदा प्रशिक्षकों की व्यवस्था नहीं है।

खिलाड़ियों से लिया जाता है शुल्क

खिलाड़ियों ने बताया कि खेल विभाग की ओर से 18 साल से नीचे आयु वर्ग के खिलाड़ियों से रजिस्ट्रेशन फीस 210 रूपए और 18 साल से अधिक आयु से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ियों से 310 रूपए ली जाती है। कुछ खेलों में रजिस्ट्रेशन के उपरांत 18 साल से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ियो से 800 प्रतिमाह फीस भी ली जाती है। यहां हर दिन सैकड़ों युवा अपने सपने को साकार करने के लिए खूब पसीना बहाते हैं। लेकिन कोच नही होने की वजह से सही से अभ्यास नही मिल पा रहा है। जिससे उन्हें प्रतियोगिता में इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

अकोरोना संक्रमण को लेकर चल रहा आंकड़ेबाजी का खेल

गाजियाबाद। कोरोना संक्रमण को लेकर आंकड़े बाजी का खेल चल रहा है। सरकारी आंकड़ों में जहां प्रतिदिन 1 से 4 मरीजों तक की पुष्टि की जा रही है। वहीं निजी अस्पतालों में 10 से 15 के बीच अभी भी कोविड के मामले पहुंच रहे हैं। मरीजों में गंभीर लक्षण नहीं होने पर उन्हें ओपीडी से ही दवा देकर घर में 7 दिन के लिए आइसोलेट किया जा रहा है। गंभीर बात यह है कि निजी अस्पतालों से स्वास्थ्य विभाग को इसकी कोई जानकारी नहीं दी जा रही।

स्वास्थ्य विभाग की प्रतिदिन जारी हो रही कोविड-19 में संक्रमण में लगातार कम दर्ज किया जा रहा है। सरकारी आंकड़ों में रोजाना एक से चार के बीच मामले दर्शाए जा रहे है। राजनगर के एक अस्पताल में पिछले 10 दिनों में 25 से ज्यादा लोगों में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई है। सभी मरीज एंटीजन किट की जांच में संक्रमित पाए गए। कोई गंभीर नहीं होने पर मरीजों ने स्वास्थ्य विभाग को सूचित नहीं करने की गुहार लगाई थी। इसके कारण निजी अस्पताल प्रबंधन ने उन्हें 7 दिन के लिए आइसोलेट होने की सलाह देते हुए दवाएं दे दीं। ऐसा केवल एक ही अस्पताल में नहीं हो रहा है। सूत्रों के अनुसार शहर के अधिकांश अस्पतालों में इस तरह के मरीज पहुंच रहे हैं। जबकि स्वास्थ्य विभाग लगातार कोरोना के ममलों में कमी आने के दावे कर रहा है।

संपादकीय

कांग्रेस नेतृत्व की लाचारी

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इस समय पूरी निश्चिंता से प्रदेश में काम करते हुए दिख रहे हैं। दिल्ली आए, सोनिया गांधी से मुलाकात की और बाहर आकर बयान दिया कि मैंने माफी मांग ली है। हालांकि माफी की बात करते समय उनके चेहरे पर ना खुशी का भाव साफ झलक रहा था। साफ है कि वे अपने मन से नहीं बल्कि निर्देश के अनुसार बयान दे रहे थे। लेकिन जिन लोगों ने या कल्पना की थी कि उनसे नाराज सोनिया गांधी इस्तीफा ले लेंगे उन्हें निश्चित रूप से धक्का पहुंचा होगा। वास्तव में राजस्थान कांग्रेस का बवाल जिस तरह ज्यादातर लोगों के लिए हैरत का कारण बना हुआ था ठीक वैसा ही वहां से लौटकर पर्यवेक्षकों अजय मकान और मलिकार्जुन खडगे की रिपोर्ट भी। हालांकि कांग्रेस को ठीक से समझने वालों के लिए पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट में आश्चर्य का कोई विषय नहीं था। हां, जिनने अशोक गहलोत के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई अपरिहार्य मान लिया था उनके लिए आश्चर्य का विषय जरूर रहा। अशोक गहलोत ने जिस तरह विधायकों को खड़ा कर कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व यानी सोनिया गांधी राहुल गांधी के लिए अपमानजनक स्थिति पैदा की उसमें उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई स्वाभाविक स्थिति होती। आखिर दिनभर राजस्थान सरकार के मंत्री और विधायक अपने अनुसार विद्रोहात्मक गतिविधियां करते रहे और गहलोत ने उन्हें रोकने की कोई कोशिश नहीं की। कोशिश तो छोड़िए उन्होंने एक बयान नहीं दिया जिसमें विधायकों के इस कदम को गलत कहा गया हो। यह प्रमाणित करता है कि विधायकों के क्रियाकलापों को अशोक गहलोत की सहमति प्राप्त थी। मंत्री, सचेतक, विधायक सब एक स्वर में अशोक गहलोत के पक्ष में झंडा उठाए रहे और इसमें उनकी कोई भूमिका न हो यह संभव है क्या ? अगर अजय माकन और मल्लिकार्जुन खड्गे की रिपोर्ट स्वीकार करें तो अशोक गहलोत दोषी नहीं थे। इनकी रिपोर्ट में उन्हें समूचे प्रकरण से बरी कर दिया गया। जरा याद कीजिए ,अजय माकन ने जयपुर और दिल्ली में क्या कहा था ? उन्होंने कहा था कि विधायक और मंत्रियों का पूरा व्यवहार प्राथमदृष्टया अनुशासन तोड़ना है। दिल्ली आकर भी उन्होंने यही दोहराया और कहा कि सोनिया जी को भी उन्होंने यही कहा है। मल्लिकार्जुन खडगे ने भी गहलोत सरकार के मंत्रियों और विधायकों के रवैये को कार्रवाई के योग्य माना था। जयपुर में अशोक गहलोत को फोन कर पूछा कि यह क्या हो रहा है। वे जब दिल्ली के लिए चलने लगे तो उन्होंने गहलोत को फोन कर कहा कि हम लोग दिल्ली जा रहे हैं। उत्तर में गहलोत ने कहा कि मैं आकर आपसे मिलता हूं और वे उनके पास आए। आने पर क्या बात हुई यह किसी को नहीं पता । अगर गहलोत ने कहा होता कि वे सोनिया गांधी और राहुल गांधी के निर्णय के विपरीत जाने वाले मंत्रियों – विधायकों के साथ नहीं है तो निश्चित रूप से स्थिति बदल जाती। संभव था मलिकार्जुन खडगे और अजय माकन मीडिया के सामने आते और फिर यह बयान उसी समय लाइव भी हो जाता। जाहिर है, इनके बीच जो बातचीत हुई वह ऐसी नहीं थी जिसे सार्वजनिक किया जाए। अगर कोई आश्वासन होता तो दिल्ली में सोनिया गांधी से बात कर फिर से विधायकों की बैठक बुलाने की कोशिश होती। ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके बावजूद अगर पर्यवेक्षक रिपोर्ट में कहा गया कि अशोक गहलोत तकनीकी तौर पर दोषी नहीं है तथा घोर अनुशासनहीनता के लिए तीन नेताओं के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की अनुशंसा की गई तो इसके निहितार्थ समझने की आवश्यकता है। पार्टी की अनुशासन समिति ने तीनों नेताओं को नोटिस भी जारी कर दिया। अजय माकन और मल्लिकार्जुन खडगे जयपुर में विधायकों की बैठक के लिए गए थे। उसी बैठक में अशोक गहलोत की जगह सचिन पायलट का नाम मुख्यमंत्री के रूप में अनुमोदित होना था। जैसा प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि हम एक पंक्ति का प्रस्ताव स्वीकारने के लिए नहीं आने वाले थे।

भारत की आर्थिक वृद्धि की रफ्तार घटी

आर्थिक सुस्ती के संकेत बिलकुल साफ हैं. औद्योगिक उत्पादन हो या बिजली उत्पादन, निर्यात हो या जीएसटी से कमाई, सबकी गति सुस्त पड़ रही है. 14 फीसदी की वृद्धि के साथ बैंक क्रेडिट जैसे कुछ संकेतक धोखा दे रहे हैं. लेकिन थोक कीमत में जब 12.4 प्रतिशत की वृद्धि हो रही हो तब अधिकांश आर्थिक वृद्धि आम महंगाई को ही दर्शाती है. व्यापारिक वस्तुओं के निर्यात को ही लें, इसमें पिछले वर्ष आई तेजी के कारण जो गति बनी हुई थी वह सितंबर में आकर खत्म हो गई और इस महीने में इसमें 3.5 फीसदी के कमी आ गई. इसके ब्यौरे और चिंताजनक है. इंजीनियरिंग माल के निर्यात में सितंबर में 17 फीसदी की कमी आई, जबकि कपड़े (धागे, सिले-सिलाए वस्त्रों आदि) के निर्यात में 31.5 फीसदी की गिरावट आई. इलेक्ट्रॉनिक सामान के निर्यात में 64 फीसदी की तेज वृद्धि ने कमी की पूरी भरपाई नहीं की. वैसे भी यह सेक्टर का घरेलू मूल्य वृद्धि में कम ही योगदान देता है. इस सबका कुल नतीजा यह है कि पहले छह महीने में व्यापारिक वस्तुओं के मामले में व्यापारिक घाटा दोगुना बढ़ गया है. अनुमान लगाया गया है कि पूरे साल के लिए चालू खाते का घाटा (सेवाओं के व्यापार समेत) पूरे दशक के उच्चतम स्तर पर पहुंच जाएगा. बिजली उत्पादन की कहानी भी निर्यातों की कहानी जैसी ही है. साल के शुरू के महीनों में आंकड़े ऊपर की ओर थे लेकिन अगस्त से वृद्धि में सुस्ती आई और आंकड़े सपाट हो गए. इसे वर्ष 2021-22 के बिजली उत्पादन के आंकड़े के संदर्भ में देखा जा सकता है, जो 2017-18 के आंकड़े से केवल 1 फीसदी अधिक थे. औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक में जुलाई में 2.4 फीसदी की वृद्धि हुई, जबकि 'कोर सेक्टर' (इस्पात, सीमेंट, खाद, और ऊर्जा के अन्य व्यवसाय) में अगस्त में उत्पादन में वृद्धि 9 महीने के न्यूनतम स्तर 3.3 फीसदी पर पहुंच गई. जीएसटी के आंकड़े भी बहुत कुछ कहते हैं. अप्रैल में इससे 1.68 ट्रिलियन रुपये की कमाई हुई (जो मार्च में वार्षिक आउटपुट को दर्शाती है), लेकिन बाद के महीनों में आंकड़े 1.44 ट्रिलियन, 1.49 ट्रिलियन, 1.43 ट्रिलियन रहे. अनुमान है कि सितंबर में कमाई 1.45 ट्रिलियन की होगी. आंकड़े इससे ज्यादा सपाट नहीं हो सकते थे. अगर अर्थव्यवस्था समतल हो रही है तब फिर प्रत्यक्ष कर उगाही में तेज वृद्धि की क्या वजह है ? धुंधले होते क्षितिज से रोशनी की यह किरण इसलिए फूटी है कि कॉर्पोरेट मुनाफा बढ़ रहा है हालांकि लागत मूल्य में वृद्धि का अर्थ यह है कि मार्जिन को नौ तिमाहियों में सबसे निचले स्तर पर रखा गया है. अप्रैल-जून में करीब 3,000 सूचीबद्ध कंपनियों ने मुनाफे में कुल 22.4 फीसदी की वृद्धि दर्शाई, लेकिन यह वित्त सेक्टर की सेहत में सुधार के कारण हुआ. इसे छोड़ दें तो आंकड़ा 16.3 फीसदी पर पहुंच जाएगा. इसके अलावा, मुनाफे में वृद्धि आधा दर्जन बड़ी कंपनियों में सीमित यहां जिन्होंने अधिकतम वृद्धि दर्ज की. याद रहे कि शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक आज पिछले साल के मुक़ाबले निचले स्तर पर हैं, जबकि रुपया अभी और कमजोर होगा. सभी तो नहीं मगर अधिकतर बुरी खबरों के लिए बाहरी कारण जिम्मेदार हैं— तेल की ऊंची कीमतें, सप्लाई में बाधा, डॉलर की ओर झुकाव, और वैश्विक आर्थिक सुस्ती. हम एक मुश्किल वक़्त में है, और वृद्धि की अपेक्षाओं पर लगाम कसना होगा. भारतीय रिजर्व बैंक ने पूरे साल के लिए वृद्धि दर जो 7 फीसदी रहने का अनुमान लगाया है वह तमाम दूसरे आंकड़ों से बनती तस्वीर से मेल नहीं खाती. विश्व बैंक ने संशोधित अनुमान 6.5 फीसदी का लगाया है, जो अधिक वास्तविक लगता है. इस बीच, केंद्रीय बैंक ऊंची मुद्रास्फीति और नीची आर्थिक वृद्धि के दो पाटों के बीच फंस गया है. दस साल वाले ट्रेजरी बॉन्डों से लाभ पिछले साल 6.27 फीसदी से बढ़कर 7.45 फीसदी हो गया और पिछले एक दशक में इनसे लाभ लगभग मध्य स्तर पर पहुंच गया. रिजर्व बैंक जबकि मुद्रास्फीति से जूझ रहा है तब अगर लाभ और बढ़ा तो आर्थिक वृद्धि की गति और धीमी हो जाएगी.

'आज़ादी के अमृत महोत्सव' का सबसे बड़ा व ऐतिहासिक आयोजन है 'भारत जोड़ो यात्रा'

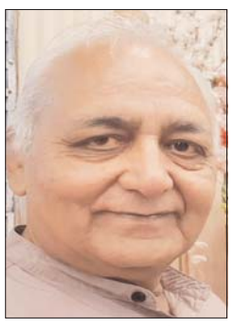

तनवीर जाफ़री

स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर देश भर में आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। सरकारी व ग़ैर सरकारी स्तर पर देश भर में अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पूरे देश में बड़े पैमाने पर दो दिवसीय घर घर तिरंगा अभियान चलाया गया। 15 अगस्त के दिन लाल क़िले को विशेष रूप से सुसज्जित किया गया। देश के अनेक नगरों में तिरंगा यात्रायें निकाली गईं। गोया आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ का बड़े पैमाने पर जश्न मनाया गया। और इसे भी महज़ एक संयोग कहें कि आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे इसी वर्ष में कांग्रेस पार्टी द्वारा कन्याकुमारी से कश्मीर तक लगभग 3700 किलोमीटर लंबी पदयात्रा निकाली जा चुकी है। कांग्रेस नेता राहुल गाँधी के नेतृत्व में चल रही यह भारत जोड़ो यात्रा 12 राज्यों से होकर गुज़रेगी।

सवाल यह है कि क्या सत्ता की ओर से अधिकृत तौर से घोषित किया गया व मनाया जा रहा आज़ादी का अमृत महोत्सव और देश की वर्तमान स्थिति व देश की जनता के हालात वास्तव में आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिये साज़गार हैं ? क्या देश के करोड़ों बेघर व निराश्रित लोगों के लिये घर घर तिरंगा अभियान के कोई मायने भी हैं ? देश में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही साम्प्रदायिकता व जातिवाद के वातावरण क्या हमें स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को आज़ादी का अमृत महोत्सव के जश्न के रूप में मनाने की इजाज़त देते हैं। निरंतर बढ़ती जा रही मंहगाई व बेरोज़गारी क्या आज़ादी के अमृत महोत्सव के लक्षण हैं ? आज भारतीय रुपया अमेरिकी डॉलर के मुक़ाबले 83 रूपये के रिकार्ड स्तर तक पहुँचने जा रहा है। रूपये की इस ऐतिहासिक गिरावट का कारण यदि 2014 के नरेंद्र मोदी के कथन के नज़रिये से देखें तो – रुपया उसी देश का गिरता है जिस देश की सरकार भ्रष्ट और गिरी हुई हो । आज सत्ता कहां तो विश्व गुरु,विश्व शक्ति,महाशक्ति बनने और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जैसे बड़े बड़े दावे करती है तो दूसरी और रुपया अमेरिकी डॉलर के मुक़ाबले 83 रूपये के रिकार्ड स्तर तक पहुँच जाना अर्थात मोदी के ही शब्दों में देश में भ्रष्ट और गिरी हुई सरकार का वातावरण क्या हमें आज़ादी के अमृत महोत्सव का एहसास कराता है ? सत्ता द्वारा रची जा रही विपक्ष को समाप्त करने की साज़िश और सरकारी संस्थाओं पर नियंत्रण हासिल करने जैसी कोशिशें क्या किसी जीवंत लोकतान्त्रिक राष्ट्र का प्रतीक हैं ? मीडिया द्वारा सत्ता के समक्ष शाष्टांग दंडवत करना और सत्ता के बजाये विपक्ष को कटघरे में खड़ा करना और देश में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने का षड़यंत्र रचना क्या आज़ादी के अमृत महोत्सव की कारगुज़ारी मानी जा सकती है ?

उपरोक्त व इन जैसे अनेक सवालों को लेकर ही कांग्रेस ने राहुल गाँधी के नेतृत्व में सैकड़ों पार्टी नेताओं हज़ारों कार्यकर्ताओं व अनेक समाजसेवियों के साथ लगभग 150 दिनों तक पैदल चलकर आज़ादी के इसी अमृत महोत्सव काल के दौरान भारत जोड़ो यात्रा जैसा ऐतिहासिक मिशन छेड़ दिया है। जैसे जैसे यह यात्रा आगे बढ़ रही है, इसमें शामिल लोग,उनका उत्साह,रास्ते में यात्रा को मिल रहा अपार जन समर्थन इस यात्रा के दौरान रोज़ाना उठाये जाने वाले मुद्दे,इसमें शामिल हर धर्म जाति क्षेत्र व समुदाय के लोगों की शिरकत,यात्रा में हो रहे शांति,सद्भाव व परस्पर भाईचारे के दर्शन देखकर तो यही प्रतीत होता है गोया यही यात्रा उस वास्तविक भारत का दर्शन पेश कर रही है जिस अनेकता में एकता रखने वाले महात्मा गांधी,भगत सिंह,चंद्रशेखर आज़ाद,सुखदेव,राजगुरु व अशफ़ाक़ुल्ला ख़ान जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों के भारत को दुनिया अब तक आदर व सम्मान के साथ जानती रही है।

इस यात्रा में सोनिया गाँधी व प्रियंका गाँधी के शामिल होने के राजनैतिक महत्व उसके राजनैतिक लाभ हानि जैसे पार्टी स्तरीय विषयों को अलग करके भी देखें तो भी यह यात्रा वास्तविक भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व करती नज़र आ रही है। मिसाल के तौर पर भारत जोड़ो यात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी धर्मों से सम्बंधित प्रमुख धर्मस्थलों में राहुल गाँधी का जाना और उन के धर्मगुरुओं से शुभाशीष लेना देश के वास्तविक धर्म निरपेक्ष स्वरूप का दर्शन कराता है। यात्रा के मार्ग में छात्रों व बेरोज़गार युवकों का शामिल होना देश के शिक्षित युवाओं की बेचैनी को प्रतिबिम्बित करता है।

इससे अधिक भावुक व उम्मीदों भरा क्षण इस यात्रा के लिये और क्या हो सकता है जबकि कर्नाटक से गुज़रते हुये इस यात्रा में खेल व शिक्षा के क्षेत्र में ख्याति अर्जित करने वाले कई दिव्यांग अपनी अपनी ट्राई साईकिल के साथ यात्रा में शामिल हुये। यात्रा के अब तक तय किये गये लगभग पूरे मार्ग में रास्ते में शिरकत करने वाले स्थानीय लोक कलाकार अपनी विशेष वेश भूषा में नृत्य करते लोग अपनी उपस्थिति से भारत की रंग बिरंगी संस्कृति तथा विविधता में एकता का जीवंत एहसास करा रहे हैं।

वहीं पत्रकार व सामाज सेवी गौरी लंकेश के परिवार के लोगों का इस यात्रा में शामिल होना इस बात का संकेत है कि यह यात्रा नफ़रत व हिंसा फैलाने वालों के विरुद्ध उन भारतवासियों की सशक्त आवाज़ है जो देश में अलग अलग विचार रखने के बावजूद मिल जुल कर प्रेम व सद्भाव से देश में रहना चाहते हैं। रास्ते में हर वर्ग व समाज के बुज़ुर्गों व बच्चों से यात्रा को मिलने वाला प्यार,उनका आशीष व समर्थन देखकर यही महसूस होता है गोया यही वास्तविक भारत का स्वरूप है। उधर यात्रा के दौरान राहुल गांधी की विनम्रता को दर्शाने वाले कई चित्र जिनमें विशेषकर तेज़ बारिश में भीगते हुये उनका भाषण देना,ज़मीन पर बैठकर सोनिया गाँधी के जूते का फ़ीता कसते हुये उनकी फ़ोटो जहां किसी राजनेता की विनम्रता के दर्शन करा रही थी वहीं रास्ते में मामूली सी चाय की दुकानों पर जनसाधारण की तरह उनका बैठना और आम लोगों से मिलना व बात करना सीधे तौर पर आम लोगों में यह एहसास पैदा कर रहा है कि यह यात्रा किसी शासक की इकतरफ़ा मन की बात थोपने वाली नहीं बल्कि जन जन की बात सुनने वाली यात्रा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज़ादी के अमृत महोत्सव का प्रोपेगण्डा भले ही सरकार व सत्ता द्वारा किया जा रहा हो परन्तु इसमें भी कोई शक नहीं कि कांग्रेस के नेतृत्व में चल रही भारत जोड़ो यात्रा ही दरअसल आज़ादी का अमृत महोत्सव का सबसे बड़ा,रचनात्मक,शक्तिशाली व ऐतिहासिक आयोजन है।

क्रिएटिव लिबर्टी के बहाने, आस्था पर निशाने

प्रियंका सौरभ

आदिपुरुष अल्टीमेटम ने आदिपुरुष मूवी के टीज़र के रिलीज़ होने के बाद पूरे भारत में विवाद और बहस छेड़ दी है। कई बार ऐसा लगता है कि हिंदू देवी-देवताओं का उपहास उड़ाना, सनातन धर्म का मजाक बनाना और देवी-देवताओं को गलत तरीके से चित्रित करना नए ट्रेंड का हिस्सा बन गया है। ऐसा करने वालों को लगता है कि ये सब करने से वह काफी कूल लग रहे हैं। कई बार बोलने की आजादी के नाम पर, तो कभी धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर या फिर कला की आजादी के नाम पर, अक्सर हिंदू देवी-देवताओं का मजाक उड़ाया जाता है। आखिर सस्ती पब्लिसिटी के लिए कब तक हिंदू धर्म और देवी देवताओं का अपमान होगा ? एक सवाल और उठता है कि आखिर लोगों में इतनी हिम्मत आती कहां से है ? अब यूं ही मेरे मन में एक सवाल आया कि किसी और धर्म के देवता या गुरु होते तो क्या इसी तरह से उनका भी मजाक उड़ाया जा सकता था ? यह हिंदू देवी-देवताओं की खिल्ली उड़ाने का पहला मामला नहीं है।

रोज सोशल मीडिया, टीवी और अन्य मंचों पर हिंदू धर्म के देवी-देवताओं का जो मजाक उड़ रहा है, उस पर हमने चुप्पी ओढ़ रखी है। ऐसा नहीं है कि हम लोगों को बुरा नहीं लगता है। लगता है। बस हम सोचते हैं कि इसका विरोध कोई और कर देगा। सोचने की बात है कि किसी भी धर्म का मखौल उड़ाने वाले व्यक्ति की भावना क्या होती है ? सच तो ये है कि हिंदू धर्म में ही ऐसे कई लोग हैं, जो आपको खुद टारगेट करते हैं। क्या फैक्ट्स पर क्रिएटिविटी की जीत होगी ? हमें भ्रमित पारिस्थितिकी तंत्र के यू.एस. रूप की ओर धकेल रहा है जहां सही को गलत से और अच्छे को बुरे से अलग करना मुश्किल है। उत्तर बहुत सरल है; रचनात्मकता एक ऐसे क्षेत्र में शामिल हो सकती है जो धर्म के पहलुओं और सिद्धांतों को बदलने की कोशिश नहीं करता है। रचनात्मकता का उपयोग दोनों तरह से किया जा सकता है - नुकसान पहुँचाने के लिए या अच्छा करने के लिए। रचनात्मक कार्य जो समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, हतोत्साहित करते हैं और उन्हें खुले तौर पर खारिज कर दिया जाना चाहिए और इसमें शामिल हैं: फिल्मों में अत्यधिक भ्रष्टता जो काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं से संबंधित नहीं हैं, महिलाओं को वस्तुओं के रूप में चित्रित करना, शराब को बढ़ावा देना और व्यभिचार आदि। मुख्य मुद्दा यह है कि आज हम रचनात्मक कलाकारों की जिम्मेदारियों के बीच अंतर नहीं कर पा रहे हैं और यदि इन जिम्मेदारियों का उल्लंघन करते हैं तो उन्हें दंडित किया जा सकता है। लेकिन यह कानूनी प्रक्रिया के अनुसार ही किया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक राज्य अपने नागरिकों की किसी भी बौद्धिक संपदा पर प्रतिबंध या प्रतिबंध की खुले तौर पर वकालत नहीं कर सकता है। चुनौती सभी कलाकारों और लेखकों के अधिकारों की रक्षा करने की है, जबकि समान रूप से उन्हें समाज को प्रभावित करने की कोशिश के लिए दंडित करने के लिए कानून है। यह बहुत सीधा है और यहां हम एक ऐसे मुद्दे पर लगातार बहस कर रहे हैं जिसे सामान्य ज्ञान से निपटा जा सकता है। तथाकथित बॉलीवुड सभी को निशाना बना रहा है।

अभिव्यक्ति की आजादी तभी तक है जब तक किसी दूसरे समुदाय की आस्था पर चोट ना करे। धार्मिक नायको पर, फिल्म में नायको का सम्मान नही तो यह सनातनी आस्था पर कुठाराघात है। इसपर तत्काल प्रभाव से बैन लगना अति आवश्यक है। हिंदी फिल्म निर्माताओं को 60 और 70 के दशक की फिल्म निर्माण की ओर लौटना चाहिए।

देश में तस्करों के नेटवर्क को ध्वस्त करना जरूरी

तटरक्षक बल और गुजरात के आतंकवाद निरोधक दस्ते के साझा अभियान में 50 किलो हेरोइन की बरामदगी

एक प्रश्न यह भी है कि भारत ड्रग्स तस्करों का आसान निशाना तो नहीं बन रहा है ? इसकी आशंका इसलिए है क्योंकि हाल के समय में देश के विभिन्न शहरों में अच्छी-खासी मात्रा में तरह-तरह के मादक पदार्थ पकड़े गए हैं। समुद्री रास्ते किस तरह देश में ड्रग्स लाने का जरिया बन गए हैं, इसका ताजा प्रमाण है तटरक्षक बल और गुजरात के आतंकवाद निरोधक दस्ते (ह्ृ) के साझा अभियान में अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा के पास 50 किलो हेरोइन की बरामदगी। जिस नौका से यह हेरोइन पकड़ी गई, उसमें सवार छह पाकिस्तानी नागरिकों को भी गिरफ्तार किया गया है। पिछले महीने भी गुजरात के समुद्री तट से एक पाकिस्तानी नौका से ड्रग्स बरामद की गई थी। इसी तरह गुजरात के बंदरगाहों से भी रह-रहकर ड्रग्स की खेप पकड़ी जाती रही है। पिछले साल सितंबर में गुजरात के मुंद्रा बंदरगाह से तो राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने 21 हजार करोड़ की ड्रग्स बरामद की थी। देश के अन्य बंदरगाह भी ड्रग्स की आवक के ठिकाने बनते दिख रहे हैं। बहुत दिन नहीं हुए, जब मुंबई के बंदरगाह में एक कंटेनर से दिल्ली पुलिस ने हेरोइन की एक बड़ी खेप बरामद की थी। गत दिवस मुंबई में करोड़ों रुपये की जो ड्रग्स बरामद की गई, उसके बारे में यही अंदेशा है कि उसे समुद्री रास्ते से लाया गया होगा। दूसरे देशों और मुख्यत: अफगानिस्तान से लाई जाने वाली ड्रग्स का बड़ी मात्रा में पकड़ा जाना अच्छी बात है। इससे यह पता चलता है कि हमारी एजेंसियां सजग और सक्रिय हैं, लेकिन कहीं जितनी मात्रा में ड्रग्स पकड़े जा रहे हैं, उससे कहीं अधिक मात्रा में देश में खप तो नहीं रहे ? एक प्रश्न यह भी है कि भारत ड्रग्स तस्करों का आसान निशाना तो नहीं बन रहा है ? इसकी आशंका इसलिए है, क्योंकि हाल के समय में देश के विभिन्न शहरों में अच्छी-खासी मात्रा में तरह-तरह के मादक पदार्थ पकड़े गए हैं।

आओ मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को सभी के लिए वैश्विक प्राथमिकता बनाएं

वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में बात करने के महत्व को महत्वपूर्ण समझना महत्वपूर्ण है - एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर तेजी से बदलते परिपेक्ष मैं मनीषी जीवो के सम्मुख दो परिस्थितियों के परिणामों से रूबरू होना जरूरी है, पहला पारंपरिक, हस्तगत और शारीरिक श्रम का स्थान डिजिटल युग को हस्तगत होते जा रहा है जिसका सीधा संबंध मानसिक बौद्धिक और तकनीकी पर निर्भरता है और दूसरा कोविड महामारी के बाद बढ़े हुए हृदय रोग, साइलेंट हार्ट अटैक के मामलों के लिए भी तनाव चिंता को प्रमुख कारक के तौर पर देखा जा रहा है इसलिए अब हमारे लिए यह जरूरी हो गया है कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में बात करना और उसके महत्व को समझना महत्वपूर्ण हो गया है। चुंकि 10 अक्टूबर 2022 को हम विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाएं हैं, इसलिए आज हम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से इस 2022 की थीम पर चर्चा करेंगे कहेंगे आओ मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को सभी के लिए वैश्विक प्राथमिकता बनाएं।

साथियों बात अगर हम मानसिक स्वस्थ्य रहने की करें तो हमें तनाव से दूर रहना होगा, यह बात हर किसी को हर दिन याद रखनी चाहिए, कि तनाव किसी भी समस्या का हल नहीं होता बल्कि कई अन्य समस्याओं का जन्मदाता होता है। उदाहरण के लिए तनाव हमको अत्यधिक सिरदर्द, माइग्रेन, उच्च या निम्न रक्तचाप, हृदय से जुड़ी समस्याओं से ग्रस्त करता है। दुनिया में सबसे अधिक हार्ट अटैक का प्रमुख कारण मानसिक तनाव होता है। यह हमारा स्वभाव चिड़चिड़ा कर हमारी खुशी और मुस्कान को भी चुरा लेता है। इससे बचने के लिए तनाव पैदा करने वाले अनावश्यक कारणों को जीवन से दूर करना जरूरी ही नहीं अनिवार्य हो गया है।

साथियों चूंकि पूरा विश्व मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूक हो रहा है, और तनाव से दूर रहने के लिए प्रयास कर रहा है, तो हम भी यह संकल्प लें, कि किसी भी समस्या में अत्यधिक तनाव नहीं लेंगे। क्योंकि यह कई तरह की शारीरिक समस्याओं को भी जन्म दे सकता है। आखिरकार तनाव लेने ये समस्या सुलझने के बजाए और अधिक जटि ?ल हो जाती है, तो बेहतर यही है कि उन्हें शांति से समझते हुए हल किया जाए। समस्या में मुस्कुराना क्यों भूला जाए !

साथियों बात अगर हम, हाल के वर्षों की करें तो मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के बारे में बहुत सारी बातें देखी गई हैं।

पर्याप्त सबूतों से पता चला है कि कैसे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य आपस में जुड़े हुए हैं, और कैसे एक के इष्टतम को दूसरे की देखभाल किए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। हम अभी भी मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा को उतना महत्व नहीं देते जितना हमें करना चाहिए। सोशल मीडिया के युग में, बच्चों के आत्म-सम्मान के स्तर में गिरावट देखी गई है। इस प्रकार, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में बात करने के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है।

साथियों पर्याप्त नींद न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। नींद की गुणवत्ता और अवधि को बेहतर रखकर तनाव-चिंता और अवसाद जैसे विकारों के जोखिम को कम किया जा सकता है। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि रात में 6-8 घंटे की निर्बाध नींद लेने वालों की तुलना में नींद विकारों या नींद न पूरी कर पाने वाले लोगों में कई प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य विकारों का जोखिम अधिक पाया गया है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी उम्र के लोगों को अच्छी नींद प्राप्त करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मनोरोग विशेषज्ञ बताते हैं, हमारी दिनचर्या की कई गड़बड़ आदतों के कारण भी मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर हो रहा है। लोगों में बढ़ती शारीरिक निष्क्रियता, स्क्रीन टाइम, नींद की कमी की समस्या के कारण मानसिक स्वास्थ्य विकारों में उछाल देखा जा रहा है। लाइफस्टाइल के अलावा आनुवांशिक रूप से भी इसका जोखिम हो सकता है।

साथियों बात अगर हम कोविड महामारी के मानसिक स्वास्थ्य पर असर की करें तो, अध्ययनों में पाया गया है कि कोविड-19 महामारी के बाद से मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं में आश्चर्यजनक रूप से उछाल आया है। कम उम्र के लोगों में तनाव-चिंता और गंभीर स्थितियों में अवसाद की समस्या देखी जा रही है। महामारी ने मनोवैज्ञानिक तौर पर लोगों की सेहत को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। कोविड-19 के बाद बढ़े हृदय रोग और हार्ट अटैक के मामलों के लिए भी तनाव-चिंता को प्रमुख कारक के तौर पर देखा जा रहा है। मानसिक स्वास्थ्य के बारे में वैश्विक स्तर पर लोगों को शिक्षित-जागरूकता करने और सामाजिक कलंक की भावना को दूर करने के लिए हर साल 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है।

साथियों बात अगर हम मनीषियों के मानसिक स्वस्थ होने की बात संस्कृति के श्लोक से करें तो, आत्मन इंद्रिय मनन स्वस्थन स्वास्थ्य इति अवधीयते। चरक संहिता के इस श्लोक के अनुसार जिसकी आत्मा, मन एवं इंद्रियां स्वस्थ हों, वही वास्तव में स्वस्थ है। 1948 में विश्व स्वास्थ्य संगठन की परिभाषा के अनुसार शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णतन स्वस्थ होना ही स्वास्थ्य का प्रतीक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है और तंदुरुस्ती हजार नियामत है, जैसी सूक्तियां हमारे यहां बच्चे-बच्चे के जुबां पर हैं।

मन कहता है

मन कहता है दुनियादारों से बनाए रखना, हृदय कहता है फकीरों से बनाए रखना

लोग सफलता को पचा नहीं पाते है बस दूरी तुम अमीरों से बनाए रखना

धूप बहुत तेज होती है सफर में हमारे, तुम छायादार सजरों से बनाये रखना।

हादसों से हौसले पस्त नहीं होने देंना, तुम हौसलों के नजारों से बनाए रखना,

जिंदगी भी एक ख्वाब की तरह है , दोस्ती गम के ठिकानों से बनाए रखना।

जो वादा करके भूल जाते हैं हमेशा, दूरियां ऐसे हुक्मरानों से बनाए रखना।

दुनिया भी एक रंगमंच की तरह है प्यारे, तुम भी दो चार किरदारों से बनाए रखना।

जो गमों को भुला दे दो पल में ही संजीव, तुम भी ऐसे मयखानों से बनाए रखना।

शार्ट न्यूज

मनोज तिवारी ने मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का किया आह्वान

देवरिया। उत्तर प्रदेश के देवरिया में रविवार को भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली इकाई के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और सांसद मनोज तिवारी ने यहाँ जनता और पार्टी कार्यकर्ताओ से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 2024 में फिर से देश का तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का आह्वान किया। तिवारी, यहां भाजपा कार्यकर्ता सम्मेलन में हिस्सा लेने आए थे। यहाँ पहुँचने पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। इस दौरान संवाददाताओं के सवाल पर उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में कुछ भ्रमित करने वाली शक्तियां काम करती हैं। उन्होंने कहा कि सुभासपा के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर उन्हीं शक्तियों के भ्रम में फंस कर दूसरी धारा में चले गये थे।अब ओमप्रकाश राजभर को पता हो गया है कि उप्र सरकार का मौजूदा मॉडल सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए अब वह तारीफ कर रहे है। उन्होंने कहा कि वैसे अभी बहुत उल्टे लोग उत्तर प्रदेश में सीधे हो रहे हैं।

मायावती ने कांशीराम को श्रद्धांजलि अर्पित की

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती ने रविवार को पार्टी के संस्थापक कांशीराम की पुण्यतिथि पर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्ता वह मास्टर चाबी है जिससे तरक्की के बंद दरवाजे खुल सकते हैं, इसीलिए कांशीराम द्वारा शुरू किए गए अभियान को हर कीमत पर जारी रहना चाहिए। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने ट्वीट कर कहा, बहुजन समाज को राजनीतिक शक्ति में उत्थान कर उन्हें यहाँ हुकमरान समाज बनाने के लिए बामसेफ, डीएस4 एवं बहुजन समाज पार्टी के जन्मदाता एवं संस्थापक मान्यवर श्री कांशीराम जी को आज उनकी पुण्यतिथि पर नमन व अपार श्रद्धा-सुमन अर्पित। उन्हें नमन कर रहे उनके सभी अनुयाइयों का तहेदिल से आभार। उन्होंने अपने समर्थकों को आगाह करते हुए अपील भी की, देश में खासकर यूपी के लोगों ने यहाँ चार बार अपनी पार्टी की सत्ता प्राप्त करके यह देख लिया है कि सत्ता वह मास्टर चाबी है जिससे तरक्की के बंद दरवाजे खुल सकते हैं, इसीलिए यह अभियान हर कीमत पर जरूर जारी रहना चाहिए। यही आज के दिन का संदेश है और इसी संकल्प के साथ कार्य भी करना है।

कैलाश मानसरोवर भवन में किराए पर रूम

गाजियाबाद। यूपी का एकमात्र कैलाश मानसरोवर भवन अब होटल की तरह प्रयुक्त होगा। लोगों को बाकायदा किराए पर रूम मिलेंगे और वे होटलों की तरह यहां पर रह सकेंगे। उप्र सरकार जल्द इस बिल्डिंग को धर्मार्थ कार्य विभाग से लेकर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण को हैंडओवर करने वाली है। जीडीए ये बिल्डिंग किसी प्राइवेट कंपनी को देगी, ताकि वो इसे पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप पर चला सके। ये सारा काम अगले एक हफ्ते में हो जाएगा। ऐसा करने के पीछे सरकार की मंशा करोड़ों की बिल्डिंग के रखरखाव की है। साल-2020 में जब कैलाश मानसरोवर भवन शुरू हुआ, उसके कुछ महीने बाद ही कोरोना महामारी फैल गई। एक साल इस यात्रा पर प्रतिबंध रहा। इस साल से यात्रा 8 जून से शुरू होकर 8 सितंबर तक चली। यानि पूरे साल में इस भवन का उपयोग सिर्फ चार महीने हुआ। बाकी के आठ महीने ये वीरान पड़ा रहा। बिल्डिंग खाली रहने से उसका रखरखाव नहीं हो पाया। इसे देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने बिल्डिंग की सुविधाएं आम लोगों को भी देखने का फैसला लिया। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने जो प्रस्ताव तैयार किया है, उसके मुताबिक, यहां लोगों को तकरीबन 200 रुपए प्रति व्यक्ति कमरा मिल सकेगा और तकरीबन इतने ही रुपए में ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर मिलेगा। हालांकि रेट पर अभी फाइनल मुहर नहीं लग पाई है।

नोएडा में बन रहा यूपी का पहला डॉग पार्क

नोएडा। नोएडा में बढ़ रहे डॉग विवादों के बीच बन रहा डॉग पार्क का काम अंतिम चरण में है। इसका करीब 75 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। सिविल का काम भी हो चुका है हॉर्टिकल्चर और इलेक्ट्रिकल का काम किया जा रहा है। प्राधिकरण ओएसडी वंदना त्रिपाठी ने बताया कि दीपावली तक काम पूरा हो जाएगा। इसके बाद इसे खोला जा सकता है। प्रदेश का पहला डॉग पार्क नोएडा के सेक्टर 137 में बन रहा है। पार्क विश्व स्तरीय सुविधाओं से लैस होगा। पार्क में डॉग के उठने बैठने खाने सोने घूमने नहाने और मनोरंजन के लिए तमाम साधनों को उपलब्ध कराया गया है। इसे 3.85 एकड़ में विकसित किया जा रहा है। 3.86 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे है।

35 साल के युवक ने छात्रा से की अश्लीलता

मेरठ। मेरठ में 35 साल के युवक ने अपना नाम और धर्म छिपाकर 16 साल की छात्रा से दोस्ती कर ली। आरोपी युवक छात्रा लगातार वॉट्सऐप पर मैसेज करता रहा। छात्रा भी आरोपी के झांसे में आ गई। जहां यह युवक छात्रा को दिल्ली रोड स्थित एक मॉल में ले गया। अंधेरे का फायदा उठाकर आरोपी ने छात्रा के प्राइवेट पार्ट्स को छुआ और अश्लील हरकतें की। वहां आसपास के लोगों को संदेह हुआ तो आरोपी को पकड़ लिया। पूरे मामले में पुलिस ने छात्रा के परिजनों को भी बुलाया। आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। ब्रह्मपुरी थाना क्षेत्र की रहने वाली 16 साल की छात्रा एक कॉलेज में पढ़ाई कर रही है। 20 दिन पहले ब्रह्मपुरी निवासी राजा उर्फ मुसाहिद ने छात्रा से दोस्ती की। इसके बाद दोनों वॉट्सऐप पर बात करने लगे। आरोपी ने खुद को हिंदू बताया और अपना नाम राजा बताया। युवक छात्रा से मिलता तो हाथ में कलावा बांधकर पहुंचाता। आरोपी मुसाहिद ने छात्रा से शादी करने की बात कहकर भी छात्रा को मैसेज लिखे, लेकिन छात्रा मना करती रही। पुलिस ने बताया कि मुसाहिद की उम्र 35 साल है। उसके दो बच्चे हैं, लेकिन यह युवक नाबालिग छात्रा को लेकर मॉल में ऐसी जगह गया, जहां भीड़ भाड़ नहीं रहती। इसके बाद युवक ने छात्रा से अश्लील हरकतें करते हुए प्राइवेट पार्ट्स को छुआ। पुलिस ने छात्रा के पिता की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ 354 और पॉक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है।

छात्राओं के कपड़े चेंज करने का वीडियो बनाने वाले गिरफ्तार

वाराणसी। वाराणसी के जेपी गेस्ट हाउस के संचालक प्रदीप कुमार यादव और मैनेजर राजेश कुमार को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गेस्ट हाउस में लगे सीसीटीवी कैमरे में छात्राओं के कपड़े बदलने का वीडियो कैद हो गया था। सामने आने पर पुलिस और प्रशासन ने सख्ती की है। कार्रवाई के क्रम में अब परेठ कोठी क्षेत्र स्थित जेपी गेस्ट हाउस का लाइसेंस रद्द किया जाएगा। कमिश्नरेट के सीनियर अफसरों ने इंस्पेक्टर सिगरा को कहा है कि गेस्ट हाउस संचालक और मैनेजर का आपराधिक इतिहास खंगाले। आपराधिक इतिहास के आधार पर दोनों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट की कार्रवाई के लिए रिपोर्ट दें। आज दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेजा जाएगा। गरीब मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए वेस्ट बंगाल के पूर्वा मेदिनीपुर का एक एनजीओ काम करता है। छात्र-छात्राओं का ग्रुप लेकर एनजीओ के लोग शनिवार की सुबह वाराणसी आए। सभी कैंट रेलवे स्टेशन के सामने परेड कोठी स्थित जेपी गेस्ट हाउस में पहले से ही कमरा बुक कराए थे। दोपहर बाद गेस्ट हाउस के ग्राउंड फ्लोर की डॉरमेट्री में कपड़े चेंज कर रही 20 छात्राओं ने देखा कि वहां सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है। उन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया था। कहीं यह भी नहीं लिखा था कि आप कैमरे की नजर में हैं।

सड़क हादसे में दो नाबालिगों समेत तीन की मौत

पीलीभीत। पीलीभीत में शनिवार रात बारावफात से लौट रहे युवकों की बाइक सड़क किनारे खड़ी ट्रैक्टर-ट्रॉली टकरा गई। हादसे में बाइक सवार दो नाबालिगों समेत तीनों युवकों की मौत हो गई। राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। घटना की जानकारी लेने के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। बरेली के फरीदपुर निवासी उमैर (18) अपने दोस्त ओवैस और अयान (14) के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर अमरिया थाना क्षेत्र के हररायपुर गांव में देर रात बारावफात की लाइट देखने गए थे। तीनों युवक मोटरसाइकिल पर सवार होकर लौट रहे थे। इस दौरान लाहौरगंज गांव के पास स्थित पेट्रोल पंप के सामने सड़क किनारे खड़ी टैक्टर ट्रॉली से उनकी बाइक अनियंत्रित होकर टकरा गई। हादसे के दौरान दो बाइक सवारों की मौत हो गई। वहीं तीसरे घायल ने बरेली में इलाज के दौरान देर रात दम तोड़ दिया।

गोंडा में सरयू की प्रचंड हुई वेग, कट गई रोड, आवागमन ठप

गोंडा। गोंडा जिले में सरयू की प्रचंड हुई वेग के मुहाने पर एक फिर से ढेमवा रोड आ गई है। लगभग पांच सौ मीटर की दूरी में रोड पर कटान चल रही है। विगत दिनों आई बाढ़ के हट जाने बाद रोड के जो बच जाने की उम्मीद जगी थी।

अब इस पर फिर संकट मंडराने लगा है। कटान वाले स्थान पर धारा सड़क तक पहुंच गई है। यद्यपि मौके पर रोड को बचाने के लिए विभाग द्वारा प्रयास किया जा रहा है।

बालू भरी बोरी और बोल्डर डालकर कटान से बचाने का उपाय इस बार कारगर होता नहीं दिख रहा है। इसके आलावा दत्तनगर गांव मे ढेमवा रोड पर स्थित दो डिप वाले पुल पर भी बाढ़ का पानी चढ़ गया है। रोड पर पानी के

आ जाने से अगले कुछ घंटों मे इस रोड पर वाहनों का आवागमन ठप हो जाएगा।

बाढ़ से घिरे दत्तनगर गांव के सभी मजरे

बीते 24 घंटे मे जलस्तर मे हुई तीव्र गति से वृद्धि से दत्तनगर गांव के दो दर्जन मजरे बाढ़ से घिर गए है। ढेमवा रोड से गांव के विभिन्न मजरों को जोड़ने वाले सभी सम्पर्क मार्ग पर जलभराव हो गया है। इसके अलावा तुलसीपुर, जैतपुर, दुल्लापूर, माझाराठ, महेशपुर, कटराभोगचन्द, चौखडिया, इन्दरपुर गांव भी बाढ प्रभावित हो गई है।

बरेली में बिजली की केबल टूटने पर दो समुदाय में पथराव, चार पर रिपोर्ट

बरेली। बरेली जिले के कैंट के गांव लखौरा में बिजली की केबल टूटने पर दो समुदाय के लोग सामने आ गए और पथराव किया गया। इस मामले में के पक्ष के चार लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। शनिवार रात लखौरा गांव में रहने वाले अफसार, शाहरुख आदि लाल फाटक से एक वाहन में साउंड लेकर आ रहे थे। गांव में उनका वाहन बिजली की केबल में फंस गई और केबल टूट गई। इससे वहां विवाद हो गया और वीरपाल, मोरपाल आदि ने उन लोगों पर पथराव कर दिया। गांव में हंगामा होने पर लोगों ने विवाद को सांप्रदायिक रंग देना शुरू कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने गांव वालों को समझाकर शांत किया। देर रात इस मामले में अफसार की तहरीर पर दूसरे पक्ष के वीरपाल, मोरपाल, कृष्णपाल, राहुल आदि के खिलाफ जानलेवा हमला समेत अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है।

फर्जी क्लिनिक में गर्भपात के दौरान बिगड़ी किशोरी की तबीयत

जिला अस्पताल ले जाते वक्त हुई मौत

फतेहपुर। उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में एक निजी अस्पताल में गर्भवती किशोरी के गर्भपात के दौरान उसकी तबीयत बिगड़ गई। जिसके बाद उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उसकी मौत हो गई वहीं मामला तूल पकड़ते देख निजी अस्पताल का संचालक भाग गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

ये मामला कोतवाली क्षेत्र का है। शनिवार को एक किशोरी अपने बहनोई के साथ जीटी रोड के मानू का पुरवा स्थित एक निजी अस्पताल पहुंची। युवती यहां सीएचसी में तैनात आशा बहू की मदद से पहुंची। जानकारी के मुताबिक अवैध गर्भपपात के दौरान नाबालिग युवती की हालत बिगड़ गई। जिसके बाद उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। आनन-फानन में युवती को अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी सांसे थम गईं।

इस घटना की जानकारी होने के बाद खागा पुलिस मामले की तफ्तीस में जुट गई। इस बीच अवैध काम करने वाला अस्पताल संचालक मौके से फरार हो गया। विभागीय जिम्मेदारों की मिलीभगत से नौबस्ता रोड, जीटी रोड, पक्का तालाब समेत कई गांवों में अवैध अस्पतालों में गर्भपात किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक विभागीय जिम्मेदार भी इसमें शामिल हैं। सीएचसी प्रभारी डॉ. शिवशंकर यादव ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। दोष सिद्ध होने पर आशा बहू समेत अन्य आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

09 से 13 अक्टूबर तक होगा राष्ट्रीय डाक सप्ताह का आयोजन

जौनपुर। पूरे विश्व में हर साल 09 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय डाक दिवस मनाया जाता है। इस साल पोस्ट फॉर प्लेनेट थीम पर मनाये जा रहे डाक दिवस के मौके पर उत्तर प्रदेश के वाराणसी परिक्षेत्र में 09 से 13 अक्टूबर तक डाक सप्ताह का आसोजन होगा। वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्ट मास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने शनिवार को यह जानकारी देते हुए कहा कि डाक विभाग देश के सबसे पुराने विभागों में से एक है। यह देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक ऐसा संगठन है जो न केवल देश के भीतर बल्कि देश की सीमाओं से बाहर अन्य देशों तक पहुँचने में भी मदद करता है।

एसडीएम बोलीं, डॉक्टरों को मैनर सिखा दीजिए नहीं तो खिंचवा लूंगी

हरदोई। यूपी के हरदोई में सदर एसडीएम स्वाति शुक्ला के एक वायरल वीडियो को लेकर डॉक्टर गुस्से में हैं। इस वीडियो में एसडीएम फोन पर सीएमओ से डॉक्टरों को मैनर सिखाने की बात कहती नज़र आ रही हैं। साथ यह चेतावनी भी दे रही हैं कि अगली बार ऐसा किया तो खिंचवा कर थाने में डलवा देंगी। मिली जानकारी के अनुसार हरदोई के मेडिकल कॉलेज में शनिवार शाम एक लड़की को जहर

खाने के बाद भर्ती कराया गया था। लड़की का बयान लेने एसडीएम सदर स्वाति शुक्ला देर रात अस्पताल पहुंची थीं। वहां पर इमरजेंसी में तैनात इमरजेंसी मेडिकल ऑफिसर डॉ. चंद्रप्रकाश के व्यवहार से वह नाराज हो गईं। इस पर उन्होंने सीएमओ को फोन करके नाराजगी जताई। रविवार को सोशल मीडिया पर उनका सीएमओ को फोन करने का वीडियो वायरल हो गया। एसडीएम ने पूरे मामले में लड़की के उपचार के लिए डायरेक्शन देने की बात कहकर मामले से पल्ला झाड़ने का प्रयास किया वहीं, वायरल वीडियो को लेकर डॉक्टर गुस्से में हैं।

क्या बोलीं प्राचार्य

इस मामले में मेडिकल कॉलेज की प्राचार्या डॉ, वाणी गुप्ता का कहना है कि यह रात की घटना है। एक लड़की ने जहर खा लिया था। इसी समय वहां पर सदर एसडीएम पहुंची थीं। इसी बीच डॉ. चंद्रप्रकाश राउंड लेकर आए थे और अपनी कुर्सी पर बैठ गए थे। वह उस समय की परिस्थिति से वाकिफ नहीं थे।

नशे में धुत युवक ने हाथ की कोहनी मार की हत्या, ईंट से कुच दिया मुंह

एजेंसी

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में शराब के नशे में धुत एक शख्स ने युवक की जमकर पिटाई कर दी। ये घटना कैमरे में कैद हो गई। वहीं दबंग द्वारा युवक को पीटता देख उसे बचाने कोई नहीं आया। हालांकि काफी देर बाद एक युवक वहां आया और उसे बीच-बचाव करने का प्रयास किया। गंभीर रूप से घायल युवक को आनन-फानन में अस्तपाल में भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। ये मामला जिले के डिबाई कोतवाली क्षेत्र के घोसीपुरा गांव का है। शराब के नशे में डूबे युवक की दूसरे युवक से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। जिसके बाद दबंग बबलू ने फिल्मी स्टाइल में युवक के सीने पर कोहनी से मारने लगा। बबलू के मारने की वजह से सुरेश जमीन पर गिर पड़ा। जिसके बाद बबलू ईंट से मारने लगा। गंभीर रूप से घायल सुरेश को किसी तरह अस्पताल ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने बताया कि शराब के नशे में दोनों युवकों में झगड़ा हुआ था। दोनों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया। देखते ही देखते बबलू, सुरेश पर प्रहार करने लगा। जिससे उसकी मौत हो गई। मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश की जा रही है।

योगी 12 अक्टूबर को आएँगे अयोध्या दौरे पर

अयोध्या। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आगामी 12 अक्टूबर को एक दिन के अयोध्या दौरे पर आएँगे। जिला प्रशासन की ओर से रविवार को दी गई जानकारी के मुताबिक राधा कृष्ण टेंपल (अम्मा जी के मंदिर) में मुख्यमंत्री योगी रामानुजाचार्य की मूर्ति की स्थापना करेंगे। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी एक घंटे तक अम्मा जी के मंदिर में रहेंगे। ज्ञात हो कि हाल ही में योगी ने लता मंगेशकर चौक के उद्घाटन के समय अयोध्या में रामानुजाचार्य की मूर्ति स्थापित करने की घोषणा की थी।

जज बनकर महिलाओं के साथ होटल में बनाए शारीरिक संबंध, लाखों रुपए ठगे भी

कानपुर। जज बनकर महिलाओं के साथ ठगी करने वाले शातिर विष्णु शंकर गुप्ता को लखनऊ की हजरतगंज पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपित कानपुर के नवाबगंज का रहने वाला है। इस गिरफ्तारी के बाद नवाबगंज पुलिस भी उसकी कुंडली खंगालने में जुट गई है। पुलिस को यहां पर कोई मुकदमा अब तक उसके खिलाफ नहीं मिला है मगर जांच में यह जरूर पता चला है कि उसने दो विधवा महिलाओं का शारीरिक शोषण कानपुर के ही एक होटल में किया था। इंस्पेक्टर नवाबगंज प्रमोद कुमार पाण्डेय ने बताया कि आरोपित के खिलाफ यहां से किसी मुकदमे के बारे में जानकारी नहीं मिल सकी है। पुराने मुकदमों के बारे में पता किया जा रहा है। इंस्पेक्टर के मुताबिक अब तक की जांच में पता चला है कि आरोपित उन महिलाओं को टारगेट करता था जिनके पति बड़े सरकारी अधिकारी रहे हैं और उनकी आकस्मिक मौत के चलते उनकी पत्नियों को नौकरी मिली हो। उन्हें वह खुद को जज कहकर मैसेज करता था और उन्हें अपने जाल में फंसाता था। इसी तरह से बिजली विभाग में कार्यरत एक बड़े अधिकारी की मौत के बाद उनकी पत्नी को भी इसने ऐसे ही अपने जाल में फंसाया था और उनसे लाखों रुपए ठग लिए थे।

बम की फर्जी सूचना देने वाले को पुलिस ने पकड़ा

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शुक्रवार को शहर आगमन से थोड़ी देर पहले पुलिस कंट्रोल रूम को फोन के जरिये सूचना दी गई थी, जिसमे कहा गया था कि कुछ लोग इंदिरा भवन को बम से उड़ाने की बात कर रहे हैं। इस सूचना पर पुलिस ने पूरी तहकीकात की तो वहां पर कुछ नहीं मिला था। इसके बाद पुलिस ने उस नंबर को ट्रेस कर उस व्यक्ति तक पहुंची जिसने बम होने की सूचना दी थी। फर्जी सूचना देने वाले को सिविल लाइंस पुलिस ने शनिवार को हिरासत में ले लिया है। देर रात तक उससे पूछताछ जारी रही। प्रसून शर्मा राजरूपपुर का रहने वाला है। वह बीएएमएस डॉक्टर है। पिता भीकचंद शर्मा ने बताया कि 2017 में हुए सड़क हादसे में उसके सिर में गंभीर चोट आई थी। इसके बाद से उसकी मानसिक हालत ठीक नहीं है। पुलिस ने उससे पूछताछ की तो उसका कहना था कि उसने ऐसे ही सूचना दे दी। इंस्पेक्टर सिविल लाइंस वीरेंद्र सिंह यादव का कहना है कि उससे पूछताछ की गई है। उसके इलाज संबंधी कागजात आदि भी मंगवाये गए हैं, ताकि उसकी वास्तविकता की जांच की जा सके।

प्रेमी ने प्रेमिका की हत्याकर शव घर में दफनाया

पुलिस ने दो साल बाद जमीन खोदकर निकलवाया कंकाल, दो गिरफ्तार

फिरोजाबाद। यूपी के फिरोजाबाद जिले के सिरसागंज क्षेत्र में एक सनसनीखेज घटना सामने आई है। एक युवती का कंकाल दो साल बाद उसके प्रेमी के घर के अंदर की जमीन खोदकर निकाला गया है। पुलिस क्षेत्राधिकारी अनिवेश कुमार ने रविवार को बताया कि 21 नवंबर 2020 को लापता हुई 20 वर्षीय खुशबू को उसके प्रेमी गौरव ने जहर देकर मार डाला था और उसका शव अपने ही घर के कमरे में फर्श खोदकर दफना दिया था।

कुमार के मुताबिक, शनिवार को पुलिस ने गौरव को गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर युवती का कंकाल बरामद किया। उन्होंने बताया कि 20 नवंबर 2020 को सिरसागंज थाना क्षेत्र के कीठौथ गांव निवासी भीकम सिंह की बेटी खुशबू घर से गायब हो गई थी। सिंह ने इस मामले में गौरव के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था, जिसके बाद से गौरव भी लापता था। पुलिस गौरव और खुशबू को पिछले दो साल से तलाश रही थी।

कुमार के अनुसार, शनिवार दोपहर पुलिस ने गौरव को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में गौरव ने बताया है कि खुशबू ने उस पर शादी का दबाव बनाया था, इसीलिए उसने 21 नवंबर 2020 को जहर देकर उसकी हत्या कर दी और फिर शव को कमरे की फर्श के नीचे दफनाकर उसके ऊपर सामान रख दिया। हत्या के बाद वह परिवार सहित फरार हो गया। कुमार के मुताबिक, पुलिस ने गौरव की निशानदेही पर घर से खुशबू का कंकाल बरामद कर लिया है। उन्होंने बताया कि गौरव और उसके पिता मुन्ना लाल के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया गया है।

गोरखपुर : उफनाई राप्ती में नाव पलटी, दो की मौत; तैराकों ने पांच की बचाई जान

गोरखपुर। गोरखपुर में उफनाई राप्ती नदी में रविवार की सुबह एक नाव पलट गई। नाव पर कुल सात लोग सवार से जिनमें से दो की मौत हो गई। गांववालों के मुताबिक ये लोग चारा काटने के लिए जा रहे थे। इसी दौरान नदी में नाव का संतुलन बिगड़ गया और नाव पलट गई।

नाव पर सवार सातों लोग नदी में गिरकर डूबने लगे। उन्हें डूबता देख आसपास मौजूद गांव के तैराक युवकों ने नदी में छलांग लगा दी। तैराकों ने नदी में डूब रहे पांच लोगों को सुरक्षित निकाल लिया। जबकि 30 वर्षीय बलिराम सिंह और 24 वर्षीय बृजेश यादव की डूबने से मौत हो गई।

बृजेश यादव बीआरडी मेडिकल कॉलेज बरहज में बीए फर्स्ट इयर का छात्र था। इसी साल उसकी शादी तय हो गई थी। रोज उसके दादा और परिवार के अन्य सदस्य चारा लेने जाते थे लेकिन संयोग से रविवार को वह गया और दुर्घटना का शिकार हो गया। नाव दुर्घटना में मारे गए बलिराम यादव खेती-किसानी करते थे। वह चार भाइयों में सबसे छोटे थे।

ये लोग थे नाव पर सवार

नाव पर नेतवार पट्टी गांव के रविन्द्र यादव, राजेन्द्र यादव, मुकेश जायसवाल, मुकेश की मां दुर्गावती देवी और छोटा भाई 20 वर्षीय सोनू जायसवाल, 30 वर्षीय बलिराम सिंह और 24 वर्षीय बृजेश यादव सवार थे। इसमें बलिराम और बृजेश की मौत हो गई। पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

प्रयागराज के युवक ने गोरखपुर में किया सुसाइड

गोरखपुर। गोरखपुर में रविवार को युवक ने कैलाश होटल के कमरे में सुसाइड कर लिया। उसका शव होटल के कमरे में लटकता मिला। युवक लोन और कर्ज से परेशान था। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने होटल के कमरे से दो पेज का सुसाइड नोट भी बरामद किया है। जिसमें उसने लोन और कर्ज से परेशान होकर सुसाइड करने की बात लिख रखी थी। घटना गोरखनाथ इलाके के धर्मशाला बाजार की है। एसपी सिटी कृष्ण कुमार विश्नोई ने बताया, होटल के कमरे से एक सुसाइड नोट मिला है।

लोगों ने कालोनियों का नाम बदलकर रखा घिनौना नगर और नरक पुरी

कहा 14 साल से भटक रहे हैं

आगरा। आगरा में पिछले 14 सालों से दौरेठा क्षेत्र के विकास के लिए भटक रहे लोगों का पारा शनिवार को फिर से सातवें आसमान पर था। शुक्रवार रात से हुई बारिश में पूरा इलाका तलैया बन गया। आवागमन के रास्ते बंद होने से गुस्साए लोगों ने अफसरों और जनप्रतिनिधियों के खिलाफ नारेबाजी की। क्षेत्रीय लोगों ने कहना है कि भीमनगरी में 100 करोड़ से विकास कार्य कराए गए थे लेकिन दौरेठा का एक हिस्सा छोड़ दिया गया। ऐलान किया कि जल्द ही समस्या का समाधान नहीं हुआ तो अफसरों और जनप्रतिनिधियों का घेराव करेंगे।

गौरतलब है कि दौरेठा क्षेत्र में सड़क और नाले के निर्माण के लिए वहां के निवासी 2009 से भटक रहे हैं। नगर निगम, एडीए, विकास भवन के साथ विधायक, सांसदों के चक्कर काट रहे हैं। मामला पोर्टल के माध्यम से मुख्यमंत्री के दरबार तक भी पहुंच गया है। लोगों ने कालोनियों के नाम घिनौना नगर, नरक पुरी, दुर्गंधशील कॉलोनी और बदबू विहार रख दिया है। अपने घरों के बाहर मकान बिकाऊ के पोस्टर लगा दिए हैं। शुक्रवार को लोगों ने वहां प्रदर्शन भी किया था।

शहर के निचले इलाके बने ताल-तलैया

बारिश के चलते शहर में शनिवार को कई इलाकों में जलभराव हो गया। निचले इलाकों में से दिन भर पानी नहीं निकल सका। सुबह हुई बारिश की वजह से बिजलीघर, यमुना किनारा रोड, वीआईपी रोड, केदार नगर, शंकरगढ़ की पुलिया, आजमपाड़ा, आवास विकास कालोनी, शास्त्रीपुरम, कैलाशपुरी रोड, तोता का ताल, उखर्रा रोड आदि इलाकों में पानी भर गया। हालांकि दोपहर बाद तक पानी निकल गया था, लेकिन शाम को हुई बारिश ने हालात फिर से खराब हो गए। नालों के आसपास के इलाकों में फिर से पानी भर गया।

सीमा विवाद में फंस गया मामला

अधिकारियों ने मामले को सीमा विवाद में फंसा दिया है। 2008-09 में भीमनगरी के लिए 100 करोड़ रुपये से विकास कार्य हुए थे।

तब एडीए नाला और सड़क बन रहा था, लेकिन एक हिस्सा आयोजन तक नहीं बन पाया। जब लोगों ने एडीए में संपर्क किया तो उन्होंने कह दिया था कि वह हिस्सा एडीए की सीमा में नहीं आता है।

नगर निगम में गए तो वहां भी सीमा से बाहर होने का हवाला देकर काम नहीं किया। ग्रामीण विधानसभा के विधायकों के चक्कर काटे, लेकिन उन्होंने भी काम नहीं किया।

फतेहपुर में हिरासत में मौत, इंस्पेक्टर समेत तीन सस्पेंड

पांच दिन से थाने में पूछताछ कर रही थी पुलिस

फतेहपुर। यूपी के फतेहपुर में पुलिस हिरासत में एक युवक की मौत हो गई। युवक के परिवार ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए हैं। परिवारवालों के मुताबिक पुलिस ने युवक को 5 दिन पहले पकड़ा था। तबसे थाने पर रोककर उससे पूछताछ की जा रही थी। पूछताछ के दौरान लॉकप में युवक को थर्ड डिग्री दी गई जिसके चलते उसकी मौत हो गई। इस मामले में इंस्पेक्टर समेत तीन पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया गया है।

मामला फतेहपुर के राधानगर थाने का है। युवक की शनिवार रात पुलिस हिरासत में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। युवक की मौत से पुलिस कर्मियों में हड़कंप मच गया। एसपी ने मामले में कार्रवाई करते हुए इंस्पेक्टर सहित तीन पुलिसवालों को सस्पेंड किया। साथ ही मजिस्ट्रियल जांच कराने के आदेश दिए हैं।

क्यों पकड़ा था पुलिस ने?

सदर कोतवाली पुलिस ने ललौली थाना क्षेत्र के कीर्तिखेड़ा गांव निवासी सत्येंद्र सिंह के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज किया था। राधा नगर थाना पुलिस ने आरोपी को पांच दिन पहले पकड़ा था। तभी से उससे पूछतांछ कर रही थी। बताया जा रहा है कि युवक के पास से 14 एटीएम कार्ड भी बरामद हुए थे।

रविवार भोर युवक की हालत अचानक बिगड़ गई। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। थाने में युवक की मौत से महकमे में हड़कंप मच गया। युवक के परिजन पुलिस पर थर्ड डिग्री देकर प्रताड़ित करने का आरोप लगा रहे हैं।

इनके खिलाफ हुआ एक्शन

एसपी राजेश कुमार सिंह ने लापरवाही बरतने के आरोप में प्रभारी निरीक्षक सुनील सिंह, एसआई विकास सिंह और कांस्टेबल देवेंद्र सिंह को निलंबित कर दिया है। घटना की मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए हैं।

शार्ट न्यूज

रियल गर्ल्स, रियल स्टोरीज पर आधारित डव का नया अभियान

नयी दिल्ली। उपभोक्ता वस्तुये बनाने वाली कंपनी हिन्दुस्तान यूनीलीवर के ब्रांड डव ने रियल गर्ल्स रियल स्टोरीज पर आधारित नया अभियान शुरू किया है जिसमें लड़कियों को ब्यूटी रिपोर्ट कार्ड देने पर सवाल उठाये गये हैं। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि ब्रांड का यह अभियान सुंदरता पर आधारित उन फैसलों को उजागर कर रहा है जोकि यह समाज सलाह के तौर पर लड़कियों पर थोपता है। यह ग्राहकों के ऐसे ही पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाता है और सुंदर होने के असली मायने बताता है। सुंदरता को लेकर भारत की सनक पर डव ने देश को झकझोरने वाली मुहिम की पिछले साल शुरूआत की। उसने कहा कि किस तरह जीवनसाथी को ढूंढने की प्रक्रिया के दौरान सुंदरता को लेकर पूर्वाग्रहों को थोप दिया जाता है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे इस तरह की टिप्पणियां भावी दुल्हनों के आत्मविश्वास को हिला देती है। जब डव शादी के बंधन में इन चिंताओं और सामाजिक रूढ़िवादों को हतोत्साहित कर रहा था, तो ब्रांड ने सच्चाई के एक महत्वपूर्ण पक्ष को उजागर किया।

एंजल वन का ग्राहक आधार सितंबर 1.15 करोड़ के पार

नयी दिल्ली। फिनटेक कंपनी एंजल वन लिमिटेड ने सितंबर 2022 में 3.9 लाख ग्राहक जोड़े जिससे उसका ग्राहक आधार बढ़कर 1.15 करोड़ के पार पहुंच गया है। कंपनी ने आज यहां कहा कि वार्षिक आधार पर उसके ग्राहक आधार में 77.4 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। कंपनी का औसत दैनिक कारोबार सालाना आधार पर 116.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 13.74 ट्रिलियन रुपये तक पहुँच गया। एंजल वन ने मजबूत व्यावसायिक प्रदर्शन को जारी रखते हुए सितंबर 2022 में 9 करोड़ से अधिक ऑर्डर दर्ज किए, जो सालाना आधार पर 65.8 प्रतिशत अधिक है।

सिम्पोलो विट्रिफाइड ने उत्तर प्रदेश में अपनी उपस्थिति की मजबूत

नोएडा। सिरेमिक क्षेत्र की कंपनी सिम्पोलो विट्रिफाइड ने उत्तर प्रदेश में अपनी उपस्थिति को मजबूत बनाते हुये आज 90वां एक्सक्लुसिव स्टोर की शुरूआत की। कंपनी ने आज यहां बताया कि नोएडा में फ्रैंचाइजी मॉडल में पहले विशेष टाइल और सैनिटरीवेयर शोरूम का उद्घाटन किया गया है। शोरूम में सिम्पोलो के सबसे अधिक बिकने वाले उत्पाद जैसे ड्राई ग्रेनुला फर्स्ट क्लास के साथ पॉश सरफेस के साथ बाहरी अनुप्रयोगों के लिए रॉकडेक श्रृंखला, किचन टॉप, डबल चार्ज और ग्लेज़ेड विट्रिफाइड टाइलें, दीवार टाइलें आदि प्रदर्शित हैं। उसने कहा कि यह शोरूम हर क्लासी हाउस बिल्डर और आर्किटेक्ट की सभी टाइलिंग जरूरतों को पूरा करता है। इस मौके पर कंपनी के सीएमओ भारत अघरा ने कहा कि यह शोरूम टाइल खरीदारी को डिजाइन और दृश्य अनुभव में समृद्धता के एक अलग स्तर तक ले जाने का वादा करता है जो कुछ प्रीमियम ब्रांडों को नोएडा में प्रतिस्पर्धा करने वाली अपनी रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करेगा।

प्रत्यक्ष कर संग्रह अब तक 23.8 प्रतिशत बढ़ा

नयी दिल्ली। चालू वित्त वर्ष में कल तक सकल प्रत्यक्ष कर संग्रह 8.98 लाख करोड़ रुपये रहा है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के संग्रहित सकल कर की तुलना में 23.8 प्रतिशत अधिक है। केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने आज यहां बताया कि प्रत्यक्ष कर संग्रह, रिफंड के बाद शुद्ध संग्रह 7.45 लाख करोड़ रुपये रहा, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के शुद्ध संग्रह से 16.3 प्रतिशत अधिक है। यह संग्रह वित्त वर्ष 2022-23 के प्रत्यक्ष कर के कुल बजट अनुमान का 52.46 प्रतिशत है। जहां तक सकल राजस्व संग्रह के संदर्भ में कॉर्पोरेट आयकर (सीआईटी) और व्यक्तिगत आयकर (पीआईटी) की वृद्धि दर का संबंध है, सीआईटी के लिए वृद्धि दर 16.73 प्रतिशत रही है, जबकि पीआईटी (एसटीटी सहित) की वृद्धि दर 32.30 प्रतिशत दर्ज की गयी है। रिफंड के समायोजन के बाद, सीआईटी संग्रह में शुद्ध वृद्धि 16.29 प्रतिशत रही है और पीआईटी संग्रह में शुद्ध वृद्धि 17.35 प्रतिशत (केवल पीआईटी) / 16.25 प्रतिशत (एसटीटी सहित पीआईटी) है। 1 अप्रैल, 2022 से 8 अक्टूबर, 2022 की अवधि के दौरान 1.53 लाख करोड़ रुपये का रिफंड जारी किया गया है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान जारी किए गए रिफंड की तुलना में 81.0 प्रतिशत अधिक है।

सोना -चांदी में मजबूती

इंदौर। सप्ताहांत सोना तथा चांदी में मजबूती दर्ज की गई। इस दौरान सोना 750 रुपये व चांदी 1500 रुपये महंगी होकर बिकी। चांदी सिक्का 50 रुपये नग महंगा बिका। कारोबार की शुरुआत में सोना 51650 रुपये पर खुलने के बाद शनिवार के दिन 52400 रुपये प्रति दस ग्राम होकर थमा। चांदी में व्यापार की शुरुआत 58000 रुपये पर हुई वहीं शनिवार के दिन 59500 रुपये बिकी। कामकाज में सोना ऊंचे में 52700 नीचे में 52300 रुपये प्रति 10 ग्राम बिका। व्यापार में चांदी ऊपर में 60200 तथा नीचे 59400 रुपये प्रति किलोग्राम बिकी। चांदी सिक्का पूछपरख से मजबूत बताया गया। विदेशी बाजार में सोना 1695 डॉलर तथा चांदी 2015 सेन्ट प्रति औंस बिकी।

मूंगफली तेल, सोयाबीन रिफाइंड में उछाल, तिलहन मजबूत

इंदौर। सप्ताहांत खाद्य तेलों में खरीदी से भाव उछाल लिए रहे। कारोबार में सोयाबीन रिफाइंड 110 रुपये प्रति 10 किलोग्राम महंगा बिका। तिलहनों में भाव ऊंचे बोले गए। कपास्या खली में मजबूती दर्ज की गई। कारोबार की शुरूआत में मूंगफली तेल 1630 से 1640 रुपये प्रति किलोग्राम खुला जो शनिवार को 1680 से 1700 रुपये प्रति क्विंटल के स्तर पर बंद हुआ। सोयाबीन रिफाइंड 1120 से 1125 रुपये पर खुलकर 1235 से 1240 रुपये बिका। पाम तेल 920 से 925 रुपये खुलकर 995 से 1000 होकर बंद हुआ। तिलहन जिन्सों में भाव मजबूत बताए गए। पशु आहार कपास्या खली में सुधार दर्ज किया गया।

चना, तुअर, मूंग, मसूर महंगी, दालों में मिश्रित रंगत

इंदौर। स्थानीय संयोगितागंज अनाज मंडी में मांग के साथ सप्ताहांत दलहन जिन्सों में चना, तुअर, मूंग, मसूर के भाव तेजी लिए बताए गए। सप्ताहांत दालों में मिश्रित रंगत रही। चावल में उठाव सुधार लिए बताया गया। सप्ताहांत चना कांटा 4700 से 4750 रुपये खुलने के बाद 4825 से 4875 रुपये होकर बंद हुआ। मूंग 6700 से 7000 रुपये पर खुलने के बाद नीचे में 5700 रुपये बिकी। हालांकि सप्ताहांत इसमें सौदे 6800 से 7100 रुपये प्रति क्विंटल पर हुए। कारोबार में तुअर 6700 से 7800 रुपये रुपये खुलकर 6700 से 7800 रुपये बिकी। उड़द 7300 से 7500 रुपये खुलकर इसी स्तर पर थमा। मसूर 6175 से 6200 रुपये के स्तर पर खुलने के बाद 6225 से 6250 रुपये होकर प्रति क्विंटल बिकी। दालों में मांग रही। सप्ताहांत तुअर, मूंग दाल, मूंग मोगर, उड़द मोगर के साथ मसूर दाल में भाव कम ज्यादा हुए।

पेट्रोल-डीजल की कीमतें यथावत

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के 90 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंचने के बीच घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज भी स्थिर रहे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सप्ताहांत पर लंदन ब्रेंट क्रूड आज 97.92 डॉलर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड 5.37 प्रतिशत के उछाल के साथ 93.20 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। घरेलू स्तर पर तेल विपणन कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में आज भी कोई बदलाव नहीं हुआ। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर है। देश में चार महीने से अधिक समय से ईंधन की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल के दाम 106.31 रुपये प्रति लीटर और और डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है। पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं।

कंपनियों के नतीजे और वैश्विक रूख से तय होगी बाजार की चाल

मुंबई। घरेलू स्तर पर बीते सप्ताह शेयर बाजार में रही तेजी के बीच वैश्विक स्तर पर हो रहे घटनाक्रमों और घरेलू स्तर पर कंपनियों के दूसरी तिमाही के नतीजों, खुदरा और थोक महंगाई के आंकड़ो से अगले सप्ताह बाजार की चाल तय होगी।

बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स समीक्षाधीन अवधि में 764.92 अंक बढ़कर 58191.29 अंक पर और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 220.30 अंकों की बढ़त लेकर 17314.65 अंक पर रहा।

इस दौरान दिग्गज कंपनियों की तुलना में छोटी और मझौली कंपनियों में अधिक लिवाली रही। बीएसई का मिडकैप समीक्षाधीन अवधि में 530.86 अंक उछलकर 25384.80 अंक पर और स्मॉलकैप 730.02 अंकों की उछला लेकर 29182.93 अंक पर रहा।

अगले सप्ताह से कंपनियों के तिमाही परिणाम आने शुरू हो रहें और इसका बाजार पर असर दिख सकता है। जिन कंपनियों के चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के परिणाम आने वाले उनमें टीसीएस, इंफोसिस, एचसीएल टेक्नॉलाजीज, विप्रो जैसी प्रमुख आईटी कंपनियां शामिल है। बाजार ऑटो के परिणाम भी अगले सप्ताह आना है।

इसके साथ ही आलोच्य सप्ताह में खुदरा महंगाई , थोक महंगाई के आंकड़े भी आने हैं और इसका असर भी बाजार पर होता है।

विश्लेषकों का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने वैश्विक स्तर पर मंदी की आशंका जतायी है जिसका असर वैश्विक बाजार पर दिख रहा है

और उससे भारतीय बाजार भी अप्रभावित नहीं रह सकता है। इसलिए निवेशकों विशेषकर छोटे और खुदरा निवेशकों को सतर्कता से निवेश करने की जरूरत है क्योंकि ऐसी स्थिति में विदेश निवेशक अक्सर बिकवाली करते हैं जिससे छोटे निवेशकों को बड़ा नुकसान हो सकता है।

बीते सप्ताह पांच में से चार दिन बाजार में कारोबार हुआ और बुधवार को विजयादशमी के मौके पर अवकाश रहा जिसके कारण कारोबार नहीं हुआ। सप्ताह के पहले दिन सोमवार को वैश्विक स्तर से मिले नकारात्मक संकेतों के साथ ही घरेलू स्तर पर हुयी चौतरफा बिकवाली के कारण शेयर बाजार में फिर से तेजी बिकवाली हुयी जिससे बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 638.11 अंक टूटकर 56788.81 अंक पर और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 207 अंक उतरकर 16887.35 अंक पर रहा।

हालांकि सोमवार की तेजी गिरावट के बीच मंगलवार को वैश्विक स्तर से मिले सकरात्मक संकेतों के बल पर घरेलू स्तर पर हुयी चौतरफा लिवाली के बल पर सेंसेक्स और निफ्टी में सवा फीसदी से अधिक तेजी दर्ज की गयी। सेंसेक्स 1276.66 अंक उछलकर 58 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर को पार करते हुये 58065.47 अंक पर और एनएसई का निफ्टी 386.95 अंकों की बढ़त लेकर 17 हजार अंक के पार 17274.30 अंक पर पहुंच गया। बुधवार को अवकाश रहा और गुरूवार को घरेलू स्तर पर धातु सहित अन्य प्रमुख समूहों में हुयी लिवाली के बल पर लगातार दूसरे दिन तेजी बनी रही। सेंसेक्स 156.63 अंकों की बढ़त लेकर 58222.10 अंक पर और एनएसई का निफ्टी 57.50 अंक बढ़कर 17331.80 अंक पर रहा।

सप्ताहांत पर शुक्रवार को वैश्विक स्तर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही घरेलू स्तर पर एनर्जी, तेल और आईटी जैसे समूहों में हुयी बिकवाली के कारण आज शेयर बाजार दबाव में दिखा जिससे सेंसेक्स और निफ्टी लाल निशान में बंद हुआ। सेंसेक्स 30.81 अंक टूटकर 58191 ।29 अंक पर और एनएसई का निफ्टी 17.15 अंक उतरकर 17314.65 अंक पर रहा।

विदेशी मुद्रा भंडार 4.85 अरब डॉलर गिरकर 532.66 अरब डॉलर पर

मुंबई। देश के विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट का रूख बना हुआ और गत 30सितंबर को समाप्त सप्ताह में यह लागतार नौवें सप्ताह गिरावट में रहा। आलोच्य अवधि में यह 4.85 अबर डॉलर की गिरावट लेकर 532.66 अबर डॉलर पर आ गया।

इससे पिछले सप्ताह में यह 8.13 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 537.51 अरब डॉलर पर रहा था। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर), स्वर्ण और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के आरक्षित निधि में कमी आने से देश का विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट का रूख बना हुआ है।

केन्द्रीस बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 30

सितंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 4.40 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 472.80 अरब डॉलर रह गयी।

इस अवधि में स्वर्ण भंडार में 28.1 करोड़ डॉलर की कमी आई और यह घटकर 37.60 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं, आलोच्य सप्ताह एसडीआर 16.7 करोड़ डॉलर कम होकर 17.42 अरब डॉलर रह गया। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि 4.82 अरब डॉलर पर लगभग टिकी रही।

चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन 24 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। कॉरपोरेट और व्यक्तिगत आय पर कुल टैक्स कलेक्शन चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से अबतक करीब 24 प्रतिशत बढ़ा है। कर विभाग ने एक बयान में कहा कि एक अप्रैल से आठ अक्टूबर के दौरान कॉरपोरेट आय पर कर संग्रह में 16.74 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, वहीं व्यक्तिगत आयकर संग्रह में 32.30 प्रतिशत का उछाल आया है। आंकड़ों के अनुसार, एक अप्रैल से आठ अक्टूबर, 2022 के दौरान प्रत्यक्ष कर संग्रह 8.98 लाख करोड़ रुपये रहा है, जो इससे पिछले साल की समान अवधि के संग्रह से 23.8 प्रतिशत अधिक है। प्रत्यक्ष कर में कॉरपोरेट और व्यक्तिगत आयकर आता है। बयान में कहा गया है कि रिफंड को समायोजित करने के बाद प्रत्यक्ष कर संग्रह 7.45 लाख करोड़ रुपये रहा है।

आईडीबीआई बैंक के लिए बोली लगाने वाली कंपनियों को पहले चरण में सुरक्षा मंजूरी लेनी होगी

नई दिल्ली। सरकार ने अपनी तरह के पहले कदम के रूप में आईडीबीआई बैंक में हिस्सेदारी खरीद के लिए बोलियां लगाने वाले संस्थानों के लिए पहले चरण में गृह मंत्रालय से सुरक्षा मंजूरी लेना अनिवार्य कर दिया है। अभी तक केंद्रीय नियंत्रण वाले सार्वजनिक उपक्रमों (सीपीएसई) के निजीकरण की प्रक्रिया में शामिल होने वाली बोलीदाता कंपनियों के लिए दूसरे चरण में सुरक्षा मंजूरी लेने की बाध्यता होती थी। इस अनिवार्यता के बाद रुचि पत्र (ईओआई) दायर करने के दौर में पात्र पाई जाने वाली कंपनियों को वित्तीय बोलियां लगाने के समय गृह मंत्रालय से सुरक्षा मंजूरी लेनी होगी। सार्वजनिक परिसंपत्तियों के विनिवेश का नियमन करने वाले निवेश एवं लोक संपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) ने यह जानकारी दी। दीपम ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक से उचित एवं उपयुक्त आकलन पाने वाले और गृह मंत्रालय से सुरक्षा मंजूरी पाने वाले बोलीकर्ता ही इस हिस्सेदारी खरीद के लिए पात्र रुचि पक्ष (क्यूआईपी) के रूप में अधिसूचित किए जाएंगे। सरकार इस बोली प्रक्रिया की मदद से आईडीबीआई बैंक में अपनी और एलआईसी के पास की कुल 60.72 प्रतिशत हिस्सेदारी की बिक्री करने की तैयारी में है। दीपम ने पिछले हफ्ते इसके लिए संभावित बोलीकर्ताओं से ईओआई आमंत्रित किए थे। इच्छुक कंपनियां 16 दिसंबर तक बोली लगा सकती हैं।

शक्कर मजबूत, खोपरा गोला-खोपरा बूरा में नरमी

इंदौर। सियागंज किराना बाजार में सप्ताहांत ग्राहकी ऊपर नीचे होती रही। शक्कर में उठाव बढ़ा रहा इससे महंगी बिकी। खोपरा गोला तथा बूरा मांग कमी से सस्ता बिका। हल्दी में लिवाली साधारण रही। साबूदाना में पूछपरख बताई गई। स्थानीय किराना बाजार में मंगलवार को शक्कर 3680 से 3720 रुपये प्रति क्विंटल खुलने के शनिवार को 3700 से 3740 रुपये बोली गई। शक्कर की दैनिक आवक 07 से 08 गाड़ी की रही। खोपरा गोला 158 से 180 रुपये प्रति किलो के स्तर पर खुलने के बाद शनिवार को 158 से 178 रुपये होकर बिका। हल्दी में मांग साधारण बताई गई। इसमें 100 से 162 रुपये की रंगत पर सौदे हुए।

रिजर्व बैंक प्रायोगिक तौर पर शुरू करेगी डिजिटल मुद्रा

मुंबई। भारतीय रिज़र्व बैंक शीघ्र ही विशिष्ट उपयोग के मामलों के लिए डिजिटल रुपये (ई रुपये) की प्रायोगिक रूप से शुरुआत करेगा।

रिज़र्व बैंक ने भारत के लिए केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी) पर एक अवधारणा नोट जारी किया है जिसमें कहा गया है कि जैसे-जैसे इस तरह की प्रायोगिक शुरुआत की सीमा और दायरा बढ़ता है, रिज़र्व बैंक

समय-समय पर ई रुपये की विशेषताओं और लाभों के बारे में सूचित करेगा। इस अवधारणा नोट को जारी करने का उद्देश्य सामान्य रूप से सीबीडीसी और विशेष रूप से डिजिटल रुपये (ईरुपये) की योजनाबद्ध विशेषताओं के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना है। यह भारत में सीबीडीसी जारी करने के उद्देश्यों, विकल्पों, लाभों और जोखिमों की व्याख्या करता है। यह नोट सीबीडीसी की शुरूआत के प्रति रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण को दर्शाने का भी प्रयास करता है। अवधारणा नोट में प्रौद्योगिकी और डिजाइन विकल्प, डिजिटल रुपये के संभावित उपयोग, जारी करने का तंत्र आदि जैसे प्रमुख विषयों पर भी चर्चा की गई है। यह बैंकिंग प्रणाली, मौद्रिक नीति, वित्तीय स्थिरता पर सीबीडीसी की शुरूआत के तात्पर्य की जांच करता है और गोपनीयता के मुद्दों का विश्लेषण करता है।

एक ही झटके में एलन मस्क के 85,000 करोड़ तो अडानी के 17,000 करोड़ हुए स्वाहा

एजेंसी

दुनिया के सबसे अमीर शख्स एलन मस्क और चौथे सबसे अमीर शख्स गौतम अडानी की संपत्ति एक ही दिन में 12.41 बिलियन डॉलर कम हो गई। इनकी संपत्ति में ये गिरावट टेस्ला और अडनी ग्रुप की कंपनियों के शेयरों में गिरावट के कारण आई है।

दोनों अरबपतियों की नेटवर्थ घटी

ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स के आंकड़ों के मुताबिक, दुनिया के टॉप-10 अमीरों में शामिल भारतीय उद्योगपति गौतम अडानी की नेटवर्थ में एक दिन

में इस दौरान 2.11 अरब डॉलर (करीब 17 हजार करोड़ रुपये) की कमी आई है। वहीं, एलन मस्क की संपत्ति एक दिन में 10.3 अरब डॉलर (करीब 85 हजार करोड़ रुपये) कम हो गई। इसके अलावा दुनिया के दूसरे सबसे अमीर अमेज़ॅन के संस्थापक जेफ बेजोस को 5.92 बिलियन का नुकसान हुआ, जबकि लुई विटन के बॉस बर्नार्ड अरनॉल्ट ने अपनी संपत्ति में 4.85 बिलियन की गिरावट देखी गई।

अंबानी दुनिया के 10वें सबसे अमीर आदमी

एशिया के सबसे रईस व्यक्ति अडानी के अलावा रिलायंस के चेयरमैन मुकेश अंबानी भी टॉप-10 लिस्ट में शामिल होने वाले दूसरे भारतीय हैं। पिछले 24 घंटे में अंबानी की संपत्ति में 93.7 मिलियन डॉलर का नुकसान हुआ है। 83.6 बिलियन डॉलर नेटवर्थ के साथ मुकेश अंबानी दुनिया के 10वें सबसे अमीर आदमी हैं।

अडानी ग्रुप के लिए खुशखबरी, 20,000 करोड़ रुपये जुटाने की मिली मंजूरी

नई दिल्ली। अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड ने शनिवार को कहा कि उसकी असाधारण आम बैठक में रखे गए सभी प्रस्तावों को शेयरधारकों की मंजूरी मिल गई है। कंपनी ने शेयर बाजारों को यह जानकारी दी। कंपनी ने बताया कि ईजीएम में अडानी समूह की कंपनी हार्मोनिया ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट लिमिटेड को तरजीही आधार पर सिक्योरिटी जारी करके 20,000 करोड़ रुपये जुटाने के एक विशेष प्रस्ताव को भी पारित किया। इस प्रस्ताव के पक्ष में 91.37 प्रतिशत शेयरधारकों के मत पड़े।

इसके अलावा अडानी समूह के चेयरमैन गौतम अडानी , उनके बेटे करण अडानीऔर दो निदेशकों तथा चार स्वतंत्र निदेशकों को अंबुजा सीमेंट्स के निदेशक मंडल में नियुक्त करने संबंधी प्रस्ताव को भी शेयरधारकों ने मंजूर दी। ईजीएम में गौतम अडानी मौजूद नहीं थे और उनकी जगह बैठक की अध्यक्षता उनके बेटे करण अडानी ने की। इस हफ्ते की शुरुआत में संस्थागत निवेशक परामर्श कंपनी आईआईएएने शेयरधारकों को 20,000 करोड़ रुपये जुटाने के प्रस्ताव के खिलाफ मत देने की सलाह दी थी। ईजीएम में 12 प्रस्तावों को मंजूरी मिली। अडानी समूह ने पिछले महीने अंबुजा सीमेंट्स और एसीसी सीमेंट का अधिग्रहण सौदा पूरा हो जाने की घोषणा की थी।

करीब 53,800 करोड़ रुपये के लेनदेन वाले इस सौदे के तहत इन दोनों सीमेंट उत्पादक कंपनियों में स्विस कंपनी होल्सिम की हिस्सेदारी को अडानी समूह ने ले लिया है।

दिवाली से पहले सब्जियों ने बिगाड़ा आम-आदमी का बजट

एजेंसी

नई दिल्ली। देश में इस समय त्योहारों का सीजन चल रहा है। पहले दशहरा और अब लोग दिवाली , छठ पूजा की तैयारियों में जुट गए हैं। लेकिन त्योहारों के इस सीजन में सब्जियों ने आम-आदमी का बजट बिगाड़ कर रख दिया है। टमाटर की कीमतें 50 रुपये प्रति किलो को पार कर गई हैं। तो वहीं, एक किलो बैगन 80 रुपये में बिक रहा है।

नोएडा के सफल स्टोर में आलू 18 से 22 रुपये प्रति किलोग्राम, फूल गोभी 98 रुपये प्रति किलोग्राम, बैगन 45 रुपये प्रति किलोग्राम और टमाटर 50 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से बिक रहा है।

वहीं, खुदरा विक्रेता नोएडा में आलू 25 से 30 रुपये, फूलगोभी 100 रुपये, लौकी 80 से 90 रुपये, बैगन 80 रुपये प्रति किलोग्राम में बेच रहे हैं। खुदरा बाजार में एक किलो टमाटर 54 रुपये

में बिक रहा है। कीमतों में हो रहे इजाफे की बड़ी वजह बारिश है। हाल के कुछ दिनों में उत्तर भारत में जमकर बारिश हुई है। इस वजह से मंडियों की सप्लाई चेन प्रभावित हुई है। मांग के हिसाब से आपूर्ति नहीं हो पा रही है। इसके अलावा माल ढुआई में लगी गाड़ियों ने किराया बढ़ा दिया है। जिसका असर भी साफ तौर पर देखा जा सकता है।

आइए डालते हैं एक नजर कंज्यूमर अफयेर्स डिपॉर्टमेंट द्वारा जारी किए गए आंकड़ों पर। बता दें, नीचे दिए गए दाम देश भर की औसत खुदरा कीमते हैं।

स्मॉल कैप कंपनी बाजार के मुकाबले सस्ते शेयर खरीदने का दे रही है मौका, चेक करें डीटेल्स

एजेंसी

नई दिल्ली। स्मॉल कैप कंपनी हजूर मल्टी प्रोजेक्ट्स लिमिटेड बाजार से कम दाम में बेचने जा रही है। शेयर बाजार की शब्दों में कहा जाए तो राइट्स इश्यू के लिए बोर्ड की सहमति मिल गई है। बता दें, यह राइट्स इश्यू 45 करोड़ रुपये का है। आइए डीटेल्स में जानते हैं इस राइट्स इश्यू के विषय में -

शुक्रवार को कंपनी ने रेगुलेटरी को दी जानकारी में बताया,7 अक्टूबर 2022 को बोर्ड के सदस्यों की कंपनी के ऑफिस में एक मीटिंग हुई थी। इस मीटिंग में बोर्ड के सदस्यों ने राइट्स इश्यू जारी करने के लिए सहमति प्रकट की है। इश्यू प्राइस, रिकॉर्ड डेट, अमाउंट से जुड़े फैसले बोर्ड के सदस्य आने वाले समय में लेंगे। बता दें, हजूर मल्टी प्रोजेक्ट्स लिमिटेड का मार्केट कैप 82.82

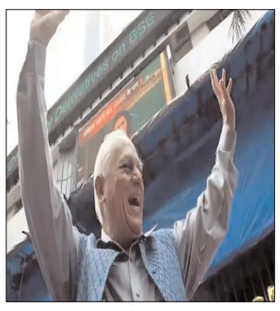

करोड़ रुपये का है।

कैसा है कंपनी के शेयरों का प्रदर्शन?

शुक्रवार को कंपनी के शेयर का भाव 1.23 प्रतिशत बढ़कर 82.50 रुपये के लेवल पर पहुंच गया था। कंपनी शेयर मार्केट में 5 जुलाई 2002 को लिस्ट हुई थी। तब से अबतक कंपनी के शेयरों की कीमतों में 169.34 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। 13 अक्टूबर 2017 को कंपनी के एक शेयर की कीमत 1.30 रुपये थी। पिछले 5 साल के दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में 6246.15 प्रतिशत की उछाल देखने को मिली है। बीते 3 साल की बात करें तो कंपनी के शेयरों की कीमतों में इस दौरान 4845.45 प्रतिशत की तेजी देखी गई है।

3 स्टॉक पर 2 शेयर बोनस दे रही है कंपनी, फटाफट चेक करें रिकॉर्ड डेट

11 अक्टूबर 2021 को हजूर मल्टी प्रोजेक्ट्स लिमिटेड के एक शेयर की कीमत 20.80 रुपये थी। यानी बीते एक साल के दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में 310 प्रतिशत की उछाल देखने को मिली है। साल 2022 में कंपनी के शेयरों ने अपने पोजीशनल निवेशकों को अबतक 206 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। बीते 6 महीने की बात करें तो कंपनी के एक शेयर का भाव 234.01 प्रतिशत तक बढ़ गया है। हालांकि, पिछले एक महीने के दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में 6.30 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। अच्छी बात यह है कि शेयर मार्केट में इस गिरावट के बाद कंपनी रिकवरी मोड पर है। 5 कारोबारी सत्रों में कंपनी के शेयरों में 22.95 प्रतिशत की उछाल देखने को मिली है।

क्या होता है राइट्स इश्यू?

कंपनी अपने मौजूदा शेयर धारकों को एक मौका देती है कि वो कंपनी के शेयर दोबारा खरीद सकें। लेकिन आप सोच रहे है होंगे कि इसमें नया क्या है ? नई बात यह है कि राइट्स इश्यू के वक्त कंपनी के मौजूदा शेयरधारक मार्केट प्राइस से कम दाम पर कंपनी के शेयर खरीद सकते हैं।

शार्ट न्यूज

सुब्रतो कप : शूटआउट में मेघालय को हराकर सेमीफाइनल में नागालैंड

नयी दिल्ली। पिलग्रिम हायर सेकंड्री स्कूल (नागालैंड) ने रविवार को रोमांचक मुकाबले में एंथनी हायर सेकंड्री स्कूल (मेघालय) को हराकर सुब्रतो कप अंडर-17 जूनियर बॉयज़ अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई। नागालैंड ने पेनल्टी शूटआउट तक गये क्वार्टरफाइनल मैच में मेघालय को 2-2(5-4) से हराया। मेघालय के ब्लानंग शनगैन (5वां मिनट) और नागालैंड के टॉन्गटिनलेन (65वां मिनट) के गोलों की बदौलत दोनों टीमें निर्धारित समय तक 1-1 से बराबर थीं। अतिरिक्त समय में जे यरवा ने छठे मिनट में मेघालय को बढ़त दिलाई लेकिन शोटोक ने 16वें मिनट में गोल करके नागालैंड को मैच में जिन्दा रखा। शूटआउट में नागालैंड ने अपनी प्रत्येक पेनल्टी को गोल में तब्दील किया जबकि मेघालय सिर्फ चार ही गोल कर सकी। दिन के अन्य मुकाबलों में सीटी हायर सेकंड्री स्कूल (मणिपुर) ने हॉलावंग हाई स्कूल (मिज़ोरम) को 4-1 से हराया, जबकि 10+2 ज़िला स्कूल (झारखंड) ने त्रिपुरा स्पोर्ट्स स्कूल (त्रिपुरा) को 1-0 से परास्त किया। राजकीय मॉडल उच्च माध्यमिक विद्यालय (चंडीगढ़) ने सेमीफाइनल की आखिरी सीट हासिल करने के लिये एमआईसी ईएमएचएसएस (केरल) को 3-1 से मात दी। टूर्नामेंट के सेमीफाइनल मुकाबले मंगलवार, 11 अक्टूबर को खेले जायेंगे।

वर्स्टापेन ने लगातार दूसरा फॉर्मूला वन विश्व खिताब जीता

सुजुका। रेड बुल के मैक्स वर्स्टापेन ने अपने करियर की दूसरी फॉर्मूला वन विश्व चैंपियनशिप जीतते हुए रविवार को जापान ग्रां प्री में पहला स्थान हासिल किया। वर्स्टापेन ने सबसे पहले फिनिश लाइन करके जापान ग्रां प्री का खिताब जीता, जबकि दूसरे स्थान पर रेस समाप्त करने वाले फरारी के चार्ल्स लेक्लर्स पांच सेकेंड की पेनल्टी के बाद तीसरे स्थान पर रहे। लेक्लर्स पर लगी पेनल्टी के कारण वर्स्टापेन के हमवतन सर्जियो पेरेज़ को दूसरा स्थान हासिल हुआ। वर्स्टापेन ने पूरी रेस के दौरान अपना दबदबा बनाये रखा। बारिश के कारण कुछ कारों के बीच टक्कर होने के बाद रेस को रोक दिया गया। दो घंटे के विलंब के बाद रेस पुन: शुरू हुई और वर्स्टापेन ने चार लैप पहले ही खिताब अपनी झोली में डाल लिया। वर्स्टापेन को इस रेस के लिये पूरे अंक दिये गये। एफआईए के नियमों के अनुसार, जब एक दौड़ को अनुच्छेद 57 के अनुसार निलंबित कर दिया जाता है, और फिर से शुरू नहीं किया जा सकता तो प्रतियोगी के अंकों में कटौती की जाती है।

भारत के लिए एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेलने वाले शाहबाज बने 247वें खिलाड़ी

रांची। रांची के जेएससीए स्टेडियम में भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच रविवार को खेले जा रहे एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच में पदार्पण करने वाले ऑलराउंडर शाहबाज अहमद भारत के लिये एकदिवसीय क्रिकेट खेलने वाले 247वें खिलाड़ी बने। एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच में भारत की तरफ से खेलनेवाले पहले खिलाड़ी आबिद अली हैं। आबिद अली ने 1974 में भारत और इंग्लैंड के बीच लीड्स में खेले गये एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच में यह श्रेय हासिल किया था। हरियाणा के मेवात के रहनेवाले शाहबाज़ 12 दिसम्बर 1994 को पैदा हुए। शाहबाज ने अपना पहला प्रथम श्रेणी मैच हैदराबाद के खिलाफ बंगाल की तरफ से रणजी ट्रॉफी में खेला था। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) की ओर से खेलने वाले शाहबाज बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज हैं जो बल्लेबाजी भी कर सकते हैं। इंग्लैंड के बेन स्टोक्स को अपना आदर्श मानने वाले शाहबाज बंगाल के स्टोक्स बनने की चाहत रखते हैं। मानव रचना यूनिवर्सिटी से सिविल इंजीनियरिंग करने वाले शाहबाज का जब चयन हरियाणा टीम में नहीं हुआ तब उन्होंने बंगाल की तरफ रुख किया।

न्यूज़ीलैंड ने बंगलादेश को आठ विकेट से हराया

क्राइस्टचर्च। न्यूजीलैंड ने माइकल ब्रेसवेल (14/2) की शानदार गेंदबाजी के बाद डेवन कॉनवे (70 नाबाद) के अर्द्धशतक की बदौलत बंगलादेश को त्रिकोणीय टी20 शृंखला में रविवार को आठ विकेट से मात दी। बंगलादेश ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में आठ विकेट के नुकसान पर 137 रन बनाये। न्यूजीलैंड ने 138 रन का लक्ष्य 13 गेंदें रहते हुए हासिल कर लिया। न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन ने टॉस जीतकर बंगलादेश को पहले बल्लेबाजी के लिये बुलाया। मेहदी हसन मिराज़ का विकेट गिरने के बाद नजमुल हुसैन शंटो (33) और लिटन दास (15) बंगलादेश की पारी को आगे बढ़ा रहे थे, लेकिन दोनों बल्लेबाजों के आउट होते ही विकेटों की झड़ी लग गयी। ब्रेसवेल ने रनों पर लगाम लगाते हुए लिटन और यासिर अली को आउट किया, जबकि ईश सोढ़ी ने शंटो और मोसद्देक हुसैन का विकेट गिराया। ट्रेंट बोल्ट और टिम साउदी ने भी दो-दो विकेट अपने नाम किये। बंगलादेश ने 78 रन पर अपने पांच विकेट गंवा दिये थे, लेकिन अंत में विकेटकीपर नूरुल हसन ने 12 गेंदों पर एक चौके और दो छक्कों के साथ 25 रन की पारी खेलकर टीम को 20 ओवर में 137 रन के सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। न्यूजीलैंड ने सलामी बल्लेबाज फिन ऐलन (16) का विकेट जल्दी गिरने के बावजूद 138 रन का छोटा लक्ष्य आसानी से हासिल कर लिया। कॉनवे ने विलियमसन के साथ दूसरे विकेट के लिये 85 रन की साझेदारी की, जिसने टीम को लक्ष्य के करीब पहुंचा दिया।

दुनिया को महिला फुटबॉल में अपनी क्षमता दिखाना चाहते हैं : डेनर्बी

भुवनेश्वर। भारतीय अंडर-17 महिला फुटबॉल टीम के कोच थॉमस डेनर्बी ने फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप 2022 से पहले रविवार को कहा कि भारत के पास दुनिया के सामने महिला फुटबॉल में अपनी क्षमता दिखाने का मौका है। डेनर्बी ने कहा, अब बात सिर्फ नतीजों की नहीं है। हम यह दिखाना चाहते हैं कि भारतीय लड़कियां फुटबॉल खेल सकती हैं। हमने अपने ग्रुप के अंदर लक्ष्य बनाये हैं, और हम उनके लिये लड़ने को तैयार हैं। हम अमेरिका, ब्राज़ील और मोरक्को के खिलाफ गोल करके अंक हासिल करने के लिये तत्पर हैं। फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप में भारत अपने अभियान की शुरुआत अमेरिका के खिलाफ मंगलवार, 11 अक्टूबर को करेगा। डेनर्बी ने कहा, हम भारतीय प्रशंसकों को दिखा देंगे कि हमारे पास एक अच्छी टीम है। भारत आने वाले कुछ सालों में एक सफल महिला टीम तैयार कर सकता है। उम्मीद है कि हम लड़कियों को फुटबॉल खेलना शुरू करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

गढ़वाल ने दूसरा स्थान सुनिश्चित किया

नयी दिल्ली। गढ़वाल एफसी ने रविवार को ग्रोइंग स्टार को 6-0 से हराकर दिल्ली महिला प्रीमियर लीग में दूसरा स्थान पक्का कर लिया। चैंपियन बन चुकी हॉप्स एफसी ने दिन के पहले मैच में जगुआर को 28-0 से रौंद दिया। गढ़वाल ने लगातार बारिश के चलते नेहरू स्टेडियम पर खेले गए एकतरफा मुकाबले में मोनिशा सिंह और फ्रॉगरेंसी रीवान के दो-दो गोलों से आसान जीत दर्ज की। रिबाई खरसीग और सनफिदा ने एक-एक गोल जमाया। हॉप्स के लिए आरती (सात गोल) और संतोष ने दोहरी हैट्रिक जमाई। मोना और तनु ने क्रमश: पांच और चार गोल किए। ममता ने दो जबकि मुस्कान और रजनी ने एक-एक गोल किया।

अय्यर, किशन के आगे दक्षिण अफ्रीका पस्त

रांची। भारत ने श्रेयस अय्यर (113 नाबाद) के शतक और ईशान किशन (93) के अर्द्धशतक की बदौलत दक्षिण अफ्रीका को दूसरे एकदिवसीय मैच में रविवार को सात विकेट से हराकर तीन मैचों की शृंखला 1-1 से बराबर की।

दक्षिण अफ्रीका ने भारत के सामने 279 रन का लक्ष्य रखा था, जिसे भारत ने 45.5 ओवर में हासिल कर लिया। भारत को इस लक्ष्य तक पहुंचाने के लिये अय्यर और किशन ने तीसरे विकेट के लिये 161 रन की मैच जिताऊ साझेदारी की। किशन ने इस साझेदारी में आक्रामक भूमिका निभाते हुए 84 गेंदों पर चार चौकों और सात छक्कों की बदौलत 93 रन बनाये। किशन एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने पहले शतक से चूक गये, लेकिन अय्यर ने इस प्रारूप में अपना दूसरा शतक जड़ते हुए 111 गेंदों पर 15 चौकों के साथ नाबाद 113 रन बनाये और चौका लगाकर भारत को जीत दिलाई।

दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए क्विंटन डी कॉक का विकेट जल्दी गंवा दिया, जिन्हें मोहम्मद सिराज ने पांच रन पर बोल्ड किया। यानेमन मलान (25) ने धीमी शुरुआत के बाद कुछ अच्छे शॉट खेले लेकिन एकदिवसीय क्रिकेट में पदार्पण कर रहे शाहबाज़ अहमद की गेंद पर पगबाधा होकर पवेलियन लौट गये।

प्रोटियाज के दो विकेट 40 रन पर गिरने के बाद रीज़ा हेंड्रिक्स और एडेन मार्करम ने तीसरे विकेट के लिये 129 रन की साझेदारी की। हेंड्रिक्स ने 76 गेंदों पर नौ चौके और एक छक्का लगाकर 74 रन बनाये जबकि मार्करम ने 89 गेंदों पर सात चौकों और एक छक्के के साथ 79 रन बनाये। दक्षिण

अफ्रीका 30 ओवर में 157 रन बनाकर बड़े स्कोर की तरफ अग्रसर थी, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने रनगति पर लगाम कसी। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका को 42वें से 47वें ओवर तक एक भी चौका नहीं मारने दिया। हेनरिक क्लासेन (30) और वेन पार्नेल (16) के आउट होने के बाद प्रोटियाज को अच्छे स्कोर तक पहुंचाने की जिम्मेदारी मिलर पर थी। मिलर ने शार्दुल ठाकुर के 49वें ओवर में दो चौके जड़े लेकिन सिराज ने 50वें ओवर में केशव महाराज को आउट करते हुए सिर्फ तीन रन दिये। दक्षिण अफ्रीका ने आखिरी आठ ओवरों में केवल 41 रन जोड़कर 50 ओवर में सात विकेट के नुकसान पर 278 रन बनाये। भारतीय गेंदबाजी की अगुवाई करते हुए सिराज ने 10 ओवर में सिर्फ 38 रन देकर तीन विकेट लिये। इसके अलावा शार्दुल, शाहबाज़, वाशिंगटन सुंदर और कुलदीप यादव को एक-एक विकेट हासिल हुआ। भारत के लिये लक्ष्य का पीछा करने उतरे सलामी बल्लेबाज शिखर धवन और शुभमन गिल अच्छी शुरुआत को बड़ी पारी में तब्दील नहीं कर सके। धवन ने पार्नेल की गेंद पर बोल्ड होने से पहले 13(20) रन बनाये, जबकि गिल ने 26 गेंदों पर पांच चौके लगाते हुए 28 रन की पारी खेली। भारत ने 48 रन पर पहले दो विकेट गंवा दिये, लेकिन अय्यर और किशन ने मैच को दक्षिण अफ्रीका से दूर ले जाते हुए तीसरे विकेट के लिये 161 रन की साझेदारी करके टीम को 209 रन के स्कोर तक पहुंचाया। किशन ने पारी की धीमी शुरुआत की लेकिन टीम का स्कोर 100 रन के पार पहुंचने के बाद उन्होंने रफ्तार बदली। झारखंड से आने वाले किशन ने अपने घरेलू मैदान पर खेलते हुए अपने एकदिवसीय करियर का तीसरा अर्द्धशतक जड़ा। अपने पहले अंतरराष्ट्रीय शतक से केवल सात रन की दूर किशन ने ब्योर्न फोर्टिन की गेंद पर बड़ा शॉट खेलने का प्रयास किया, लेकिन वह डीप मिड-विकेट पर खड़े हेंड्रिक्स को पार नहीं कर सके।

किशन के आउट होने के बाद अय्यर ने एकदिवसीय क्रिकेट में अपना दूसरा शतक पूरा किया। यह (113 नाबाद) खेल के इस प्रारूप में अय्यर का सर्वश्रेष्ठ स्कोर भी है। पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी करने आये संजू सैमसन ने 36 गेंदों पर एक चौके और एक छक्के के साथ नाबाद 30 रन बनाये और अय्यर के साथ 73 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी करके टीम को जीत तक पहुंचाया। भारत ने तीन मैचों की एकदिवसीय शृंखला में 1-1 से बराबरी कर ली है। सीरीज का आखिरी मैच मंगलवार को दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में खेला जायेगा।

ऑस्ट्रेलियाई परिस्थितियों के अनुकूल होने पर प्रयासरत सूर्यकुमार

पर्थ। भारत के विस्फोटक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने आईसीसी टी20 विश्व कप 2022 से पूर्व ऑस्ट्रेलिया में अपने पहले अभ्यास सत्र के बारे में कहा कि वह बेहद उत्साहित थे लेकिन उन्होंने वातावरण में ढलने का प्रयास किया।

सूर्यकुमार ने बीसीसीआई द्वारा रविवार को ट्वीट की गयी एक वीडियो में कहा, मैं वास्तव में यहां आने और पहले अभ्यास सत्र में भाग लेने, मैदान पर जाने, दौड़ने और यह देखने के लिए उत्सुक था कि यहां माहौल कैसा है। पहला नेट सत्र वास्तव में अद्भुत था। मैं सिर्फ यह देखना चाहता था कि विकेट की गति और उछाल कैसा है, इसलिए जाहिर तौर पर शुरुआत थोड़ी धीमी है। थोड़ा उत्साह था लेकिन साथ ही वातावरण के अनुकूल होना और अपनी प्रक्रिया का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है।

सूर्यकुमार ने ऑस्ट्रेलिया के बड़े मैदानों में रन बनाने के लिये रणनीतियों में बदलाव की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, अभ्यास के दौरान विकेट की उछाल, गति और मैदान के बड़े आयामों को ध्यान में रखते हुए रन बनाने के तरीके पर योजना तैयार करना महत्वपूर्ण है।

भारत को टी20 विश्व कप में अपना अभियान शुरू करने से पहले 17 अक्टूबर को ब्रिस्बेन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ और 19 अक्टूबर को उसी मैदान पर न्यूजीलैंड के खिलाफ अभ्यास मैच खेलने हैं। भारत 23 अक्टूबर को मेलबर्न में पाकिस्तान के खिलाफ अपने टी20 विश्व कप अभियान की शुरुआत करेगा।

करीबी मुकाबले में आठ रन से जीती इंग्लैंड

पर्थ। इंग्लैंड ने एलेक्स हेल्स (84) और जॉस बटलर (68) के विस्फोटक अर्द्धशतकों के बाद मार्क वुड (34/3) की घातक गेंदबाजी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया को पहले टी20 मैच में रविवार को आठ रन से मात दी। इंग्लैंड ने ऑस्ट्रेलिया के सामने 20 ओवर में 209 रन का लक्ष्य रखा, जिसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया 200 रन तक ही पहुंच सकी।

इंग्लैंड की जीत की नींव रखने के लिये हेल्स और बटलर ने पहले विकेट के लिये 68 गेंदों पर 132 रन की साझेदारी की।

हेल्स ने 51 गेंदों पर 12 चौकों और तीन छक्कों की बदौलत 84 रन बनाये, जबकि चोट से वापसी करते हुए बटलर ने 32 गेंदों पर आठ चौकों और चार छक्कों के साथ 68 रन की पारी खेली। इंग्लैंड ने मध्यक्रम की

असफलता के बावजूद 20 ओवर में छह विकेट के नुकसान पर 208 रन बनाये और यह स्कोर ऑस्ट्रेलिया के लिये अप्राप्य साबित हुआ।

ऑस्ट्रेलिया ने 209 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए कैमरन ग्रीन (01) के आउट होने के बावजूद पावरप्ले में 62 रन जोड़े। डेविड वॉर्नर और मिशेल मार्श ने दूसरे विकेट के लिये 71 रन की साझेदारी की, हालांकि मार्श (36) का विकेट गिरने के बाद ऐरन फिंच (12) भी जल्दी पवेलियन लौट गये।

इसके बाद मार्कस स्टॉयनिस ने 15 गेंदों पर दो चौकों और तीन छक्कों के साथ 35 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया की स्थिति मज़बूत की लेकिन वुड ने 15वें ओवर में स्टॉयनिस और टिम डेविड (शून्य) का विकेट निकालकर मैच को रोमांचक बना दिया।

ऑस्ट्रेलिया को चार ओवर में 40 रन की आवश्यकता थी और वॉर्नर कंगारुओं को विजय की ओर लेकर जा रहे थे। वुड एक बार फिर इंग्लैंड के लिये कारगर साबित हुए और उन्होंने वॉर्नर को हेल्स के हाथों कैच आउट करवाया। वॉर्नर ने आउट होने से पहले 44 गेंदों पर आठ चौकों और दो छक्कों की बदौलत 73 रन बनाये।

कंगारुओं को आखिरी ओवर में 16 रन की दरकार थी। मैथ्यू वेड (21) ने पहली गेंद पर चौका जड़ा लेकिन तीसरी गेंद पर उनका विकेट गिरने के साथ ही ऑस्ट्रेलिया की जीत की उम्मीदें समाप्त हो गयीं और टीम 20 ओवर में 200/9 के स्कोर तक पहुंच सकी।

इंग्लैंड के लिये वुड के अलावा रीस टोपली और सैम करन ने दो-दो विकेट लिये जबकि आदिल रशीद को एक विकेट हासिल हुआ।

'खामेनी के पंजों से टपक रहा युवाओं का खून'

ईरान में हिजाब विरोधी प्रदर्शनकारियों ने सरकारी टीवी की हैक

तेहरान। ईरान के सरकारी टीवी को शनिवार शाम के समाचार प्रसारण के दौरान 15 सेकंड तक हैक कर लिया गया। इस दौरान देश के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनी की फुटेज प्रसारित की गई। हैकरों ने आग की लपटों से घिरी खामेनी की तस्वीर दिखाई। इसके कैप्शन में लिखा था, आपके पंजों से हमारे युवाओं का खून टपक रहा है। देश में कई स्थानों पर शनिवार को सरकार विरोधी प्रदर्शन हुए, जिनमें 2 लोगों की मौत हो गई। शनिवार को प्रदर्शन का चौथा सप्ताह शुरू हुआ। मालूम हो कि पुलिस हिरासत में 22 वर्षीय महसा अमीनी की मौत के बाद ईरान में हिजाब विरोधी प्रदर्शन हो रहे हैं। पुलिस ने अमीनी को कथित रूप से देश के कड़े इस्लामी ड्रेस कोड के उल्लंघन के आरोप में हिरासत में लिया था। प्रदर्शनकारी महिलाओं ने सरकार विरोधी नारे लगाए और अनिवार्य धार्मिक ड्रेस कोड का विरोध करते हुए अपने हिजाब

उतारकर फेंक दिए। कुछ इलाकों में हड़ताल के कारण और नुकसान से बचने के लिए व्यापारियों ने दुकानें बंद रखीं।

दर्जनों प्रदर्शनकारी मारे गए, सैकड़ों की गिरफ्तारी का अनुमान

अमीनी की मौत के बाद से ही देशभर में प्रदर्शन हो रहे हैं। प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई है, जिसमें दर्जनों लोगों के मारे जाने और सैकड़ों लोगों के गिरफ्तार होने का अनुमान है। मानवाधिकार निगरानी संगठनों ने बताया कि कुर्द बहुल उत्तरी क्षेत्र के सनांदज शहर में कार सवार व्यक्ति को शनिवार को एक प्रमुख मार्ग पर गोली मार दी गई। फ्रांस स्थित कुर्दिस्तान ह्यूमैन राइट्स नेटवर्क एंड द हेंगाव ऑर्गेनाइजेशन फॉर ह्यूमैन राइट्स ने बताया कि इस व्यक्ति को तब गोली मारी गई, जब उसने सड़क पर तैनात सुरक्षाबलों के सामने हॉर्न बजाया। मालूम हो कि हॉर्न बजाना सविनय अवज्ञा का एक तरीका बन गया है। अर्ध-सरकारी फार्स समाचार एजेंसी ने बताया कि कुर्दिस्तान के पुलिस प्रमुख ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाने की खबरों का खंडन किया है।

भीड़ को तितर-बितर करने के लिए चलाई गईं गोलियां

मानवाधिकार निगरानी संगठनों ने बताया कि सुरक्षाबलों ने शहर में भीड़ को तितर-बितर करने के लिए गोलियां चलाईं, जिसमें एक अन्य प्रदर्शनकारी की मौत हो गई और 10 प्रदर्शनकारी घायल हो गए।

राजधानी तेहरान में भी शनिवार को प्रदर्शन हुए। ईरान के प्रमुख शिक्षा केंद्र शरीफ यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के समीप भी प्रदर्शन हुए, जिसके बाद प्राधिकारियों ने अगले आदेश तक परिसर को बंद कर दिया है। सोशल मीडिया पर प्रसारित तस्वीरों के अनुसार, उत्तर-पूर्वी शहर मशाद में भी प्रदर्शन हुए। राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी ने तेहरान में अल-जहरा विश्वविद्यालय की छात्राओं से मुलाकात में एक बार फिर आरोप लगाया कि प्रदर्शनों को भड़काने में विदेशी शत्रुओं का हाथ है।

इमरान खान के हेलीकॉप्टर की आपातकालीन लैंडिंग

रावलपिंडी। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री एवं पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान के हेलीकॉप्टर को शनिवार को तकनीकी खराबी के कारण आपातकालीन परिस्थितियों में उतारा गया। खान खैबर पख्तूनख्वा के डेरा इस्माइल खान में एक जनसभा को संबोधित करने के बाद राजधानी लौट रहे थे। इस दौरान उनके हेलीकॉप्टर में तकनीकी खराबी आ गई। उसे रावलपिंडी शहर से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर अदियाला गांव के पास उतारा गया। श्री खान को कार से बानीगाला स्थित उनके आवास ले जाया गया। खान जिस कार में सवार थे वह पंजाब के कानून मंत्री बशारत राजा के आवास से लाया गया था। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री के हेलीकॉप्टर की आपातकालीन लैंडिंग के कारणों में विरोधाभास नजर आ रहा है।

गृहमंत्री के खिलाफ वारंट, पीएम कोर्ट में पेश; आखिर पाकिस्तान में चल क्या रहा है

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की एक अदालत ने भ्रष्टाचार के एक मामले में बार-बार तलब किए जाने के बाद भी पेश नहीं होने पर गृहमंत्री राणा सनाउल्लाह के खिलाफ शनिवार को गैर जमानती वारंट जारी किया। कोर्ट की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि सनाउल्लाह प्राथमिकी में नामजद किए गए हैं और इस मामले में उनकी गिरफ्तारी जरूरी है, इसलिए आरोपी के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया जाए। दूसरी ओर से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ भी कोर्ट में पेश हुए हैं। रावलपिंडी में वरिष्ठ दीवानी न्यायाधीश गुलाम अकबर की अदालत ने यह आदेश जारी किया, क्योंकि अदालत ने एहसास हुआ है कि मामले की जांच के लिए उनकी गिरफ्तारी जरूरी है। इस मामले का संबंध पंजाब के चकवाल जिले के कल्लर कहार इलाके में उन्हें दो संपत्तियां रिश्वत के रूप में दिए जाने से है। कोर्ट ने आदेश में है, रिकार्ड से पता चलता है कि जांच अधिकारी की दलीलें वास्तविक हैं, इसलिए न्याय के हित में उसे स्वीकार किया जाता है और आरोपी राणा सनाउल्लाह के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया जाता है। डॉन अखबार के अनुसार पंजाब के भ्रष्टाचार निरोधक प्रतिष्ठान ने इस घटनाक्रम की पुष्टि की है। विभाग के प्रवक्ता ने कहा, वारंट इसलिए जारी किए गए हैं, क्योंकि सनाउल्लाह बार-बार समन जारी किए जाने के बावजूद भ्रष्टाचार निरोधी जांच में शामिल होने में विफल रहे हैं।% उन्होंने कहा कि मंत्री को गिरफ्तार करने और जांच के लिए पेश करने के वास्ते आदेश जारी किए गए हैं। विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि मंत्री पर कल्लर कहार में बिस्मिल्लाह हाउसिंग स्कीम में अधिसूचित दर से कम दाम पर दो फार्महाउस खरीदने का आरोप है। ये भूखंड उनकी पत्नी को बतौर रिश्वत दिए गए। कोर्ट की ओर से गैर जमानती वारंट जारी होने के बाद सनाउल्लाह पर गिरफ्तारी की भी तलवार लटकने लगी है।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में शहबाज शरीफ की पेशी

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ अरबों रुपए के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में शनिवार को विशेष अदालत के समक्ष पेश हुए। संघीय जांच एजेंसी ने नवंबर, 2020 में शहबाज (70), उनके बेटों हम्जा (47) और सुलेमान (40) के खिलाफ 16 अरब रुपए के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में भ्रष्टाचार निरोधी कानून और धन शोधन निषेध कानून के तहत केस दर्ज किया था।

श्रीलंका में नया भ्रष्टाचार विरोधी कानून

कोलंबो। श्रीलंका सरकार भ्रष्टाचार विरोधी नया कानून पारित करने की योजना बना रही है। स्थानीय मीडिया ने अटॉर्नी जनरल के विभाग के हवाले से अपनी रिपोर्ट में बताया कि इन कानूनों के तहत एक स्वतंत्र आयोग की स्थापना की जाएगी और उसके अधिकारी मजिस्ट्रेट के आदेश या वारंट के बिना संदिग्धों को गिरफ्तार करने में सक्षम होंगे। रिपोर्ट के मुताबिक नए कानून स्वतंत्र आयोग के महानिदेशक को भी अधिकृत करेंगे कि वे भ्रष्ट गतिविधियों में इस्तेमाल होने वाले संदिग्ध उपकरणों को अनलॉक या अनएन्क्रिप्ट करने के लिए मजिस्ट्रेट की अनुमति लें और उसमें निहित जानकारी प्रदान करें। यह विधेयक सार्वजनिक अधिकारियों को श्रीलंका के भीतर और बाहर अपनी संपत्ति और देनदारियों की समय-समय पर घोषणा करने के लिए मजबूर करने का भी प्रयास करेगा।

चीन ने सूर्य के रहस्यों को जानने के लिए पहली सौर वेधशाला किया प्रक्षेपित

बीजिंग। चीन ने सूर्य के रहस्यों को जानने के लिए रविवार को अपनी पहली सौर वेधशाला कुआफू -1 को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष की कक्षा में प्रक्षेपित किया है। चाइना एयरोस्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी कॉरपोरेशन (सीएएससी) द्वारा रविवार को यहां दी गई जानकारी के अनुसार अंतरिक्ष-आधारित उन्नत सौर वेधशाला (एएसओ-एस) को लॉन्ग मार्च-2डी रॉकेट से स्थानीय समयानुसार रविवार सुबह सात बजकर 43 मिनट पर प्रक्षेपित किया गया। सीएएससी के अनुसार प्रक्षेपण के बाद एएसओ-एस ने सफलतापूर्वक अपनी निर्धारित कक्षा में प्रवेश किया। चीन की यह वेधशाला (कुआफू -1) पृथ्वी की सतह से 720 किलोमीटर ऊपर की कक्षा से सूर्य का निरीक्षण और यह अध्ययन करने में मदद करेगा। इसके जरिए यह जानने का प्रयास होगा कि सूर्य का चुंबकीय क्षेत्र अपने ऊर्जा उत्सर्जन को कैसे बनाता है। इस मिशन के चार वर्ष तक चलने की आसार है।

ट्रंप ने कहा तीसरे विश्व युद्ध को रोकने के लिए रूस-यूक्रेन शांति वार्ता जरूरी

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि रूस और यूक्रेन के बीच बातचीत तुरंत शुरू होनी चाहिए नहीं तो यह संकट तीसरे विश्व युद्ध का रूप धारण कर सकता सकता है और वैश्विक तबाही मचा सकता है। ट्रंप ने यह बात शनिवार को नेवादा में एक रैली को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा, रूस और यूक्रेन के बीच जो युद्ध चल रहा है उसमें लाखों लोग मारे जा रहे हैं। हमें रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध की समाप्ति के लिए तत्काल बातचीत शुरू करनी चाहिए नहीं तो तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो जाएगा और सब लोग समाप्त हो जाएंगे और हमारी धरती पर कुछ भी नहीं बचेगा। मंगलवार को, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बाचतीत की असंभावना पर यूक्रेन की राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा परिषद के निर्णय को लागू करने के लिए एक डिक्री पर हस्ताक्षर किया।

पाकिस्तान की मदद करना दुनिया की नैतिक जिम्मेदारी : एंटोनियो गुटेरेस

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र के संयुक्त सचिव एंटोनियो गुटेरेस ने पर्यावरण को 80 प्रतिशत तक बरबाद करने का ठीकरा दुनिया के औद्योगिक देशों पर फोड़ते हुए कहा है कि पाकिस्तान पर्यावरणीय अन्याय के दुखद प्रभावों को झेल रहा है और ऐसे में औद्योगिक देशों की जिम्मेदारी है कि वह पाकिस्तान की मदद करें। समाचार पत्र 'डान' ने रविवार को प्रकाशित रिपोर्ट में बताया कि संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने भीषण प्राकृतिक आपदा झेल रहे पाकिस्तान की मदद करना औद्योगिक देशों की नैतिक जिम्मेदारी बताया है। उन्होंने कहा आज पाकिस्तान ऐसे हालातों से गुजर रहा है कल कोई अन्य देश भी ऐसी ही मुसीबत में फंस सकता है। हाल की में पाकिस्तान की यात्रा करने वाले श्री गुटेरेस ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को बताया कि पाकिस्तान का उतना जमीनी क्षेत्र पानी में पूरी तरह से डूब गया है जितना उनके देश पुर्तगाल का क्षेत्रफल है। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि पाकिस्तान जन स्वास्थ्य आपदा के मुहाने पर खड़ा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

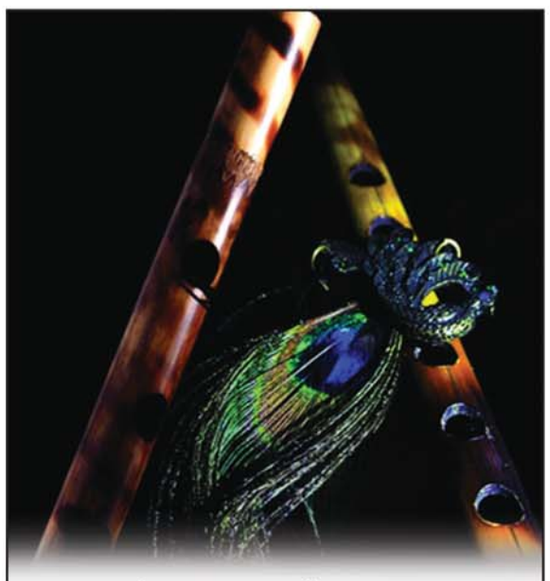

...तो घर में जरूर रखें बांसुरी

भगवान श्रीकृष्ण को बांसुरी बहुत प्रिय है। बांसुरी कृष्णजी को प्रिय होने के कारण उसको प्रकृति का अनुपम वरदान है। ज्योतिष के अनुसार बांसुरी का इस्तेमाल अगर सोच समझकर किया जाए तो यह हमें कई प्रकार के दोषों से बचाती है। वास्तु और फेंगशुई के अनुसार, बांसुरी को अगर घर, दुकान में रखा जाए है तो इसके कई लाभ मिलते हैं। बांसुरी से होने वाले लाभ कौन-कौन से है, आइए जानते है।

- फेंगशुई विद्या के अनुसार, बांसुरी घर में रखना बहुत शुभ माना गया है। यह उन्नति और प्रगति दोनों देने में बहुत सहायक है। इस प्रकार बांसुरी प्रकृति का एक अनुपम वरदान है।
- बांसुरी बांस से बनी होती है तथा इसके पौधे को दिव्य माना जाता है। अतः घर में बांसुरी का प्रयोग करके कई तरह से लाभ उठाया जा सकता है।
- बांसुरी के संबंध में एक धार्मिक मान्यता है कि जब बांसुरी को हाथ में लेकर हिलाया जाता है तो बुरी आत्माएं दूर हो जाती हैं।
- जब बांसुरी को बजाया जाता है तो ऐसी मान्यता है कि घरों में शुभ चुम्बकीय प्रवाह का प्रवेश होता है।
- यदि सोच-समझकर इसका उपयोग किया जाए तो दोषों का बिना किसी तोड़-फोड़ के निवारण कर अशुभ फलों से बचा जा सकता है।
- ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति अपनी नौकरी से परेशान रहता हैं, बांसुरी उसकी सारी मुश्किलें आसान कर सकता है।
- जो व्यक्ति काफी मेहनत के बाद भी अपने बिजनेस में सफलता हासिल नहीं कर पाते उनके लिए बांस से बनी यह बांसुरी उन्नति और समृद्धि दोनों देने में सक्षम है। अतः उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का पूजन करते हुए अपने दुकान की छत पर दो बांसुरी चिपकानी चाहिए या टांग देनी चाहिए। यह बहुत ही सरल उपाय है जो आपको अपने बिजनेस में उन्नति के शिखर पर ले जाएगा।

सूर्यास्त के बाद झाड़ू-पौंछा न करें

धार्मिक गंथों में ऐसी कई सार्वभौमिक सत्य बातें बताई गई हैं, जिनका अनुसरण कर हम अपना सौभाग्य लिख सकते हैं या प्रतिकूल ग्रहों को अनुकूल बना सकते हैं। आइए जानें ऐसी पांच चीजों के बारे में जो हमारे अच्छे व सुखद भविष्य की भी नींव रखती हैं।

थाली में न छोडें झूठा अन्न

शास्त्रानुसार कभी भी खाने की प्लेट में जूठा नहीं छोडना चाहिए और न ही कभी जूठे बर्तनों को यूं ही पढ़े रहने देना चाहिए। रात को सोने से पहले सभी जूठे बर्तन धो लेने चाहिए अन्यथा इससे घर में अशांति का वातावरण बनना शुरु हो जाएगा जो अंततः घर के दुर्भाग्य में बदल जाएगा।

बैड को रखें नीट एंड क्लीन

शास्त्रों के अनुसार बेडरूम सुव्यवस्थित तथा साफ-सुथरा होना चाहिए। खास तौर पर बिस्तर पर बिछी हुई चादर बिल्कुल साफ होनी चाहिए साथ ही कमरे में कचरा नहीं फैला होना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर उस बिस्तर पर सोने वाले का सौभाग्य भी दुर्भाग्य में बदल जाता है।

जगह-जगह थूकना लाता है दुर्भाग्य

कहीं भी थूक देना (विशेष तौर पर घर में, देव मंदिरों में, सार्वजनिक स्थानों पर) शास्त्रों में पूरी तरह गलत बताया गया है। इससे घर की लक्ष्मी रूठ कर चली जाती है। हमें यथासंभव अपने आसपास साफ-सफाई रखनी चाहिए। माना जाता है कि ऐसा करने से घर की सुख-शांति खत्म हो जाती है और कंगाली घर में प्रवेश कर जाती है।

बाथरूम को रखें साफ-सुथरा

बाथरुम को चन्द्रमा का स्थान माना गया है। जिन घरों में बाथरूम गंदा रहता है या अस्त-व्यस्त पड़ा रहता है, उन घरों के स्वामी की कुंडली में चन्द्रमा पर ग्रहण लग जाता है जिससे उस घर में रहने वालों की मानसिक शांति समाप्त हो जाती है तथा वहां धन की कमी होने लगती है।

पूजा में भगवान श्रीगणेश जी का है सर्वश्रेष्ठ स्थान

हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार, किसी भी शुभ काम के करने से पहले गणेश पूजन आवश्यक हैं। इससे प्रसन्न होकर गणेश जी सारे काम निर्विघ्न कर देते हैं। हिन्दू संस्कृति और पूजा में भगवान श्रीगणेश जी को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। प्रत्येक शुभ कार्य में सबसे पहले भगवान गणेश की ही पूजा की जाती अनिवार्य बताई गयी है। देवता भी अपने कार्यों की बिना किसी विघ्न से पूरा करने के लिए गणेश जी की अर्चना सबसे पहले करते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि गणेश जी की पूजा में दूर्वा का सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानी जाती है और साथ ही यह मान्यता है कि गणपति को दूर्वा चढ़ाने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। ऐसे में दूर्वा को पूजन परंपरा से जोडकर उन्होंने दुर्लभ वनस्पतियों को बचाने का संदेश दिया है क्योंकि इससे हम धरती की रक्षा कर अपने लिए एक स्वच्छ वातावरण का निर्माण कर सकेंगे।

ऐसे में कहा जाता है गणपति की साधना-अराधना के लिए बताए गए 108 नाम के बारे में जिनके जप करने से भीतरी आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है। यह भी माना जाता है कि श्री गणेश जी के 21 नाम वालें मंत्रों और 21 पेड़ों के पत्तों को अर्पित करने पर उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है।

मान्यता है कि पूजन की इस परंपरा के पीछे जीवनदायक प्राण वायु प्रदान करने वाले वृक्षों को न काटने का गूढ़ रहस्य छिपाया गया है। वहीं इस बात को कहने का तात्पर्य गणपति की साधना-अराधना से जुड़े इन वृक्षों संरक्षण किया जाना चाहिए। श्री गणेश नाम वृक्षों के नाम आइए जानते हैं।

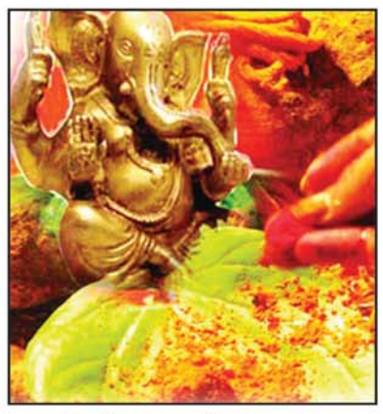

इन मंत्रों का करें जाप

ओम सुमुखाय नमः शमी पत्र।
ओम गणाधीशाय नमः भृंगराज पत्र।
ओम उमापुत्राय नमः बेल पत्र।
ओम गजामुखाय नमः दूर्वापत्र।
ओम लम्बोदराय नमः बेर का पत्र।
ओम हर पुत्राय नमः धतूरे का पत्र।
ओम शूर्पकर्णाय नमः तुलसी के पत्र।
ओम वक्रतुण्डाय नमः सेम का पत्र।
ओम गुहाग्रजाय नमः अपामार्ग पत्र।
ओम एकदंताय नमः भटकटैया पत्र।
ओम हेरम्बाय नमः सिंदूर पत्र।
ओम चतुर्होत्रे नमः तेज पत्र।
ओम सर्वेश्वराय नमः अगस्त पत्र।
ओम विकटाय नमः कनेर पत्र।
ओम हेमतुण्डाय नमः केला पत्र।
ओम विनायकायनमः आक पत्र।
ओम कपिलाय नमः अर्जन पत्र।
ओम वटवे नमः देवरारू पत्र।
ओम भालचंद्रय नमः महुए के पत्र।
ओम सुराग्रजाय नमः गांधारी पत्र।
ओम सिद्धि विनायक नमः केतकी पत्र।

परिवार और व्यक्ति के दुख दूर करते हैं यह सरल उपाय

बुधवार के दिन घर में सफेद रंग के गणपति की स्थापना करने से समस्त प्रकार की तंत्र शक्ति का नाश होता है।

धन प्राप्ति के लिए बुधवार के दिन गणेश को घी और गुड़ का भोग लगाएं। थोड़ी देर बाद घी व गुड़ गाय को खिला दें। ये उपाय करने से धन संबंधी समस्या का निदान हो जाता है।

परिवार में कलह कलेश हो तो बुधवार के दिन दूर्वा के गणेश जी की प्रतिकात्मक मूर्ति बनवाएं। इसे अपने घर के देवालय में स्थापित करें और प्रतिदिन इसकी विधि-विधान से पूजा करें। घर के मुख्य दरवाजे पर गणेशजी की प्रतिमा लगाने से घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है। कोई भी नकारात्मक शक्ति घर में प्रवेश नहीं कर पाती है।

तुलसी के पौधे को कभी भी दक्षिण में न लगाएं

हर व्यक्ति के जीवन में शांति और सम्पन्नता का होना जरूरी है और सम्पन्नता के लिए लक्ष्मी का प्रसन्न होना बेहद आवश्यतक है। वास्तु शास्त्र के अनुसार कुछ खास बातें नहीं की जाएं तो लक्ष्मी की कृपा और आशीर्वाद हमेशा बना रहता है।

- वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के दरवाजों को कभी भी ना खटखटाएं। घर के गेट पर बैल लगाएं या आवाज देकर मालिक को बुलाएं। गेटों को खटखटाने और बजाने से वास्तु दोष बढता है। ऐसे में लक्ष्मी वहां ज्यादा दिनों तक टिकती नहीं है।
- वास्तु के अनुसार सर्वप्रिय देव श्रीगणेश की मालिक द्वारा आराधना जरूरी होती है। यदि घर का मालिक सुबह उठकर श्रीगणेशजी का ध्यान कर पूजा-अर्चना करता है तो घर के वास्तु दोष तुरंत दूर होते हैं।
- वास्तु के अनुसार तुलसी के पौधे को कभी भी दक्षिण में न लगाएं, इससे जीवन में अशुभता आने लगती है। तुलसी जी के पौधे को पूर्व या उत्तर में लगाना उचित रहता है।
- गंदे कपडे पहनने से भी वास्तु दोषों में बढोतरी होती है। कोशिश करें कि दो दिन के अलावा तीसरे दिन भी पुराने कपडे नहीं पहनें।
- घर की सफाई रात को करना भी वास्तु के अनुसार ठीक नहीं है। कहते हैं कि शाम को जो धूल एकत्रित होती है, वही लक्ष्मी जी की कृपा होती है।

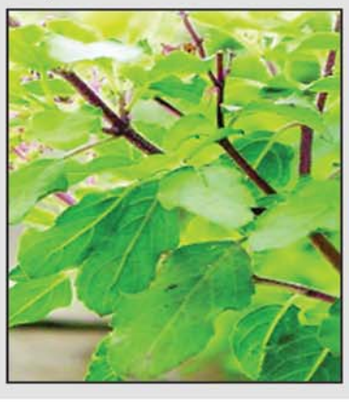

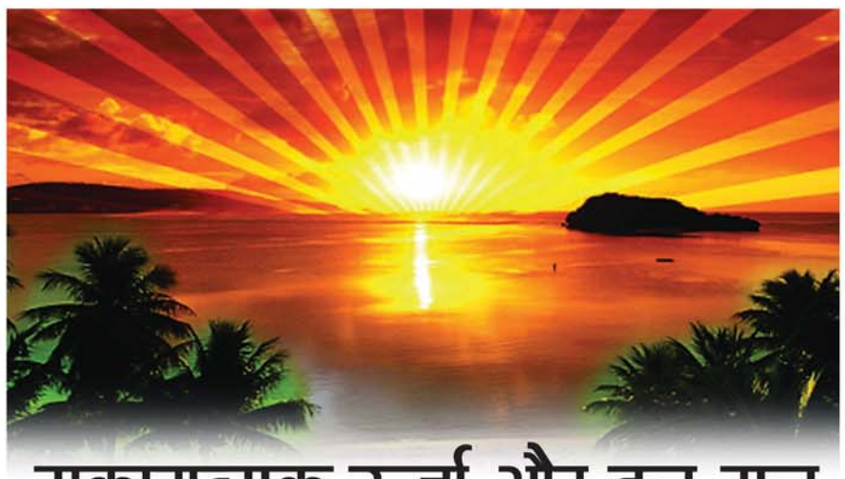

सकारात्मक ऊर्जा और तन-मन की शांति के लिए..

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार अच्छी सेहत और प्रसन्न तन-मन के लिए कुछ उपयोगी टिप्स दैनिक व्यवहार में लाकर आप एक सुंदर एवं स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

- सूर्योदय से पूर्व उठने की आदत डालें, इससे सकारात्मक ऊर्जा की प्राप्ति होती है जो तन, मन और मस्तिष्क को शांत करती है।
- प्रातः काल आसपास के खुले स्थान, पार्क या भवन की छत पर जाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके थोड़ा व्यायाम करें और लंबी सांस लें। इससे प्रकृति में सुबह के समय व्याप्त सकारात्मक ऊर्जा यानी आक्सीजन का भरपूर उपयोग करके आप शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं।
- अच्छे स्वास्थ्य के लिए भोजन करते समय आपका मुख सदा पूर्व या उत्तर में रहे। कभी भी पलंग पर बैठकर, खड़े होकर या आड़े-तिरछे बैठकर भोजन न करें।
- भोजन या तो भूमि पर आसन बिछाकर करें या फिर डायनिंग टेबल का प्रयोग करें। विधिवत भोजन करने से शरीर चुस्त दुरूस्त रहता है।
- खाना खाते वक्त टेलीविजन नहीं देखें, इससे उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव से सभी ज्ञानेंद्रियों पर विपरीत असर पड़ता है। इससे पेट की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। अतः भोजन करते समय टेलीविजन देखने की बजाए पारिवारिक दिनचर्या पर गपशप करें।
- दवाइयों को डायनिंग टेबल पर नहीं रखें, ये नकारात्मक ऊर्जा की प्रतीक होती है। ऐसा करके हम दवाइयों को भोजन का हिस्सा बनाने का निमंत्रण देते हैं, ऐसा नहीं करें।
- यदि घर में बच्चों या वृद्धों के लिए कुछ टॉनिक आदि का प्रयोग कर रहे हों, तो ऐसे टॉनिक की शीशियां व डिब्बे घर की पूर्व दिशा में बनी आलमारियों में रखें और किसी बीमारी से संबंधित दवाइयों को दक्षिण या पश्चिम में रखें।
- भोजन पूर्व की तरफ मुंह करके ही बनाएं। यह सेहत के लिए उत्तम और सुखदायी होता है। रसोईघर आग्नेय कोण में ही बनाएं। रसोईघर की व्यवस्था उत्तर-पूर्व में न करें। यह धन और स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है। ज्वलनशील पदार्थों को भी दक्षिण-पूर्व में रखें।
- रसोईघर की दीवारों का रंग हल्का पीला, नारंगी या हल्का लाल रखें। जिससे भोजन सुप्पाच्य होकर भूख बढ़ाने में सहायक साबित होगा। जब एक साथ मिलकर सभी खाना खा रहे हों, तो घर के मुखिया का मुंह पूर्व में तथा अन्य सदस्यों का मुंह उत्तर या पश्चिम में होना चाहिए। दक्षिणामुख कभी नहीं बैठें। इससे पाचन क्रिया ठीक रहती है। हाथ आदि साफ कर प्रसन्नतापूर्वक खाने से आरोग्यता बढ़ती है।

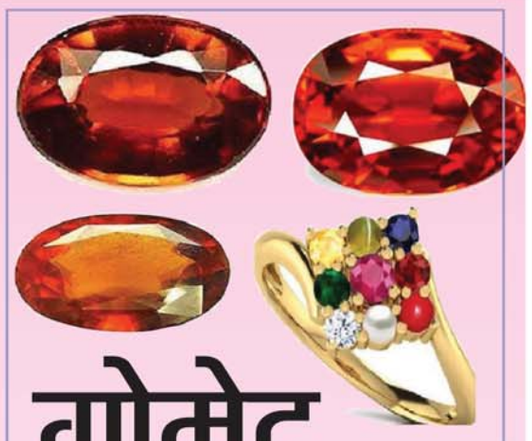

गोमेद
एक खूबसूरत रत्न
जीवन को भी बना देता है सुंदर

ज्योतिष विज्ञान में गोमेद को एक खूबसूरत रत्न माना गया है, जो जीवन को सुंदर बना देता है। गोमेद सबसे लाभदायक रत्नों में से एक माना गया है। गोमेद राहु ग्रह से संबंधित रत्न माना गया है। ज्योतिष शास्त्र में राहु को पाप ग्रह माना जाता है अत- ज्योतिषाचार्यों द्वारा राहु के दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए गोमेद रत्न धारण करने की सलाह दी जाती है। ध्यान रखने योग्य यह है कि गोमेद के साथ माणिक्य, मूंगा और पुखराज नहीं पहनना चाहिए।

यह रत्न जहां रुके कार्यों पूर्ण करने का कार्य करता है, वहीं जीवन के हर क्षेत्र में सफलता देता है। ज्योतिषियों की मानें तो जन्म कुंडली की दशाओं को जानकर ही इस रत्न को धारण करना उचित रहता है। इतना ही नहीं गोमेद ब्लड कैंसर, कम सुनाई देना, आंखों तथा जोड़ों के दर्द जैसी बीमारियों से भी निजात दिलाता है। गोमेद एक चमकदार और अपारदर्शी रत्न है। यह गहरे भूरे अथवा लाल रंग की तरह होता है। इसे गारनेट समूह का रत्न माना जाता है। यह दुनिया में कई स्थानों पर पाया जाता है। गोमेद मुख्य रूप से यह भारत, श्रीलंका और ब्राजील में आसानी से मिल जाता है तथा साउथ अफ्रीका, थाईलैंड और ऑस्ट्रेलिया में भी यह रत्न पाया जाता है। राहु ग्रह से संबंधित इस रत्न को हिन्दी में गोमेद और अंग्रेजी में हैसोनाइट स्टोन कहते हैं। गोमेद रत्न 6 रत्ती से कम का धारण नहीं करना चाहिए। यह रत्न शनि की होरा में शुक्ल पक्ष के किसी भी शनिवार को पहनना अतिशुभ माना गया है। यदि शनिवार के दिन शतभिषा, स्वाती या आर्द्रा नक्षत्र में इसे धारण किया जाए तो गोमेद की शुभता अधिक बढ़ जाती है।

रत्न धारण करने की विधि

गोमेद रत्न की अंगूठी को सबसे पहले गंगा जल, दूध, शहद और मिश्री के घोल में डालकर एक रात उसमें ही रहने दें। तत्पश्चात ऊँ रां राहवे नमः मंत्र का 108 बार जाप करके कनिष्का में धारण करना चाहिए।

किस अंगुली में धारण करें

इसे चांदी या अष्टधातु की अंगूठी में जड़वा कर पहनना उचित रहता है। राहु का रत्न गोमेद को कनिष्का ऊंगली में पहनना चाहिए, क्योंकि मिथुन राशि में उच्च का होने से बुध की अंगुली कनिष्का में पहनना शुभ फलदायी रहता है। यह राहु के अशुभ प्रभाव को दूर करता है। गोमेद धारण करने से राहु की दशा-महादशा को दुष्प्रभावों से निजात मिलती है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय दिलाने वाला भी माना जाता है, इतना ही नहीं इसे धारण करने से सकारात्मक विचार, एकाग्रता और आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

कौन धारण करें

इसे राजनीतिज्ञ, जासूसी, जुआ, सट्टा खेलने वाले तथा तंत्र या मंत्र विद्या से जुड़े व्यक्ति पहनते हैं।

कौन ना पहने ये रत्न-जिस व्यक्ति की कुंडली में राहु 5वें, 8वें 9वें 11वें या 12वें स्थान पर हो उन्हें गोमेद धारण नहीं करना चाहिए। इससे नुकसान होने की संभावना बढ़ जाती है तथा जिनका व्यापार-व्यवसाय राहु ग्रह से संबंधित हो उन्हें भी यह रत्न नहीं पहनना चाहिए।

पीतल का शेर देगा आपको आत्मविश्वास...

घर का सामान आपके जीवन, धन-संपत्ति और खुशहाली के साथ-साथ आपके व्यक्तित्व पर भी गहरा प्रभाव डालता है। वास्तुशास्त्र के कुछ मौलिक सिद्धांत तो लगभग सभी लोगों को मालूम होते भी हैं, मसलन दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार नहीं बनाना चाहिए, उत्तर दिशा में तिजोरी रखना और घर में गंदगी इकट्ठी ना होने देना...वगैरह-वगैरह।

लेकिन कुछ वास्तु टिप्स ऐसे होते हैं, जो आपके व्यक्तित्व पर भी बहुत गहर असर छोड़ते हैं। अगर आप उदास रहते हैं या फिर आपको लगता है कि आत्मविश्वास की कमी के कारण आप अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं या आपको अन्य लोगों के समक्ष अपनी बात रखने में हिचक होती है तो हम आपको एक ऐसा वास्तु उपाय बताने जा रहे हैं जो आपके लिए बेहद कारगर सिद्ध हो सकता है। पीतल धातु से बना शेर, ना सिर्फ आपके घर की शोभा को बढ़ाता है बल्कि आपके भीतर छिपी हीन भावना या आत्मविश्वास की कमी को भी समाप्त करता है।

वास्तुशास्त्र के विशेषज्ञों के अनुसार अगर पीतल धातु से बने शेर को घर की पूर्वी दिशा में स्थापित करते हैं तो यह आपके सेल्फ कॉफिडेंस में गजब का उछाल लाता है। बस एक बात का ध्यान रखें कि जब आप शेर को अपने घर में स्थापित करें तो उसका मुख घर के केन्द्र में होना चाहिए।